प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 6 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

॥ श्री कुंथुनाथसागराय नमः ॥

Amit Jain
9829874881
9414160881

KUNTHU MACHINERY MART

Popular Brand's With Us

SAMSUNG Panasonic TRANE MITSUBISHI ELECTRIC AIR CONDITIONING SYSTEMS Godrej
htc KENT Health Care PRODUCTS HOUSE of PURITY iPhone NATARAJ PHILIPS VU
NOKIA Connecting People Microsoft Feltech Whirlpool
VESTAR INTELLIGENT COOLING ALMONARD lenovo TOSHIBA SONY OPPO BOSCH gorenje IFB

Payment - Debit Card, Credit Card, KMM Easy Pay

Finance Available with BAJAJ FINSERV with 0% Interest

5-B, Nakoda Complex, Kunthu Tower, Hiran Magri,
Sector-4, Main Road, Udaipur 313001 (Raj)

Phone : 0294-2467881 Email : jain.amit929@gmail.com

अगस्त
2018
वर्ष 16, अंक 6

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

6 सौगात

एमएसपी उर्वर करेगी भाजपा की सियासी जमीन

8 जन्माष्टमी

मन का मंथन यानी श्रीकृष्ण

12 अलग-थलग

भाजपा को 'घनश्याम' का राम-राम

30 सावन विशेष

शिवमय हो जाता है वैद्यनाथ धाम

32 कैंसर से जंग

अपनों के सहारे लड़ूंगी यह लड़ाई

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत, ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

With Best Copmpliments

SML ISUZU

Comfort + Economy + Safety = Reliability

SML School Bus

S7 School Bus

Loading Ka Baadshah...

OM MOTORS

Authorised Dealer :

SML ISUZU SALES, SERVICE & SPARES

N.H. 8, Pratap Nagar, Near Apni Dhani, Udaipur-313003 (Raj.)

Mob. : +91 8741970005, 8741970006, email : ommotorsudr@gmail.com

Location : Dungarpur, Banswara, Rajsamand
Abu Road, Pratapgarh, Chittorgarh.

टैक्स वसूली बढ़ी, उलझनें भी तो घटें !

पिछले साल 30 जून की मध्य रात्रि को संसद के विशिष्ट सत्र में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में जीएसटी(वस्तु एवं सेवा कर) का शुभारंभ किया था। देश 72वां स्वाधीनता दिवस मना रहा है। आजादी के बाद के इन 71 वर्षों में यदि कोई बड़ा आर्थिक सुधार था तो वह जीएसटी के रूप में पूरे देश में समान करारोपण का था। हालांकि जब कोई नई व्यवस्था शुरू की जाती है तो उसमें खामियां भी स्वाभाविक हैं। ऐसा ही जीएसटी का लेकर भी हुआ है। इससे फायदे हुए, तो कारोबारियों को परेशानियां भी हुईं और कुछ चीजों को ज़रूरत से ज्यादा के टैक्स स्लेब में डालकर आम आदमी को नाराज़ भी किया। जीएसटी को पिछले एक साल में कई मोर्चों पर खुद को साबित करना पड़ा। कारोबोरियों और आम आदमी की नाराज़गी, विपक्ष की घेराबंदी और अर्थव्यवस्था की मंदी, लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, बात बनती गई। इसमें दो राय नहीं कि अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट रही है। बढ़ती टैक्स वसूली और बढ़ता टैक्सपेयर बेस भविष्य की खुशनुमा तस्वीर का संकेत दे रहे हैं। लेकिन छोटे कारोबारियों की परेशानी का समाधान अब भी नहीं हो पाया है, उन पर यदि ध्यान नहीं दिया गया तो हालात कभी भी खराब करवट ले सकते हैं। हालांकि सरकार द्वारा गठित जीएसटी काउंसिल अब तक 28 बैठकें कर चुकी हैं, जो ज़रूरत मुताबिक सिस्टम में बदलाव भी करती रही है। इसने 10 नवम्बर 2017 को 180 वस्तुओं को 28 फीसदी के ऊँचे स्लैब से हटाकर निचले स्लैब से जोड़ दिया। अब तक कुल 1,200 वस्तुओं में से 328 के दाम कम किए जा चुके हैं। सरकार इस बात के संकेत भी दे चुकी है कि आने वाले समय में जीएसटी के स्लैब घटाकर दो किए जा सकते हैं। जबकि कांग्रेस ने वादा किया है कि यदि 2019 के चुनाव में वह सत्ता में आई तो जीएसटी की दर को एकल बनाएगी।

यहां उल्लेखनीय है कि पिछली कांग्रेस नीत संप्रग सरकार ने 18 फीसद की एकल दर वाले जीएसटी का सुझाव दिया था। जीएसटी से जो फायदे गिनाएं जा रहे हैं, उनमें टैक्स वसूली में इज़ाफा, काला बाज़ारी में कमी, एक क्लिक पर सामान पर टैक्स की जानकारी, विदेशी निवेश का आसान होना, जीएसटी सम्बन्धी ऑन लाइन प्रक्रिया को बेहद आसान किया जाना और टैक्स चोरी पर अंकुश लगाना आदि हैं। यदि कमियों पर बात की जाय तो छोटे कारोबारियों का दफ्तरों के चक्कर लगाने का क्रम पहले से जरा भी कम नहीं हुआ है। तकनीकी परेशानियां जैसे वेबसाइट का डाउन या हैंग होना, रिटर्न फॉर्म में बदलावों को लेकर असमंजस, रिफंड क्रेडिट को लेकर असन्तोष बढ़ना आदि प्रमुख हैं। जीएसटी को सिर्फ नफे-नुकसान का झरोखा ही नहीं बनना है। टैक्स सिस्टम जनोन्मुखी और उसका सामाजिक संदर्भ भी होना चाहिए, जो दुर्भाग्य से अब तक जीएसटी के साथ नहीं है। जीएसटी लागू होने के प्रारंभिक महीनों में यह बात इसके क्रियान्वयन के दौरान पुष्ट भी हुई।

दरों में बार-बार बदलाव किए गए, बार-बार अधिसूचनाएं जारी हुईं और महीनों तक देश का बाज़ार और उपभोक्ता गफलत में रहा। ये तमाम उलझनें संभवत: इसलिए थीं क्योंकि जीएसटी पर्याप्त तैयारी के बगैर, जल्दबाजी में लागू किया गया। कर की चार दरों(5, 12, 18, 28 प्रतिशत) और कई सारे उप-करों के चलते, जीएसटी के जितना सरल होने की उम्मीद बांधी गई थी, वैसा नहीं हो पाया। सैद्धान्तिक रूप से जीएसटी एक स्वागतयोग्य कदम था, पर फ्रेमिंग गड़बड़ हो गई। जीएसटी से अर्थव्यवस्था को अधिक संगठित रूप मिलने की आशा की जा रही है, पर केवल कॉरपोरेट के मद्देनजर नहीं, इस दृष्टि से भी आकलन होना चाहिए कि लघु उद्यमों और छोटे व्यवसायों पर इसका असर कैसा रहा। पहले साल में कुल मिलाकर, इस दृष्टि से अनुभव मिला-जुला रहा है। मेरा मानना है कि यदि संघीय ढांचे और उसके सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए जीएसटी के सम्पूर्ण सिस्टम में बदलाव किए जाएं, तो यह सुलझा और कारगर सिस्टम बन सकता है। सिस्टम वो होना चाहिए, जो आम आदमी की समझ में सहज रूप से आए। उलझा हुआ सिस्टम न केवल भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है अपितु विकास की गति को भी कुन्द करता है। केन्द्रीय सत्ता में चार वर्ष दो माह पूरे कर चुके नरेन्द्र मोदी ने पी. वी. नरसिंहराव के बाद आर्थिक सुधारों की दिशा में निश्चय ही साहसिक कदम उठाया है, लेकिन जीएसटी में वांछित सरलीकरण की प्रक्रिया सहित अभी ऐसे और भी कई वादे हैं, जिन्हें उन्हें पूरा करना है। क्योंकि जनता ने जो उम्मीदें उनसे बांधी थी, वे जल्दी बिखर भी गईं। नौकरशाही में भ्रष्टाचार की जड़ें अब भी कायम हैं और महंगाई से सामान्य जनजीवन त्रस्त है। जिनके पास रोजगार नहीं है, वे जीने के मायने ही तलाश रहे हैं। मोदीजी के सत्ता में आने के बाद यह उम्मीद भी जगी थी कि मंत्रियों के ठसकों और वर्क कल्चर में तब्दीली आएगी पर वे आज भी सातवें आसमान पर बिराजे दोनों हाथ मौज लूट रहे हैं। कोई ऐसी नज़ीर उनकी ओर से अब तक पेश नहीं हुई जो अपने समकक्ष पूर्ववर्तियों से उनकी अलग छवि गढ़ती हो। इन सबके लिए विपक्ष भी कम जिम्मेदार नहीं है, जो जनता के सवालों के हल ढूंढने की बजाय खुद अपने वजूद की लड़ाई में मुब्तिला है।

किसानों को अब मिल सकेगा फसलों का उचित दाम

एमएसपी उर्वर करेगी भाजपा की सियासी जमीन

लोकसभा चुनाव से पहले होने वाले मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान विधानसभा के चुनावों में किसानों को साधने की जुगत

पहले तीन राज्यों में विधानसभा चुनाव व इसके बाद लोकसभा चुनाव को देखते हुए केंद्र सरकार अपनी सियासी जमीन को लगातार उर्वर बनाने में जुटी है। देश की आबादी के 58 फीसदी किसान भाजपा और कांग्रेस दोनों के भाग्यविधाता हैं। भले ही किसानों को अपनी मेहनत का पूरा लाभ मिले या न मिले लेकिन राजनैतिक समीकरण के उलटफेर में इनकी भूमिका अहम मानी जाती है। कर्नाटक सरकार ने किसानों का कर्ज माफ कर इस पर मुहर लगा दी थी। इसके बाद कई राज्यों की सरकारें भी इस पगडंडी पर निकल पड़ी। हाल ही में केंद्र सरकार ने भी इस ओर कदम बढ़ाते हुए 4 जुलाई को नया न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी की घोषणा की। ये अब तक की सबसे बड़ी बढ़ोतरी है। माना जा रहा है कि केंद्र सरकार ने एमएसपी का उर्वरक खुले दिल से इसलिए छिडका है ताकि भाजपा की सियासी जमीन और अधिक उर्वर बन सके और लोकसभा चुनाव से पहले होने वाले मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान विधानसभा चुनाव में लहलहाते वोटों की फसल हासिल की जाए।

एमएसपी की घोषणा को लोकसभा चुनाव से जोड़कर देखा जा रहा है। क्योंकि तीनों राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव ही लोकसभा की तस्वीर तय करेंगे। दरअसल, 2014 लोकसभा चुनाव से पहले इन तीनों राज्यों में फतह ने जहां कांग्रेस के खिलाफ माहौल का स्पष्ट संकेत दिया था। वहीं लोकसभा चुनाव में इन तीनों राज्यों की 65 में से 61 सीटें भाजपा के खाते में आई थी। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा को लगातार चौथी बार सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ सकता है। वहीं, राजस्थान को लेकर भाजपा संकट महसूस कर रही है जो दो सीटों पर हुए उपचुनाव से साबित हो गया था। ऐसे में एमएसपी की खुराक से पार्टी की कोशिश राजनीतिक मजबूती हासिल करने की है। धान जहां छत्तीसगढ़ की मुख्य फसल है और उसकी एमएसपी में ऐतिहासिक 200 रुपए की बढ़ोतरी की गई है। वहीं ज्वार और मूंग की कीमत में उछाल मध्यप्रदेश और राजस्थान की राजनीतिक जमीन की कूबत रखता है। ध्यान रहे कि देश में लगभग 47 लाख टन ज्वार का उत्पादन होता है और उसमें से लगभग 36 लाख टन अकेले राजस्थान में उपजता है। यही कारण है कि धान की तरह हर साल तो नहीं लेकिन चुनावी साल में ज्वार पर भी सरकार की नजरें इनायत होती रही है। 2008-2009 के बाद 2012-13 में इसकी एमएसपी में 250 से

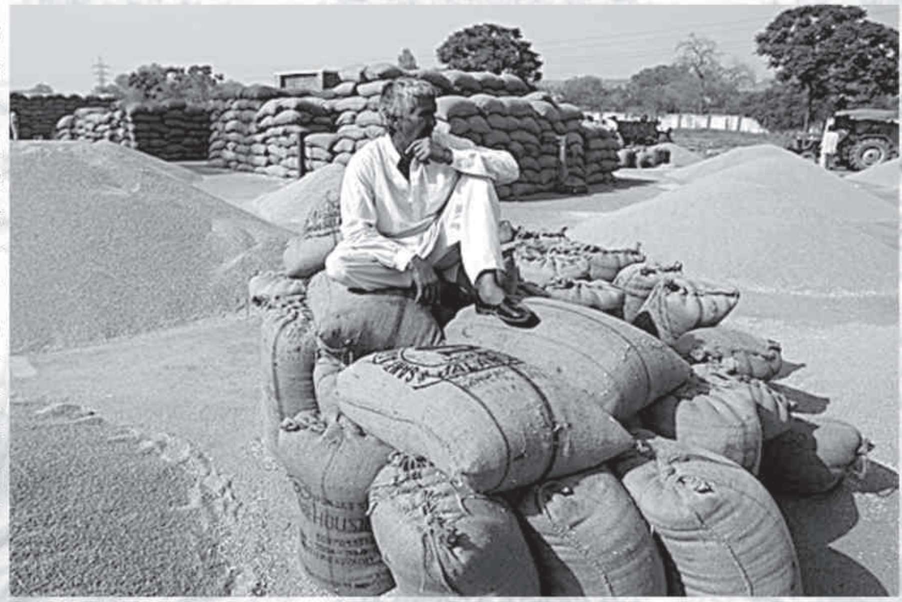

क्या है एमएसपी

एमएसपी यानी मिनिमम सपोर्ट प्राइस। ये वो कीमत होती है जिस पर सरकार किसानों से अनाज खरीदती है। किसानों के लिए फसलों पर 50 प्रतिशत मुनाफा देने के मकसद से इस बार एमएसपी में रिकॉर्ड बढ़ोतरी का फैसला लिया गया। अब अनाज की लागत के आंकलन के लिए ए2 प्लस एमएल फॉर्मूला अपनाया जाएगा।

कितना हुआ एमएसपी

फसल	पहले	अब
सामान्य धान	15.50	1750
ग्रेड धान	1550	1770
मूंग	5575	6975
रागी	1900	2897
उड़द	5400	5600
सोयाबीन	3050	3399
मूंगफली	4450	4890
सूरजमुखी	4100	5388

400 रुपए के बीच बढ़ोतरी होती रही है। इस बार सरकार ने 730 रुपए की बढ़ोतरी कर ज्वार को उस श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है, जहां किसान खुशहाली का अनुभव कर सकें। संभव है कि इस बार ज्वार खरीद की कवायद भी जोरों पर दिखे क्योंकि सामान्यतः सरकारी स्तर पर इसकी खरीद नहीं होती है। ज्वार की फसल अक्टूबर के आसपास के आसपास आती है और नवंबर में चुनाव से पहले किसानों की जेब भरी हो सकती है। वहीं, मूंग की एमएसपी में भी सरकार ने 1400 रुपए की बढ़ोतरी की है। लगभग 90 फीसदी मूंग की खरीद मध्यप्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र से ही होती है। बता दें कि एमएसपी में बढ़ोतरी के साथ ही सरकार ने खरीदी के पुख्ता इंतजाम करने के लिए कमर कस ली है। अगर सही कीमत पर खरीद में कसर रह गई तो सरकार को जवाब देना पड़ सकता है।

आय बढ़ाने के बहाने 'लक्ष्य' भेदने का लक्ष्य

1 फरवरी 2018 को वित्त मंत्री अरुण जेटली द्वारा 2018-19 के लिए पेश बजट में कहा गया था कि सरकार की कोशिश है कि 2022 तक किसानों की आय दोगुनी कर दी जाए। इस फैसले के पीछे सरकार की वोट बैंक को भी मजबूत करने की मंशा थी। पिछले दो साल से देश के किसान अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग मुद्दों पर आंदोलन करते आ रहे हैं। पिछले साल तमिलनाडु के किसानों का लंबे समय तक दिल्ली के जंतर-मंतर पर धरना-प्रदर्शन चला। सरकार किसी तरह से किसानों को समझाने में कामयाब रही। फिर मध्यप्रदेश के किसान आंदोलन करने लगे। आंदोलन इतना उग्र हुआ कि छह किसान पुलिस की गोलियों से मारे गए। वो मामला शांत ही नहीं हुआ था कि महाराष्ट्र में करीब 35 हजार किसान एकजुट मुंबई पहुंच गए। सरकार ने उनको भी मनाया तो एक बार फिर से किसानों ने गांवबंद कर दिया। शुरुआत मध्यप्रदेश से हुई और फिर किसानों ने दूध-सब्जियां सडकों पर फेंक दी। किसानों के बार-बार के इस गुस्से को सरकार भी समझ रही थी और इसी को शांत करने के लिए सरकार की ओर से फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में ऐतिहासिक बढ़ोतरी की गई ताकि भाजपा 'सबका साथ सबका विकास' का अपना नारा लेकर किसानों के बीच जा सके।

- पीयूष शर्मा

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

GRACE

Grace Marble & Granite P. Ltd.
Grace Exports

N.H. 8, Amberi, Udaipur,(Raj.) India
Tel. : 91-294-2440474, 2440475 Fax : +91-294-2440135
E-mail : grace_export@yahoo.co.in, Info@graceexport.com
Website : www.graceexport.com

मन का मंथन यानी श्रीकृष्ण

कृष्ण हमेशा नील वर्ण में दिखते हैं। इसका अर्थ है कि शरीर इतना पारदर्शी है कि उसका अस्तित्व लगभग न के बराबर है। जो अनंत है उसे प्रकृति ने नीले रंग से दर्शाया है, आकाश नीला है और समुद्र भी नीला है।

श्रीश्री रविशंकर

भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी की काली रात थी। आसमान पर घनघोर घटाओं का डेरा था और कंस के कारागृह में बंधक वासुदेव और देवकी को चिंता इस बात की थी कि कंस उनकी नौवीं संतान की भी हत्या करने वाला है। तभी भगवान ने उन्हें चतुर्भुज रूप में दर्शन दिए और बाद में कृष्ण कन्हैया लाल के रूप में जन्म लेकर दोनों के दुखों का हरण किया। जन्म के बाद वासुदेव बाल कृष्ण को नंदभवन छोड़ आए और योगरूपी माया को वहां से ले आए। जब कंस ने उस कन्या को शिला पर पटकना चाहा तो वह अष्टभुजा रूप में प्रकट हुई और कंस से यह कहकर अंतर्ध्यान हो गई कि तुझे मारने वाला तो प्रकट हो चुका है।

इधर, गोकुल की गलियों में आनंद व्याप्त हो गया और नंदरानी यशोदा की गोद धन्य हो गई। भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी बाल लीला में कंस द्वारा भेजे गए पूतना, शकटासुर, बकासुर, अयासुर का वध कर उनका उद्धार किया। कालिया नाग के मद का मर्दन कर उसके फन पर नृत्य किया और गोवर्धन को ऊंगली पर उठाकर पूरे ब्रजमंडल की अहंकारी इंद्र द्वारा बरसाए वर्षा के जल से न केवल रक्षा की अपितु इंद्र का मान-मर्दन भी किया। अपने गुरु सांदीपनि को गुरु दक्षिणा में उनका मृत पुत्र पुन जीवित कर उन्हें दिया। कृष्ण का ज्ञान, माधुर्य और प्रेम अद्वितीय है। हरेक दृष्टिकोण से उनका व्यक्तित्व पूर्ण और अनूठा है। इससे यह समझा जा सकता है कि जैसे सूर्य की किरण में सभी रंग निहित हैं उसी प्रकार से सभी गुण भी कृष्ण के अंतर तम में समाये हुए हैं।

पांडवों की मां महारानी कुंती ने कृष्ण से कहा-काश मेरे पास और अधिक परेशानियां होतीं। जब भी मैं किसी मुसीबत में थी, तुम हमेशा मेरे साथ थे। तुम्हारे साथ से मिलने वाला आनंद किसी और सुख-सुविधा या आराम के आनंद से अधिक है। मैं कोई भी दुःख सह सकती हूं। मैं आपके साथ के एक पल के बदले दुनिया के सभी सुखों का त्याग कर सकती हूं।

कृष्ण ने उन्हें कहा कि 'मैं तुम्हारे अंदर तुम्हारे स्वयं के रूप में ही हूं। इस दुनिया में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां मैं नहीं हूं। लोग मुझे एक भौतिक शरीर के रूप में देखते हैं पर वे मेरे सच्चे स्वरूप को नहीं जानते। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार-यह शरीर इन आठ तत्वों से बना है। मैं नौवा हूं और इन सब से परे हूं। मैं सर्वव्यापी हूं। मूर्ख लोग यह नहीं जानते। उन्हें लगता है कि मैं एक मानव हूं। मैं शरीर में हूं, परंतु मैं शरीर नहीं हूं। मैं मन के माध्यम से काम कर रहा हूं। मैं मन नहीं हूं। जैसा मैं तुम्हें दिखता हूं वह मैं नहीं हूं। अपनी ज्ञानेन्द्रियों से जितना तुम

मुझे जान पायी हो उससे मैं कहीं अधिक हूं। मैं तुम्हारे हृदय में तुम्हारे स्वयं के ही रूप में उपस्थित हूं और जब कभी तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी, मैं वहां रहूंगा। मैं तुरंत तुम्हारे पास आ जाऊंगा, तुमको सभी परेशानियों से बाहर निकालूंगा। संतजन तो कृष्ण के प्रेम में डूबे ही, वैरागीजन भी उनकी ओर खिंचे चले जाते थे। कृष्ण शब्द का अर्थ है -जो आकर्षक है, जो सब कुछ अपनी ओर खींचता है। हमारे अस्तित्व का अंतरतम स्तर ऐसा ही है-आत्मा का सुख और परमानंद कुछ ऐसा ही है। वह सब कुछ अपनी ओर आकर्षित करता है। कृष्ण के जन्म का प्रतीकवाद भी बहुत सुंदर है। देवकी-शरीर और वसुदेव प्राण के प्रतीक है एक होकर कृष्ण यानी भीतर के आनंद को प्रकट करते हैं।

कृष्ण हमेशा नील वर्ण में दिखते हैं। इसका अर्थ है कि शरीर इतना पारदर्शी है कि उसका अस्तित्व लगभग न के बराबर है। जो अनंत है उसे नीले रंग से दर्शाया जाता है, आकाश नीला है और समुद्र नीला है। खुद कृष्ण गीता में कहते हैं,' लोग मेरे सच्चे स्वभाव को नहीं जानते। कोई भी नहीं जानता।' उनके पूरे जीवन काल में केवल तीन लोग ही उनके सच्चे विराट स्वरूप को जान पाए। पहली यशोदा थीं, दूसरे अर्जुन और तीसरे व्यक्ति उनके बचपन के मित्र उद्धव। कृष्ण को माखन चोर कहा गया है। मक्खन दूध का अंतिम उत्पाद है। दूध में जामन डालने से दही जम जाती है और दही को अच्छी तरह से मथकर मक्खन निकलता है। जीवन भी मंथन की एक प्रक्रिया है। कृष्ण नवनीत चोर हैं-चितचोर हैं। इसका क्या अर्थ है? वह प्रेम करते हैं सच्चिदानंद स्वरूप से, वह उस चित से प्रेम करते हैं जो मक्खन जितना नरम हो, जो सख्त न हो। जब तुम्हारा मन ऐसा बन जाता है तब वे तुमको पसंद करने लगते हैं। इसका अर्थ है कि तब अनंतता तुम्हारी और बढने लगती है। वह तुमसे प्यार करती है कि तुम्हारे चित को तुमसे किसी भी कीमत पर चुरा लेती है। वह तुम्हें ढूंढ रहे हैं। तुम जहां कहीं भी हो, वे आते हैं और तुम्हें ढूंढ लेते हैं।

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मो. : - 9309359728 फोन :- 0294-2424423

जय जगदीश किराणा स्टोर

लोंगी मिर्च, तेजा मिर्च, फटकी मिर्च, फाड़ा मिर्च, लाल मिर्च, हल्दी, धनिया, बेसन व पिसी शक्कर व सभी प्रकार के गरम मसाले, तेल, घी के थोक व रिटेल विक्रेता

नोट :- हमारे यहां सभी साबूत मिर्च - मसाले हाथों-हाथ पिसे जाते हैं।

12, शिवमार्ग, तेलीवाड़ा, उदयपुर (राज.)

सावधानी

कभी बारिश, कभी उमस

जलजनित रोग की दस्तक

- डॉ अनिता शर्मा

बरसात की झमाझम में जलजनित बीमारियों ने भी दस्तक देनी शुरू कर दी है। डेंगू, मलेरिया, डायरिया व टाइफाइड के रोगी अस्पतालों में आना शुरू हो गए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार सेहतमंद रहना है तो संतुलित भोजन खाएं और उबला हुआ पानी पिएं।

मानसून में होने वाले रोगों को हवा, पानी और मच्छर से होने वाले रोगों की श्रेणियों में बांटा जाता है। मानसून संबंधी रोग उन लोगों को अधिक होते हैं, जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है। खासतौर पर बच्चों और बुजुर्गों को इस संबंध में खास एहतियात रखने की जरूरत है।

जलजनित रोग

गेस्ट्रोएनट्राइटिस

बार-बार डायरिया होना गेस्ट्रोएनट्राइटिस का प्रमुख लक्षण है। चौबीस घंटे के भीतर तीन या उससे अधिक बार पतले दस्त होने के अलावा इस स्थिति में उलटी आने, चक्कर आने, पेट में मरोड़, सिरदर्द व तेज बुखार के लक्षण भी देखने को मिलते हैं।

पीलिया

पीलिया में त्वचा पर सफेदी व आंखों में पीलापन दिखाई देता है। इस स्थिति में पेशाब व मल का रंग गहरा पीला हो जाता है।

उपाय : उबला हुआ या क्लोरिनेटेड पानी पिएं। ताजे फल-सब्जियां व घर में बना हुआ खाना खाएं। सड़क किनारे बिकने वाले खुले में रखे खाद्य पदार्थों को खाने से परहेज करें। ठंडे पानी की रेहड़ियों, रेस्तरां व होटल इत्यादि में इस्तेमाल की जाने वाली बर्फ भी संक्रमण का प्रमुख कारण है। उबला हुआ या बोतल बंद पानी ही पिएं। खाने से पहले व शौचालय जाने के बाद हाथ जरूर धोएं।

मच्छर से होने वाली बीमारियां

डेंगू मलेरिया व चिकनगुनिया : इसमें 103 डिग्री तक तेज बुखार के साथ शरीर दर्द, उलटी व सिरदर्द के लक्षण देखने को मिलते हैं। इस वजह से आंखों में दर्द, त्वचा पर लाल चकत्ते, खारिश और मांसपेशियों में कमजोरी भी होती है। मलेरिया में ठंड व ठिठुरन होती है और चिकनगुनिया में सूजन व अकड़न के अलावा जोड़ों व मांसपेशियों में असहनीय दर्द होता है।

उपाय : घर के आसपास बारिश का पानी एकत्र न होने दें। सुबह व शाम के समय घर के दरवाजे व खिड़कियां बंद रखें। स्प्रे, कॉइल्स, मच्छर से बचाने वाली क्रीम, लिक्विड्स या मच्छरदानी का नियमित इस्तेमाल करें।

हवा से होने वाले रोग

बारिश के साथ सामान्य जुकाम व इन्फ्लुएंजा का संक्रमण तेजी से फैलता है। आमतौर पर संक्रमण के संपर्क में आने के दो-तीन दिन बाद सामान्य जुकाम के लक्षण नजर आते हैं। गले में खराश, सांस लेने में परेशानी, साइनस में सूजन, छींक, खांसी, सिरदर्द, बुखार, मांसपेशियों में दर्द, पसीना आना व हर समय थकावट रहती है।

उपाय : छींक व खांसते समय मुंह कवर करें। रुमाल की जगह टिश्यू पेपर का इस्तेमाल करें और इस्तेमाल के तुरन्त बाद उसे डस्टबिन में डाल दें। साफ-सफाई का खास ध्यान रखें।

मानसून में अच्छे दोस्त

तुलसी : रोज तुलसी की पत्तियां खाने से वायरल बुखार, कफ व जुकाम से लड़ने की शारीरिक क्षमता बढ़ती हे। आप तुलसी की पत्तियों को सलाद में मिला कर खा सकते हैं। इन्हें धोकर गुड़ व चीनी के साथ लेना भी अच्छा रहता है। चाय उबालते समय दो-तीन पत्तियां तुलसी की ज़रूर डालें।

लहसुन : शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने और टॉक्सिन्स को शरीर से बाहर का रास्ता दिखाने में लहसुन को महारत हासिल है। लहसुन को सूखा भून कर खा सकते हैं और सब्जी व सूप में डाल सकते हैं।

कड़वे-खट्टे खाद्य पदार्थ : करेला व मेथी आदि स्वाद में भले ही कड़वे हों, पर सेहत के लिए फायदेमंद हैं। इसी तरह इस मौसम में खट्टे खाद्य पदार्थों को ज्यादा से ज्यादा मात्रा में अपनी डाइट का हिस्सा बनाएं। शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ेगी।

आम : मानसून के दौरान अपनी डाइट में आम को भरपूर मात्रा में हासिल करें। यह एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है और रोगों से लड़ने में मदद करता है। आम त्वचा संबंधी परेशानियों को दूर करता है और पाचन भी ठीक रहता है।

Neeraj

Harsh

LAXMI TRADERS

Wholesale Dealers for:

PAN MASALA - TOBACCO - BEEDIES

CIGERATES - MATCHES

ZEENI RET KA CHOWK, UDAIPUR (Raj.)
Mob.: - 9928147546, 9829499990
Tel. No.: 0294-(S) 2421627 (R) 2485064

भाजपा को 'घनश्याम' का राम-राम

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और विधायक घनश्याम तिवाड़ी ने भाजपा से नाता तोडक़र बनाई राजस्थान प्रदेश भारत वाहिनी पार्टी, सभी 200 सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा

विधानसभा चुनाव के मुहाने पर खड़े राजस्थान में सत्ताधारी भाजपा को तगड़ा झटका उस वक्त लगा जब छठी बार विधायक बने घनश्याम तिवाड़ी ने अलग पार्टी बनाने का एलान किया। तिवाड़ी ने पिछले चार साल से मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के खिलाफ मोर्चा खोल रखा था। इस बार बगावत के सुर तो वहीं है लेकिन झंडा बदल गया है। उन्होंने घोषणा की कि आगामी विधानसभा चुनाव में उनकी 'भारत वाहिनी पार्टी' सभी 200 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। संघ के मार्फत राजनीति में आए तिवाड़ी प्रदेश में बीजेपी के संस्थापक सदस्य रहे हैं। वे उस वक्त चर्चा में आए जब उन्होंने 1980 में राजस्थान के सीकर में सांवली रोड पर 10 बीघा जमीन थोड़े से मोल-भाव के बाद सीताराम शर्मा को बेच दी थी। तब वे 33 साल के युवा थे और वे चुनाव लडऩा चाहते थे। यह उनकी पुश्तैनी जमीन थी। इधर, जनता पार्टी टूटने के बाद नई बनी बीजेपी के लिए राज्य में ये पहला चुनाव था। तिवाड़ी के खिलाफ थे कांग्रेस के सोमनाथ त्रेहन और लोकदल के मोहम्मद हुसैन। उन्होंने इस त्रिकोणीय मुकाबले को 3820 वोटों से जीता। 1985 के चुनाव में इसी सीट पर फिर से मुकाबला त्रिकोणीय था। बीजेपी से तिवाड़ी, कांग्रेस के सांवरमल और निर्दलीय प्रत्याशी अब्दुल रज्जाक मैदान में थी। तिवाड़ी फिर से जीते लेकिन इस बार जीत का अंतर तीन गुना था। यानी इस बार वो 12 हजार से ज्यादा वोटों से चुनाव जीत गए। सीकर जिले की धोद तहसील के खूड़ गांव में तिवाड़ी का जन्म 19 दिसम्बर 1947 को हुआ। उनका खूड़ में ननिहाल था क्योंकि उनकी मां बचपन में ही चल बसीं थी। थोड़ी उम्र के बाद उन्हें पिता के घर शीतला का बास, सीकर लौटना पड़ा। किशोरावस्था में ही उनका संपर्क आरएसएस से हो गया। संघ से विद्यार्थी परिषद में सक्रिय हुए। 1966 से 68 तक सीकर के श्रीकल्याण कॉलेज के तीन बार महासचिव रहे। इसके बाद वकालत करने जयपुर चले गए। यहां भी छात्र राजनीति में सक्रिय रहे और लॉ कॉलेज के अध्यक्ष चुने गए। इसके बाद जनसंघ के युवकों के लिए बने संगठन युवा संघ के पहले प्रदेश अध्यक्ष बने। जाति से ब्राह्मण घनश्याम तिवाड़ी का अपने समाज पर जबरदस्त प्रभाव माना जाता है। यही वजह है कि 1980 के बाद से तिवाड़ी कई सीटें बदल चुके हैं लेकिन हर नई जगह से वे पहले से ज्यादा वोटों से जीतते रहे। सीकर के बाद 1993 में जयपुर के पास चौमूं सीट से चुने गए। पिछले 15 साल से वे सांगानेर से विधायक हैं।

हाइकमान ने भी नहीं की मनाने की कोशिशें

घनश्याम तिवाड़ी उन गिने चुने नेताओं में शुमार है जिन्होंने राजस्थान में बीजेपी की जड़ों को जमाने का काम किया। 1980 में वे पहली बार सीकर से विधायक के रूप में विधानसभा पहुंचे थे। ये वो दौर था जब बीजेपी को चुनाव लड़वाने के लिए उम्मीदवार भी नहीं मिलते थे। उस दौर में भैरो सिंह शेखावत, नाथू सिंह गुर्जर, किरोड़ी लाल मीणा, घनश्याम तिवाड़ी, हरिशंकर भाभड़ा, ललित किशोर चतुर्वेदी, रघुवीर सिंह कौशल जैसे नेता गांव-गांव घूमकर बीजेपी के बारे में लोगों को बताते थे। भैरो सिंह शेखावत सरकार के साथ ही 2003-08 की राजे सरकार में भी वे कैबिनेट मंत्री रहे। वे पिछले काफी समय से मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे से नाराज चल रहे थे। उन्होंने न कभी अपनी नाराजगी को छिपाने की कोशिश की और न ही कभी मुख्यमंत्री खेमे से उन्हें मनाने की कोशिशें हुई। बल्कि जितनी बार उनकी तरफ से हाईकमान को राजे की शिकायत जाती थी, उतनी ही बार पार्टी की तरफ से ये ऐलान भी किया जाता था कि नेतृत्व तो राजे के पास ही रहेगा। इससे यह साफ होता है कि राजस्थान में वसुंधरा राजे के सामने भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने भी घुटने टेक दिए हैं। इसको लेकर घनश्याम तिवाड़ी ने सीएम राजे पर आरोप भी लगाए है कि ऐतिहासिक बहुमत देने के बावजूद जनता को ठगने का काम किया गया। केंद्र के दो-तीन नेताओं की मिलीभगत से राजस्थान में जमकर लूट मची है।

बीजेपी को नुकसान, कांग्रेस को फायदा

राजस्थान में बीजेपी सत्ता में होते हुए भी कश्मकश के दौर से गुजर रही है। पिछले 4 साल में 8 में से 6 उपचुनाव वो हार चुकी है। कोर वोटर समझे जाने वाले राजपूत समाज के लोग पद्मावती और आनंदपाल जैसे मामले को लेकर खुलेआम विरोध का झंडा उठाए हुए हैं। गुर्जरों को पांच प्रतिशत में से एक प्रतिशत ही आरक्षण देने से और कांग्रेस की कमान गुर्जर नेता सचिन पायलट के पास होने के चलते इस बार गुर्जर वोट भी खिसकते नजर आ रहे हैं। गुर्जरों के प्रति तुष्टिकरण को लेकर मीणा समुदाय भी बीजेपी से नाराज है। हालांकि किरोड़ी मीणा के वापस भाजपा में शामिल होने से कुछ राहत की उम्मीद की जा सकती है। वसुंधरा राजे से नाराजगी के चलते ही पूर्व बीजेपी नेता और खींवसर

विधायक हनुमान बेनीवाल तीसरे मोर्चे को खड़ा करने में जुटे हैं। युवा जाटों के बीच बेनीवाल ने तेजी से पैठ बनाई है। अब वे जेएम-3 (जाट, माली, मेघवाल, मुस्लिम) समीकरण बनाने में लगे हैं। ये 4 जातियां कुल जनसंख्या में करीब 40 प्रतिशत हिस्सा रखती हैं। हनुमान बेनीवाल और घनश्याम तिवाड़ी की आपसी समझ अच्छी दिख रही है। ब्राह्मणों के कई संगठनों ने पहले ही तिवाड़ी का समर्थन करने का ऐलान कर दिया है। अगर जेएम-3 में ब्राह्मण जुड़ जाते हैं और राजपूत भी बीजेपी का साथ छोड़ देते हैं (जैसा कि अजमेर, अलवर और मांडलगढ़ उपचुनाव में हुआ) तो बीजेपी के पास 15-20 प्रतिशत वोट ही मुश्किल से बचेंगे। जबकि 2013 विधानसभा चुनाव में भाजपा के पास 50 प्रतिशत वोट रहे। इधर, कांग्रेस का मानना है कि बेनीवाल और तिवाड़ी भाजपा के वोट में ही सेंध लगाएंगे। कांग्रेस के वोट नहीं बंटेंगे।

एक दशक पुरानी है तकरार

दरअसल वसुंधरा राजे और घनश्याम तिवाड़ी की अदावत बहुत पुरानी है। 2003 में जब राजे को प्रदेश में मुख्यमंत्री पद के लिए प्रोजेक्ट किया गया, तो पार्टी का एक धड़ा इस बात से खुश नहीं था। घनश्याम तिवाड़ी इसी धड़े में थे। हालांकि उस समय वसुंधरा राजे का कद इतना बड़ा भी नहीं था कि प्रदेश के पुराने नेतृत्व को ठिकाने लगा सकें। उन्हें ना चाहते हुए भी महत्वपूर्ण मंत्रालय विरोधी खेमे को देने पड़े। घनश्याम तिवाड़ी को शिक्षा मंत्रालय सौंपा गया। 8 दिसंबर, 2006 को तत्कालीन राजे सरकार के तीन साल पूरे होने पर एक कार्यक्रम रखा गया। लेकिन घनश्याम तिवाड़ी ने इस कार्यक्रम से समानांतर अलग अपना एक कार्यक्रम रखा। इसी कार्यक्रम में उन्होंने घोषणा की कि शिक्षा मंत्रालय गांवों का इतिहास लिखने का महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट शुरू करने जा रहा है। इसका नाम 'आपणी धरती, आपणा लोग, आपणी खेजड़ी, आपणा फोग' होगा। वसुंधरा राजे ने इसे सियासी चुनौती के तौर पर लिया। ये वो दौर था जब केन्द्र में जसवंत सिंह और प्रदेश में ललित किशोर चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद जैन, गुलाब चंद कटारिया, घनश्याम तिवाड़ी, रघुवीर सिंह कौशल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ी पूरी लॉबी एकाएक वसुंधरा राजे के खिलाफ खड़ी हो गई थी। दूसरे असंतुष्ट नेता गृहमंत्री गुलाब चंद कटारिया हुआ करते थे। गुर्जर आंदोलन के बाद वसुंधरा राजे गृह मंत्रालय का काम खुद देखने लगीं। कटारिया के पास उनके ही विभाग की फाइल जानी बंद हो गईं। वो इससे नाराज चल रहे थे। इसके अलावा कोटा से विधायक मदन दिलावर भी राजे से नाराज थे। कोटा में इमानुएल मिशन पर विहिप के लोगों ने हमला कर दिया था। दिलावर पर भडकाने के आरोप लगे। इधर, 2009 के आम चुनाव में घनश्याम तिवाड़ी को जयपुर शहर सीट से बीजेपी का टिकट मिल गया। यह बीजेपी की सबसे सुरक्षित सीट थी। 1989 से गिरधारी लाल भार्गव लगातार इस सीट पर जीतते आए थे। तिवाड़ी इस सीट पर कांग्रेस के महेश जोशी के खिलाफ 16 हजार वोटों से चुनाव हार गए। आरोप लगा वसुंधरा लॉबी पर।

– जगदीश सालवी

श्रद्धा और रोमांच से परिपूर्ण

उत्तराखंड के चार धाम की यात्रा

- विष्णु शर्मा हितैषी

उत्तराखण्ड के चारधाम की तीर्थ यात्रा से श्रद्धालुओं को मानसिक शांति तो मिलती ही है, मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं। रोमांच से भरपूर प्रकृति के दर्शन का यह अवसर मिलता है अप्रेल से दीपावली के बीच। उसके बाद शीत में बर्फ गिरने से मार्ग लगभग बन्द हो जाता है। गंगा-यमुना की सहायक अलकनंदा, मंदाकिनी, रामगंगा, सरस्वती आदि नदियों का कल-कल करता निनाद तो कहीं शांत प्रवाह, पर्वत शिखरों पर चांदी की मानिन्द चमचमाते हिमखण्ड, विशाल गहरी खाइयां, घने जंगल, विविध प्रजातियों के पशु-पक्षी, रूई के फोहों सी झरती बर्फ, उमड़ते बादल, पल-पल प्रकृति को नहलाती वर्षा की बूंदें और इनके बीच चहकता जनजीवन तन-मन को आनंद से सराबोर कर देता है। जो लोग प्रकृति की खूबसूरती से रूबरू होना चाहते हैं वे उत्तराखण्ड की यात्रा पर जरूर जाएं।

सन् 2013 के जून में प्राकृतिक आपदा के बाद प्रभावित हुई उत्तराखंड चार धाम यात्रा हालांकि उसके बाद के वर्षों में भी निरन्तर रही और आपदा से क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत का काम आज तक चल रहा है। लेखक दम्पत्ती को मई 2017 में इस यात्रा का सौभाग्य मिला। आपदा के बाद के तीन वर्षों में सड़कों और पुलियाओं के सुधार का बहुत काम हुआ जिससे दुर्घटनाओं का खतरा भी कुछ कम हुआ। यह अभियान चालू वर्ष के अन्त तक जारी रहेगा। इस वर्ष यात्रा शुरू होने से पूर्व अप्रेल में प्रधानमंत्री ने 12000 करोड़ रुपये की लागत वाली सड़क सुधार परियोजना का जायजा भी लिया था। इस वर्ष चार धाम यात्रा के श्रद्धालुओं की संख्या पिछले साल का रिकार्ड तोड़ सकती हे।पिछले वर्ष 22 लाख के करीब श्रद्धालुओं ने इन चारों धाम पर शीश नवाया था, जबकि इस वर्ष के प्रारंभिक चार महीनों में 25 लाख से अधिक भक्तों ने इन तीर्थस्थलों को नमन कर पुण्यार्जन किया। चार धाम में से एक केदारनाथ मंदिर के कपाट 29 अप्रेल को खुले थे और तब से जून तक लगभग 7 लाख लोग केदार ज्योर्तिलिंग के दर्शन कर चुके हैं। पिछले वर्ष यात्रा के पूरे सीजन के दौरान 4.17 लाख श्रद्धालु केदारनाथ आए थे। चार धाम यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या प्रत्येक वर्ष मानसून के दौरान घट जाती है, बावजूद इसके 2013 की आपदा से उत्पन्न हालातों में सुधार के कारण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक को उम्मीद है कि इस वर्ष 10 लाख से अधिक श्रद्धालु केदारनाथ के दर्शन करेंगे। चार धाम यात्रा प्रति वर्ष अप्रेल-मई (अक्षय तृतीया) से आरंभ होकर दीपावली तक चलती है। केदारनाथ-बद्रीनाथ धाम क्षेत्र में इस बार भी प्रारंभिक दौर में ही बर्फबारी और वर्षा होने से तीन-चार बार यात्रा को रोकना पड़ा। उत्तरकाशी व टिहरी समेत चार जगहों पर मई के अन्त में बादल फटने और उससे पूर्व बर्फबारी तेज होने तथा जून के अन्तिम सप्ताह में वर्षा के कारण चट्टानें गिरने से यात्रा को दो-तीन दिन स्थगित करना पड़ा। केदारनाथ मार्ग पर 31 मई व 1 जून को भारी बारिश हुई। जिससे यात्रियों को परेशानी हुई। सीमा सड़क संगठन और लोक निर्माण विभाग की टीमें यात्रा के दौरान हादसों में सहायता के लिए चौबीसों घंटे सतर्क रहती हैं। इस यात्रा का पहला पड़ाव है - ऋषिकेश।

कहां - कैसे पहुंचे

बदरीनाथ

ऋषिकेश से बस सेवाएं चौबीसों घंटे उपलब्ध हैं। दूरी करीब 300 किमी है। निजी वाहनों से भी देवप्रयाग, श्रीनगर, रूद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग और चमोली होते हुए जोशी मठ पहुंचा जा सकता है, लेकिन चालक पहाड़ी इलाकों में वाहन चलाने में सिद्धहस्त हों। चौपहिया वाहन भी ऐसे हों जो संकरे और घुमावदार रास्तों पर चल सकें। हेलीकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है।

गंगोत्री धाम

ऋषिकेश से गंगोत्री की दूरी 260 किमी और देहरादून से 300 किमी है। इस धाम तक वाहनों से पहुंचा जा सकता है।

यमुनोत्री धाम

ऋषिकेश से जानकी चट्टी तक की दूरी 237 किमी वाहन से पहुंचा जा सकता है। उसके बाद यमुनोत्री तक की 6-7 किमी की चढ़ाई पैदल अथवा खच्चर से तय की जा सकती है। देहरादून से जानकी चट्टी 181 किमी दूर है।

केदारनाथ

ऋषिकेश से 233 किमी सोन प्रयाग तक वाहन से पहुंचा जा सकता है। सोन प्रयाग प्रशासन की शटल से गौरीकुण्ड पहुंचना होता है। यहीं से पैदल यात्रा शुरू होगी।

यमुनोत्री

यह उत्तराखण्ड के चार धामों में प्रथम धाम है। जो ऋषिकेश से 165 किमी दूर व लगभग 3185 मीटर ऊंचाई पर स्थित है। यमुना का उद्गम बंदरपूंछ पर्वत है। यमुनोत्री के मंदिर के पास गर्म जल का स्रोत है। तप्त कुण्ड को सूर्य कुण्ड भी कहते हैं। इस स्रोत में जल के उबलने से जो ध्वनि प्रस्फुटित होती है, उसे 'ओम ध्वनि' माना गया है। यहां हमने भी अन्य सहयात्रियों के साथ एक मुट्ठी चावल की पोटली कुण्ड में पधराई। कुछ देर बाद सेवक ने उसे निकाला और हमें दिया। चावल लगभग पक चुके थे। यमुनोत्री से चार मील ऊपर एक दुर्गम पहाड़ी पर सप्तऋषि कुण्ड भी बताया जाता है, कहते हैं कि वहां सात ऋषियों ने तप किया था। दुर्गम होने के कारण वहां न हमने जाने का मानस बनाया और न ही वहां कोई और जाने की तैयारी में दिखा। यमुना नदी का स्रोत कालिन्दी पर्वत है। जो यमुनोत्री तीर्थस्थल से एक किमी दूर 4421 मीटर की

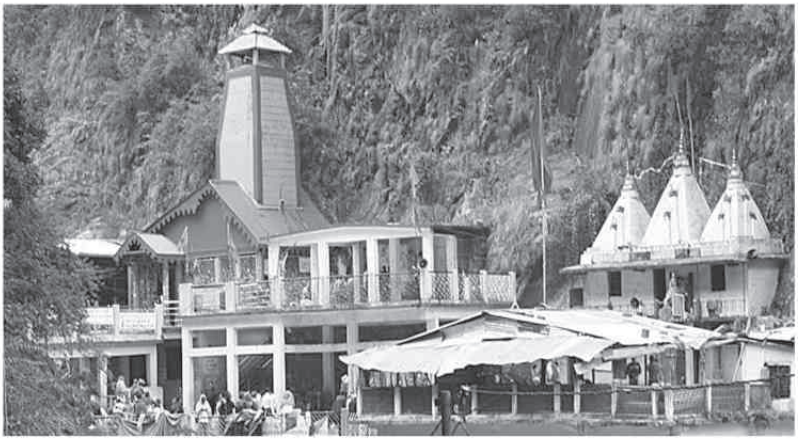

ऊंचाई पर है। यमुना माता मन्दिर का निर्माण टिहरी-गढ़वाल के महाराजा प्रताप शाह द्वारा होना बताया जाता है। धर्मग्रंथों में कालिन्दी अर्थात् यमुना को सूर्यपुत्री, शनि एवं यम की बहन तथा कृष्ण की एक पटरानी भी कहा गया है। हिमालय में गंगा और यमुना की धाराएं एक हो गई होती लेकिन इन दोनों नदियों के बीच दंड पर्वत खड़ा है। कालिंदी पर्वत से बर्फ पिघलकर पानी के रूप में कई धाराओं में गिरती है। इसी कारण यमुना का एक नाम कालिंदी भी है। इस स्थान की शोभा और उर्जस्विता अद्भुत है।

गंगोत्री

यह तीर्थ उत्तरकाशी से 100 किमी दूर पतित पावनी गंगा नदी के उद्गम क्षेत्र में 3042 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। गंगोत्री मंदिर सात सौ साल से भी अधिक प्राचीन है। यहां देवी भागीरथी के दिव्य मंदिर में महालक्ष्मी, पार्वती व अन्नपूर्णा भगवती देवी की भी मूर्तियां हैं। रघुकुल के चक्रवर्ती राजा भगीरथ ने स्वर्ग से गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए यहीं पर कठोर तपस्या की थी और स्वर्ग से जब गंगा उतरी तो इसी स्थान पर उसके वेग को भगवान शिव ने अपनी जटाओं में बांधा और बाद में विभिन्न धाराओं के रूप में गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ। देवदार और चीड़ के जंगल से गुजरते हुए 20 किमी दूर गंगाजी का उद्गम स्थल 'गोमुख' है। बर्फ के पहाड़ों से इठलाती-बलखाती उतरती मां

गंगा के जल का आचमन और स्नान कर श्रद्धालु धन्य हो उठते हैं। कहा जाता है कि यहां गंगा मैया मन्दिर का निर्माण अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में गढ़वाल के सेनानायक अमरसिंह थापा द्वारा करवाया गया। बीसवीं सदी में इसका जीर्णोद्धार जयपुर (राजस्थान) के राजा माधोसिंह (द्वितीय) ने कराया। ऐसी भी मान्यता है कि पाण्डवों ने महाभारत के युद्ध में मारे गए परिजनों की आत्मिक शांति के लिए यहां देव यज्ञ का अनुष्ठान किया था। प्राचीन काल में दुर्गम मार्ग के कारण श्रद्धालु पैदल ही उसे तय करते थे। सन् 1980 के दशक में सड़क बनने के बाद यात्रा काफी सरल हुई और आस-पास के कस्बों का विकास भी तेजी से हुआ।

केदारनाथ

ऋषिकेश से करीब 200 किलोमीटर दूर रूद्रप्रयाग जिले के हिमशिखरों में करीब 3581 मीटर की ऊंचाई पर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ मंदिर का निर्माण पांडव वंश के जनमेजय ने कराया था। आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। मन्दिर के पृष्ठ भाग में ही उनकी समाधि भी है। राहुल सांकृत्यायन मन्दिर को 12-13वीं शताब्दी का मानते हैं। जबकि ग्वालियर से प्राप्त राजा भोज की एक स्तुति के अनुसार मन्दिर का निर्माण 1076-99 के दौरान उनके द्वारा हुआ। मन्दिर करीब 6 फीट ऊंचे चौकोर चबूतरे पर बना हुआ है। मन्दिर के मुख्य मण्डप और गर्भ गृह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ है। बाहर प्रांगण में विशाल नन्दी विराजमान है। प्रातःकाल में शिव-पिण्ड को प्राकृतिक रूप से स्नान कराकर उस पर घी-लेपन किया जाता है। तत्पश्चात् धूप-दीप जलाकर आरती उतारी जाती है। लेकिन संध्या के समय भगवान का चित्ताकर्षक श्रृंगार होता है। मन्दिर के जगमोहन में द्रोपदी सहित पांच पांडवों की मूर्तियां भी हैं। बदरीनाथ के दर्शन से पूर्व केदारनाथ के दर्शन को जरूरी बताया गया है अन्यथा यात्रा निष्फल मानी जाती है। सन् 2013 की आपदा से पूर्व तक गौरीकुण्ड से करीब 14 किलोमीटर की लम्बी दूरी तय कर केदारनाथ मंदिर पहुंचा जाता था, लेकिन उसके बाद रास्ते में बदलाव से हमें 22 किलोमीटर की लम्बी दूरी तय करनी पड़ी। प्राकृतिक आपदा से यहां जान-माल का बहुत ज्यादा नुकसान हुआ, जिसके निशान चार साल बाद भी हमें बेसकेम्प से अपनी यात्रा के दौरान दिखाई पड़े। आश्चर्य तो यह है कि इस भीषण त्रासदी में मंदिर को ज़रा भी क्षति नहीं पहुंची। गौरी कुण्ड से सुबह घोड़ों की सवारी कर दोपहर 1 बजे गुरुड़ चट्टी होते हुए केदारनाथ पहुंचे। रास्ते की बारिश और बर्फबारी से लगता था कि शरीर में खून जम रहा है। ऐसे में घोड़े पर संतुलन साधकर बैठना भी कम हिम्मत का काम नहीं था लगता था कि तेज सर्द हवा अपने साथ होश उड़ा लिए जा रही है। केदारनाथ की चढ़ाई से पहले खरीदे गए रेनकोट बारिश, बर्फ और तेज हवा से फटे हाल थे। मंदिर से काफी दूर दलदली जमीन पर बने बैस कैम्प पर टट्ओं को छोड़ना पड़ा। मन्दिर तक की एक किलोमीटर दूरी अभी पैदल तय करना था। पांव उठने से लाचार थे। कीचड़ में पांव धंसे जा रहे थे। बर्फानी हवा हमारी श्रद्धा और सबूरी का मानो इम्तिहान ले रही थी। कुछ दूर जाकर कॉफी स्टाल पर विश्राम किया और कॉफी की चुस्की लेकर ही आगे बढ़ सके। मन्दिर की बगल में निर्मित डोम में मुरारी बापू की कथा चल रही थी। भगवान की आरती का समय था। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के बावजूद इत्मिनान से ज्योतिर्लिंग केदारनाथ के दर्शन हुए। शिव शंकर के जयकारे बर्फ के शिखरों को चूमते प्रति-ध्वनित होते लग रहे थे। ठंड बढ़ रही थी। बारिश से चारों तरफ गीलापन पसरा था। रात्रि 10 बजे एक शिविर में जब रात्रि विश्राम का स्थान मिला और रजाई में दुबके तो ऐसे कि संध्याकालीन भोजन की भी सुध नहीं रही। भगवान भास्कर के दर्शनोपरांत ही हम अगली यात्रा के लिए यहां से रवाना हो सके। कहते हैं कि सतयुग में उपमन्यु ने यहीं भगवान शंकर की आराधना की। प्रत्येक वर्ष जाड़े के दिनों में भगवान केदारनाथ उखीमठ आ जाते हैं, यहीं उनकी सर्दियों की समाप्ति तक पूजा होती है। उत्तराखंड के इन धामों की यात्रा पर जाने वालों को सर्दी और वर्षा से बचाव के पर्याप्त प्रबन्ध सुनिश्चित करके ही जाना चाहिए।

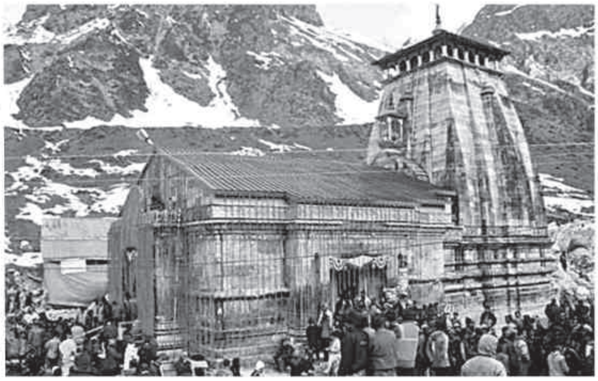

बदरीनाथ

बदरीनाथ धाम चमोली जिले में करीब 3133 मीटर की ऊंचाई पर नर-नारायण हिम शिखरों के बीच स्थित है। माना जाता है कि आदि शंकराचार्य ने नवीं सदी में बदरीनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि स्वयं भगवान विष्णु यहां वास करते थे। कलयुग शुरू होने के बाद भगवान विष्णु यहां मूर्ति रूप में पूजे जाने लगे। शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार धामों में यह उत्तरधाम कहलाता है। भगवान बदरीनाथ की पूजा-अर्चना प्रातः 7-8 बजे करीब होती है। 12 बजे तक दर्शन हो सकते हैं। इसके बाद कपाट बन्द होकर पुनः 3 बजे खुलते हैं और रात 9 बजे शयन आरती तक खुले रहते हैं। इस दौरान समवेत स्वर में मंत्रोच्चार, शंख ध्वनि और घंटियों की टनकार श्रद्धालुओं को रोमांचित किये बिना नहीं रहती। यहां आने वाले यात्रियों को एक रात्रि रूककर शयन आरती के दर्शन जरूर करने चाहिए। स्कंद पुराण में कहा गया है - बहुनि संति तीर्थानि दिविभूमौ रसातले/बदरी संदृशं तीर्थ न भूतं न भविष्यति। अर्थात बदरी सा तीर्थ न कभी हुआ है और न ही भविष्य में होगा। प्राचीन काल में बदरी(बेर) पेड़ों की बहुलता के कारण इस क्षेत्र का नाम बद्रीनाथ पड़ा। कहते हैं कि भगवान विष्णु के अवतार नर-नारायण ने यहीं तपस्या की थी। मंदिर में बदरीनाथ की मूर्ति की स्थापना पहली बार देवताओं ने की। देवर्षि नारद इसके प्रथम अर्चक बने। समय के करवट बदलने पर मंदिर पर विधर्मियों का अधिकार हो गया। आदि शंकराचार्य ने यहां आकर न केवल हिन्दुओं के इस आस्था स्थल को मुक्त करवाया बल्कि अलखनंदा से मूर्ति को निकलवाकर उसकी मंदिर में पुनः प्राण-प्रतिष्ठा करवाई। एक हजार साल बाद ऐसी ही घटना की पुनरावृत्ति हुई। मंदिर का पुजारी ही श्रद्धालुओं की कम आवक को देखकर मूर्ति को तप्तकुण्ड में पधरा कर चलता बना। रामानुजाचार्य को घटना की सूचना मिलने पर वे वहां गए और मूर्ति की पुनः प्रतिष्ठा की। शीतकाल में इस प्रतिमा को जोशी मठ लाया जाकर पूजा-अर्चना की जाती है और सर्दी की समाप्ति के बाद पुनः उसे शिखर स्थित मंदिर में विधानपूर्वक ले जाया जाता है। तप्त कुण्ड मन्दिर की कुछ सीढ़ियां उतरने के बाद नीचे की ओर है। यूं तो इस जगह मई-जून में वाटर सप्लाई के पाइपों में भी पानी जम जाता है, लेकिन इस कुण्ड में पानी उबलता ही रहता है। भीषण सर्दी में गरम पानी का यह स्रोत यहां आने वाले श्रद्धालुओं के लिए 'वरदान' नहीं तो क्या है। तप्त कुण्ड में स्नान के बाद पितरों का श्राद्ध भी किया जाता है।

बदरीनाथ के पांच स्वरूप - श्री विशाल बद्री, श्री योग ध्यान बद्री, श्री भविष्य बद्री, श्री वृद्ध बद्री व श्री आदि बद्री देखने को मिलते हैं। इन सभी रूपों में भगवान बदरीनाथ यहां निवास करते हैं। मन्दिर में अखण्ड ज्योत जलती है। भगवान वेदव्यास का आश्रम यहीं होने के कारण वे बादरायण भी कहलाए।

HAPPY INDEPENDEDECE DAY

FS BE

Your Trust Our Passion...

FIVE STAR BUILD ESTATE PVT. LTD.

A Real Estate & Construction

27, Ist Floor, Diamond Plaza, Opp. Choudhary Hospital,
Hiran Magri, Sec. 4, Udaipur (Raj.) 313002
Email: devvardar@gmail.com,
Mob.: 98295-62167, Ph.: 0294-2461186 (R)

Praman
Construction Pvt. Ltd.

Hemraj Vardar

Office: 9, Five Star Complex, Near Kumbha Nagar,
Hiran Magri, Sector No. 4, Udaipur-313001 (Raj.)
Telefax: 0294- (O) 2461648, (R) 2461186,
Mobile: 98299-48186
Email: pcpl.udaipur@gmail.com

Sister Concern:

D.V. CONSULTING STRUCTURAL ENGINEERS

Expert in Structure Design with Etabs, Safe, Sap, Staad
Email: dvardar@gmail.com

कच्चे धागों का पक्का बंधन 'रक्षाबंधन'

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा की अति विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण तिथि के दिन मनाया जाता है रक्षाबंधन का त्योहार। यह अपने साथ प्रकृति की अनोखी सुरम्यता लेकर आता है। रक्षाबंधन या राखी का त्योहार विश्वभर में एक ऐसा अनूठा त्योहार है, जो अपने साथ ढेर सारा प्यार, स्नेह, संबंधों की मिठास एवं पवित्रता के आध्यात्मिक महत्व को लेकर आता है। वास्तव में देखा जाए तो इस त्योहार का रूप प्रारंभ में बहुत ही ऊंची और अच्छी भावना लिए हुए था, जो समय के साथ धूमिल होता गया। भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' में विश्वास करती है अर्थात् सारा विश्व एक परिवार है। वसुधैव कुटुम्बकम हमें यही सिखाता है कि हम सभी एक परिवार की तरह रहें। प्राचीन काल में यज्ञ के आयोजन के समय उपस्थित रहने वाले सभी व्यक्तियों की कलाइयों में मंत्रों से पवित्र किया एक सूत्र (धागा) बांधा जाता था। यह सूत्र एक और तो उस व्यक्ति की यज्ञ में उपस्थिति का प्रतीक था जबकि दूसरी ओर यज्ञ में प्राप्त शक्ति के आधार पर सूत्र के माध्यम से उस व्यक्ति की रक्षा की कामना का एक आयोजन भी था। इसलिए इस सूत्र को पहले यज्ञ-सूत्र और बाद में रक्षासूत्र कहा जाने लगा। समय के साथ इसी सूत्र ने ले लिया रक्षाबंधन का रूप और एक निश्चित दिन श्रावण की पूर्णिमा को त्योहार के रूप में इसका आयोजन किया जाने लगा। श्रावण माह में आयोजित होने के कारण इसे कहीं-कहीं श्रावणी भी कहते हैं। दक्षिण भारत में नारली पूर्णिमा, महाराष्ट्र में श्रावणी पौणिमा, बंगाल और बिहार में गुरु पूर्णिमा तथा पड़ौसी देश नेपाल में इसे जनै पूणे या जनेऊ पूर्णिमा कहा जाता है।

आध्यात्मिक महत्व

रक्षा बंधन जीवन में मान-मर्यादा व बहन-भाई के निस्वार्थ स्नेह का प्रतीक है। यह वो प्रण है जिसमें बहन की सुरक्षा के लिए प्राणों का बलिदान तक करना पड़े तो भी कम है। इस दिन बहन अपने भाई के ललाट पर तिलक लगाती है। यह आत्म स्मृति का तिलक है क्योंकि आत्मा के रहने का स्थान भी तो भृकुटि के बीच में है। आत्मा तो अजर-अमर अविनाशी है। देह विनाशी है। तिलक लगाते समय बहन भाई को स्मरण दिलाती है कि इस आत्मा रूप में हम भाई-भाई हैं और शरीर के संबंध में बहन-भाई। हमारा पिता अविनाशी है इसलिए तुम अपने जीवन का दैवी गुणों से शृंगार कर सदैव इस संसार में अमर रहो। दूसरा, तिलक लगाने के बाद बहन, भाई का मुख मीठा करती है। बहन कहती है कि तुम्हारे मुख से सदा मीठे बोल निकलें। तीसरा आध्यात्मिक महत्व यह है कि बहन, भाई की कलाई पर राखी बांधती है यानी वो चाहती है कि अपनी आत्मा के अंदर विकार वश जो भी बुराइयां हैं उन्हें परमात्मा के स्मरण व शक्तियों द्वारा भस्म अर्थात् राख कर पवित्र रहने का और दूसरों को पवित्र बनाने का संदेश देने की प्रतिज्ञा करें।

महाकाल को पहली राखी

मध्यप्रदेश की धार्मिक राजधानी उज्जैन में शिव के प्रमुख 12 ज्योर्तिलिंगों में एक मात्र दक्षिणमुखी महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग स्थापित है। बाबा महाकाल उज्जैन के राजाधिराज भी हैं। यहां किसी भी त्योहार की शुरुआत महाकाल मंदिर से ही होती है। इसके बाद घर-घर में उत्सव होता है। रक्षाबंधन पर भी पहली राखी भगवान महाकाल को बांधी जती है। सुबह होने वाली भस्मारती में भगवान को राखी अर्पित की जाती है। इस दिन महाकाल को सवा लाख लड्डुओं का भोग भी धराया जाता है। जिनका बाद में प्रसाद स्वरूप श्रद्धालुओं में वितरण होता है।

बांधे सर्व मांगल्यकारी वैदिक सूत्र

भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन पर्व की बड़ी महिमा है। कई कथाएं एवं किंवदंतियां रक्षाबंधन पर्व के साथ जुड़ी हैं। रक्षासूत्र मात्र एक धागा नहीं बल्कि शुभ भावनाओं व शुभ संकल्पों का बंधन है। यहीं सूत्र जब वैदिक रीति से बनाया जाता है और भगवान्नाम एवं भगवद्भाव सहित शुभ संकल्प करके बांधा जाता है तो इसका सामर्थ्य असीम हो जाता है।

ऐसे बनाएं वैदिक राखी

वैदिक राखी बनाने के लिए एक छोटा सा ऊनी, सूती या रेशमी पीले कपड़े का टुकड़ा लें।

उसमें दूर्वा, अक्षत, केसर या हल्दी, शुद्ध चंदन, सरसों के साबुत दाने इन पांचों चीजों को मिलाकार कपड़े में बांधकर सिलाई कर दें। फिर कलावे से जोडक़र राखी का आकार दें।

सामर्थ्य हो तो उपरोक्त पांच वस्तुओं केसाथ स्वर्ण भी डाल सकते हैं।

वैदिक राखी का महत्व

वैदिक राखी में डाली जाने वाली वस्तुएं जीवन को उन्नति की ओर ले जाने वाले संकल्पों को पोषित करती हैं। जैसे दूर्वा का एक अंकुर जमी में हजारों की संख्या में विस्तारित हो जाता है। ठीक वैसे ही हमारे भाई या हितैषी के जीवन में भी सद्गुण फैलते जाएं, बढ़ते जाएं इसी भावना का द्योतक है दूर्वा। दूर्वा गणेश जी की प्रिय है अर्थात् हम जिनको भी यह राखी बांधे उनके जीवन में विघ्नों का नाश हो जाए। हमारी भक्ति और श्रद्धा भगवान और गुरु के चरणों में अक्षत हो, अखंड और अटूट हो, कभी क्षत-विक्षत न हो यह अक्षत का संकेत है। अक्षत पूर्णता की भावना के प्रतीक हैं। जो कुछ अर्पित किया जाए पूरी भावना के साथ किया जाए। केसर की प्रकृति तेज है अर्थात् हम जिनको यह रक्षासूत्र बांध रहे हैं उनका जीवन तेजस्वी हो। उनका आध्यात्मिक तेज, भक्ति और ज्ञान का तेज निरंतर बढ़ता जाए। केसर की जगह पिसी हल्दी का भी प्रयोग कर सकते हैं। हल्दी पवित्रता एवं शुभता की प्रतीक है।

यह नजरदोष व नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करती है तथा स्वास्थ्य व संपन्नता लाती है। चंदन दूसरों को शीतलता और सुगंध देता है।

यह इस भावना का प्रतीक है कि जिनको हम राखी बांध रहे हैं, उनके जीवन में सदैव शीतलता बनी रहे, कभी तनाव न हो। उनके द्वारा दूसरों की पवित्रता, सज्जनता व संयम आदि की सुगंध मिलती रहे। उनकी सेवा-सुवास दूर तक फैले। वहीं सरसों तीक्ष्णता का प्रतीक है। यानी समाजकंटकों और समाज विरोधी ताकतों के लिए हम मुखर और सक्रिय हों।

- शिवनिका

श्री Ψ

Shankar Lal 9414160690
Jyoti Prakash 9414161690
Chetan Prakash 9413287064

Jyoti Stores
(A Leading Merchant in Ayurvedic Medicines)

ज्योति स्टोर्स

Outside Delhi Gate, UDAIPUR - 313 001 (Raj.)

Ph. : 2420016 (S), 2415690 (R)

Factory : Jhamar Kotra Main Road, EKLINGPURA, Udaipur, Ph. : 2650460

E-mail : jagritiherbs@yahoo.co.in, Website : www.jagritiayurved.com

क्या हमें एहसास है, भावी संतति के प्रति जिम्मेदारी का?

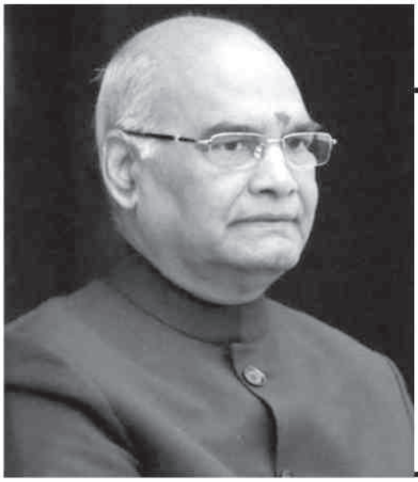

- रामनाथ कोविन्द
राष्ट्रपति

यह धरती कितनी अच्छी तरह से हमारा पोषण करती है। लेकिन हम इसके पोषण के लिए क्या करते हैं? अगर हमें यह सुनिश्चित करना है कि यह प्रकृति एक संसाधन के रूप में, स्रोत के रूप में, मित्र के रूप में हमारी आने वाली पीढ़ियों को उपलब्ध रहे, तो इसके लिए हमें क्या करना चाहिए? क्या आने वाली पीढ़ियों के प्रति, अपनी संतति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का एहसास है या नहीं?

आज सुबह जल्दी उठकर मैं अपने पोते और पोती के साथ सुबह की सैर के लिए पांच बजे शिमला जल संग्रहण क्षेत्र तथा वन्य जीव अभयारण्य के लिए निकल पड़ा। मैं पिछले पांच दिन से मशोबरा में ठहरा हुआ हूं और यह अभयारण्य मशोबरा से बाहर निकलते ही सामने है। शिमला पक्षी विहार शहर से बहुत नजदीक है लेकिन शहर के शोरगुल से बहुत दूर भी है। इसकी परिकल्पना एक वन के रूप में की गई थी। सोचा गया था कि यहां पर फूल-पौधे होंगे और शिमला के लिए एक बड़ा जल-स्रोत तैयार हो सकेगा।

यहां आकर मैं प्रकृति की शोभा देखकर मंत्रमुग्ध रह गया। मैंने यहां छिप कर चिड़ियों को देखा, उनकी जादुई आवाज सुनी, छोटे-छोटे लुभावने जीव-जन्तुओं की प्राकृतिक सुन्दरता और हरियाली देखी। सीधे तनकर खड़े देवदार और ओक के वृक्ष देखे, छोटे बच्चों की खिल-खिलाहट सुनी और महसूस किया कि मशोबरा का अपना अलग ही स्वर्ग है। मैंने प्रकृति को उसके भव्यतम रूप में देखा। मैंने यह भी अनुभव किया कि यहां प्रकृति किस तरह से मनुष्य की चिंता करती है, यह वन किस तरह से शिमला और इसकी जनता का पोषण करता है। यह वन बिल्कुल उसी तरह हमारी देखभाल करता है जैसे कोई मां अपनी संतान का भरण-पोषण करती है। प्रकृति हमें प्यार करती है और हम उससे प्यार करते हैं।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी साधारण सी यात्रा में भी कोई बड़ा विचार पनप जाता है। यहां आकर अनेकों विचार मेरे मन में आए। मैंने सोचा कि यह धरती मां कितनी अच्छी तरह से हमारा पोषण करती है। लेकिन हम इसके पोषण के लिए क्या करते हैं? हम इसके लिए क्या कर सकते हैं? अगर हमें यह सुनिश्चित करना है कि यह प्रकृति एक संसाधन के रूप में, स्रोत के रूप में, मित्र के रूप में हमारी आने वाली पीढ़ियों को उपलब्ध रहे, तो इसके लिए हमें क्या करना चाहिए? क्या आने वाली पीढ़ियों के प्रति, अपनी संतति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का एहसास है या नहीं?

आगामी 2 अक्टूबर के दिन हम सब महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती मनाने जा रहे हैं। यह एक राष्ट्रीय पर्व है। 2022 में हमारी आजादी की 75वीं वर्षगांठ भी एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाई जाएगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन महत्वपूर्ण अवसरों पर देश में अनेक सार्थक योजनाएं आरंभ की जाएंगी। 2047 में जब भारत की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे, उस समय का भारत कैसा होगा? जब 2069 में हम गांधीजी की 200 वीं जयंती मना रहे होंगे, उस समय का भारत कैसा होगा?

हमारे पास आज इन प्रश्नों के बहुत स्पष्ट उत्तर नहीं हैं। लेकिन सामाजिक, बौद्धिक, नैतिक और प्रकृति एवं पर्यावरण के क्षेत्रों में जो कुछ भी निवेश आज की पीढ़ी कर रही है, उसी पर हमारे इन सवालों का जवाब निर्भर है। हम लोग ही यह तय करेंगे कि अगले 25 से 50 वर्षों में इस भारत का निर्माण करने वाले लोगों के पास कैसी ताकत होगी, कैसी क्षमता होगी। हम लोग ही यह तय करेंगे कि हजारों हजार वर्षों से जो नदियां, जो पहाड़ और जंगल हमें इस प्रकृति ने अपनी पूरी भव्यता में उपलब्ध कराएं हैं, वही नदियां, वहीं पहाड़ और जंगल क्या हमारी आने वाली पीढ़ियों को इसी भव्य रूप में उपलब्ध रह पाएंगे?

हमने बहुत तरक्की की है। अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। लेकिन अभी बहुत कुछ ऐसा है जो प्राप्त किया जाना बाकी है। जैसे-जैसे कोई समाज विकसित होता है वैसे-वैसे उसके लक्ष्य भी सटीक और संक्षिप्त होते जाते हैं, निश्चित होते जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में यह गौरव का भाव मौजूद है कि यहाँ के स्कूलों में बेटे और बेटियों की शिक्षा के लिए, उनको

स्कूल तक पहुंचाने के संदर्भ में महत्वपूर्ण प्रगति की गयी है। दूसरे राज्य भी हैं जिन्होंने स्कूल में बच्चों के दाखिले के मामले में सराहनीय प्रगति की है। लेकिन हमारा अगला लक्ष्य स्कूलों के नामांकन से आगे शिक्षा में उनकी उपलब्धियों पर होना चाहिए।

हमारे बच्चे कक्षाओं तक पहुंच तो रहे हैं लेकिन वहां जाकर वे कितना कुछ सीख पा रहे हैं? कितना ज्ञान अर्जित कर पा रहे हैं? आने वाले चौथे औद्योगिक युग के लिए हम उन्हें किस प्रकार तैयार कर पा रहे हैं? कितना तैयार कर पा रहे हैं? ये सवाल ऐसे हैं जो हर माँ-बाप को परेशान कर रहे हैं। इसी प्रकार से अगर सोचें तो जिस प्रकार से स्कूलों का प्रसार स्थान-स्थान पर हो गया है, क्या हैल्थकेयर भी इसी प्रकार से आधारभूत सुविधा के रूप में अपनी जनता को उपलब्ध नहीं कराई जानी चाहिए?

ये मुद्दे समाधान चाहते हैं, हर भारतीय के लिए हमें इन मुद्दों से जूझना होगा और ऐसा करते हुए क्षेत्र के आधार पर, धर्म के आधार पर, किसी प्रकार के भेदभाव को पास फटकने नहीं देना है। ये सुविधाएं सब को देनी होंगी चाहे हमारे किसान भाई-बहिन हों या फिर औद्योगिक नगर हों। सब को हैल्थकेयर उपलब्ध करानी होगी।

यहां पर भी प्रकृति हमें एक संदेश देती है। जिस प्राकृतिक क्षेत्र में मैं आज गया था, वहां एक-दूसरे के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाता। यहां पर जल सभी के लिए उपलब्ध है, यहां के पेड़ सभी को छाया देते हैं, यहां की साफ हवा सभी को पोषण देती है, भाईचारा और करुणा तो मानो प्रकृति के स्वभाव में है। जो कुछ भी हम एक समाज के रूप में करते हैं, वह सब करते हुए हमें उसी करुणा को, भाईचारे को, मानवीयता को और परस्पर गरिमा को, सम्मान के भाव को, अपनी आशाओं में और भारत के प्रति अपने सपनों में शामिल करना होगा।

इस सब के मूल में मेल-मिलाप की भावना है, सब को एक सूत्र में पिरोने वाली भावना है। प्रकृति हमें एक-दूसरे पर निर्भरता सिखाती है, मधुमक्खी को पोषण फूल से मिलता है, जल सभी जीवों की प्यास बुझाता है और वृक्ष पक्षियों और जीव-जंतुओं का स्वागत बांह पसार कर करते हैं। मेल-जोल में एकात्मकता में एक प्रकार का संगीत महसूस होता है। ऐसा लगता है कि जैसे कोई ईश्वरीय बंधन है, इन सबके बीच। जीवधारी चाहे छोटा हो या बड़ा, शांत हो या शोर मचाने वाला, सभी को मिल-जुल कर साथ-साथ पुष्पित-पल्लवित होने देती है हमारी प्रकृति। आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करती है। मानव जाति को भी प्रकृति से यह गुण सीखना चाहिए।

भारत को प्रकृति से अनुपम वरदान मिलता है। इसलिए आइए हम सब मिलकर उस एकात्मकता को और हर एक व्यक्ति को अपनी यह आकांक्षा पूरी करने, अपने सपनों और अपने भाग्य के लिखे को पूरा कर पाने में सहायक बनें। इसे हमें एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप देना होगा। भारत का ऋण है हमारे ऊपर। हमें अपने वर्तमान का यह ऋण चुकाना है। आइए धरती मां का, प्रकृति का यह ऋण हम उतारकर जाएं।

(मई 2018 के अन्तिम सप्ताह में शिमला प्रवास के दौरान लिखा गया आलेख)

• 17 दिन बाद थाम लुआंग केव में फंसे बच्चे और उनके कोच सकुशल बाहर आए • कोच ने अपने हिस्

हौसले के दम पर जीती ज़िंदगी की जंग

-रेणु शर्मा

फुटबॉल कोच के साथ थाइलैंड की थाम लुआंग नाम की गुफा में फंसे 11 से 16 साल की उम्र के सभी 12 बच्चों और उनके कोच को 17 दिन बाद 11 जुलाई को बाहर निकाल लिया गया। अंधेरी, पानी से भरी खतरनाक गुफा से सभी का बचना नामुमकिन माना जा रहा था लेकिन विकट परिस्थितियों के बावजूद मिशन इम्पॉसिबल सफल हुआ। अभियान में पहले और दूसरे दिन चार-चार लडकों को बाहर निकाला गया। टकटकी लगाए बैठी पूरी दुनिया की पथराई आंखों में उस वक्त चमक आई जब अंतिम बचे चार बच्चों और उनके कोच को बाहर निकाल लिया गया। 'वाइल्ड बोर्स' नाम की फुटबॉल टीम 23 जून को गुफा में फंस गई थी। भारी बारिश के चलते निकल नहीं पाई। सबसे बड़े ऑपरेशन मिशन को अंजाम तक पहुंचाने में थाइलैंड नेवी सील्स सहित अमेरिका, चीन, जापान, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया के 90 गोताखोरों के साथ कई वॉलेंटियर्स लगे थे। एक हजार से ज्यादा जवान और एक्सपर्ट मदद में जुटे थे। बच्चों को बचाने की मुहिम में शामिल थाईलैंड की नौसेना के पूर्व गोताखोर समन गुनन (38) की 6 जुलाई की मौत हो गई। रेस्क्यू टीम ने जितना अदम्य साहस दिखाया उससे कई गुना ज्यादा बारिश की दुश्वारियों ने उसकी पग-पग पर उसकी परीक्षा ली। बारिश का कहर और रेस्क्यू ऑपरेशन समानांतर चले। न रेस्क्यू टीम ने हार मानी और न ही गुफा के अंदर फंसे बच्चे और उनके कोच ने हिम्मत छोड़ी। विषम परिस्थितियों के बावजूद बच्चों और उनके कोच ने हर चुनौती का मुस्कुरा कर सामना किया। इनकी जिजिविषा के आगे मौत ने भी घुटने टेक दिए। हमारे लिए गर्व की बात है कि मौत के मुंह से सभी को बाहर निकालने के इस भागीरथी प्रयास में पूरी दुनिया के साथ हमारा भी योगदान रहा। पूणे की एक पंप कंपनी ने गुफा में भरे पानी को बाहर निकालने में मदद की। यह एक मानवीय त्रासदी थी जिसका अंत सुखद हुआ। मिशन इम्पॉसिबल ने यह सिद्ध कर दिखाया कि अगर हम ठान लें तो कुछ भी असंभव नहीं है। पानी से भरी गुफा से बच्चों को बाहर निकालने में हमने इंसानी फितरत का एक उजला पक्ष देखा। लेकिन दूसरी तरफ युद्ध, आंतक और अन्य संघर्ष में लिप्त इंसानियत का दूसरा पक्ष हमारे सामने है। बच्चों को बचा लाने के जश्न के साथ हमें यह सोचना भी लाजिमी है कि इस धरती के कुछ अन्य हिस्सों में ऐसे संघर्षों की गुफाओं में न जाने कितने बच्चे बंदूकों की गोलियों तथा बमों के धमाकों के बीच फंसे हुए हैं जिनको बचाने की फ्रिक हमें करनी है। मिशन इम्पॉसिबल ने मानवीय संवेदना की अनूठी मिसाल पेश की। झर्रे-झर्रे को आंनंदित-पुलकित किया है। जो मजा इंसान को बचाने में है वह मारने-काटने और जीवन छिनने में नहीं है।

शरीर की ऊर्जा बचाने के लिए कराया ध्यान

थाम लुआंग गुफा से बाहर आए बच्चों ने बताया कि कोच इकापोल चांटावांग (25) ने हमारी ज़िंदगी बचाने के लिए अपना खाना तक दे दिया। बच्चों के मुताबिक गुफा में फंसने के बाद खाना कम होने के बावजूद कोच ने अपने हिस्से का खाना भी हम सभी में बांट दिया। इकापोल ने बच्चों के शरीर की ऊर्जा बचाने के नए-नए तरीके इजाद किए उनमें ध्यान प्रमुख था। वे बच्चों की हिम्मत को बढ़ाने में हर पल सतर्क रहे। कोच गुफा के अंदर बच्चों को हर परिस्थिति के हिसाब से खुद को ढालना सीखा रहे थे। इकापोल कोच

से का खाना खिलाया • ध्यान करवाया ताकि खाने की कमी के बावजूद बचा जा सके

बनने से पहले बौद्ध भिक्षु रहे हैं। उनकी ध्यान लगाने की कला से ही बच्चे जिंदगी की जंग को जीत पाए। बचपन में अनाथ हो जाने के बाद उन्होंने साधु बनने की दीक्षा ली थी। वे तीन साल पहले तक साधु थे। इस दौरान जब उन्हें पता चला कि उनकी दादी की तबीयत काफी खराब है तो वे मठ छोड़कर गृहस्थ जीवन में लौट आए। इसके बाद 25 साल के इकापोल को मू पा फुटबॉल टीम का सहायक कोच नियुक्त किया गया। बता दें कि बौद्ध धर्म भारत की धरोहर है और यही से थाईलैंड सहित अन्य देशों में गया है। ऐसे में विश्व में भारत की भी तारीफ हुई।

कदम-दर-कदम बढ़ा ऑपरेशन

- **24 जून** : रेस्क्यू उस वक्त शुरू किया गया जब लाओस और म्यामांर की सीमा के पास बसे इलाके में भारी बारिश का कहर था। पुलिस को बच्चों के हाथ-पैरों के निशान गुफा के पास मिले। इसके बाद माना गया कि ये बच्चे गुफा में गए और बारिश के चलते वहां फंस गए। इस बीच बच्चों के परिजन पल-पल अपने बच्चों की वापसी का इंतजार करते रहे।
- **25 जून** : थाई सेना के गोताखोरों ने बच्चों को गुफा में खोजना शुरू किया। ऑक्सीजन टैंक और खाना भी इनके साथ था। आसपास के इलाकों में अस्थायी तौर पर मां-बाप के लिए प्रार्थना करने की जगह बनाई गई। बारिश जारी थी, लगातार डर सता रहा था कि कही बच्चों के साथ कुछ अनहोनी न घट जाए।
- **26 जून** : गोताखोर कई किमी का फासला तय कर गुफा के टी-जंक्शन तक पहुंच गए। लेकिन पानी के भराव के चलते ये आगे नहीं बढ़ पाए और मजबूरन पीछे हटना पड़ा। देश के प्रधानमंत्री प्रयुत चन ओचा ने देश भर से इस बचाव अभियान में सहयोग का आह्वान किया।
- **27 जून** : अमेरिकी सेना के 30 अधिकारी पहुंचे, इनमें कुछ बचाव कार्यों के खासे जानकार थे। इन्होंने तीन ब्रिटिश गोताखोरों के साथ गुफा में प्रवेश किया लेकिन उन्हें जल्द ही पानी के भराव के चलते वापस आना पड़ा। परिस्थितियां बेहद ही विकट हो रही थीं। लगातार हो रही बारिश पूरी प्रक्रिया को बाधित कर रही थी।
- **28 जून** : खोज अभियान अस्थायी रूप से रोका गया क्योंकि बाढ़ के चलते पानी काफी भर गया था। कई पंप लगाकर पानी को बाहर निकालने का काम शुरू हुआ। अमेरिकी विशेषज्ञ गुफा के पास लगातार काम कर रहे थे, तो ब्रिटिश गोताखोर पहाड़ों के बीच किसी अन्य रास्ते की तलाश में थे। गुफा के अंदर पानी कॉफी के रंग जैसा था। नए रास्तों के लिए ड्रोन की मदद ली गई।
- **29 जून** : छह दिन बाद बचाव दल ने गुफा में दाखिल होने के लिए एक नया रास्ता खोज लिया। लेकिन अब तक यह पक्का नहीं था कि यह रास्ता मुख्य गुफा के रास्ते से जुड़ता है या नहीं। प्रधानमंत्री ने इस क्षेत्र का दौरा किया। बच्चों के परिवारों से मुलाकात कर उन्हें भरोसा दिलाया। तनाव कम करने के लिए थोड़ी हंसी-मजाक की।
- **30 जून** : मौसम बेहतर हुआ तो एक बार फिर खोज अभियान शुरू हुआ लेकिन अब भी काम आसान नहीं था। बचाव दल हर तरफ किसी न किसी अन्य रास्ते की तलाश कर रहे थे। बाहर बचाव दल यह भी अभ्यास कर रहे थे कि अगर बच्चे मिल जाते हैं तो उन्हें सुरक्षित कैसे बाहर निकाला जाएगा।

■ **1 जुलाई** : मौसम खुलने का फायदा उठाकर गोताखोर गुफा में पहुंचे। बचाव दल ने इस बार गुफा में एक ऑपरेटिंग बेस स्थापित किया, जहां सैकड़ों ऑक्सीजन टैंक और अन्य सामान ले जाया गया। इस तैयारी से साफ था कि गोताखोर लंबे समय तक बेस में रह सकते हैं।

■ **2 जुलाई** : इंतजार लंबा हो रहा था इसलिए बच्चों के जिंदा मिलने की उम्मीदें कुछ हद तक टूटने भी लगी थी। लेकिन 2 जुलाई को खबर मिली की सभी 12 बच्चे अपने कोच के साथ जिंदा और ठीक हैं। गोताखोरों ने बच्चों से मुलाकात की, बातचीत की और उन्हें फर्स्ट एड दिया। लेकिन अब बचाव दल के सामने आई उन्हें सुरक्षित बाहर निकालने की चुनौती।

■ **3 जुलाई** : थाईलैंड के गृहमंत्री अनुपोंग पाओजिंदा ने कहा कि गुफा से बच्चों को बाहर निकलने में समय लग सकता है। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि इन बच्चों को गोताखोरी सीखनी पड़े। उन्होंने बताया कि बच्चों को उसी जटिल मार्ग से बाहर लाया जाएगा, जहां से बचाव दल ने अंदर प्रवेश किया था।

■ **4 जुलाई** : एक नया वीडियो जारी किया गया, जिसमें बच्चे अपना परिचय देते नजर आ रहे थे। उनका स्वास्थ्य ठीक रहे, इस पर खासा जोर दिया गया। सरकार ने कहा कि बच्चों को तैराकी और गोताखारी सिखाई जाएगी ताकि वे डरे नहीं और निकल सकें। बचाव दल मान रहा था कि जिन बच्चों को तैराकी आती है लेकिन उन्हें इतने संकरे रास्ते से लाने में बहुत जोखिम है।

■ **5 जुलाई** : मौसम खुलने का फायदा उठाकर बचाव दल ने अब तक करीब 12.8 करोड़ लीटर पानी गुफा से बाहर निकाल लिया। हर घंटे पानी का स्तर 1.5 सेमी कम हो रहा था। बचाव दल अब 1.5 किमी के रास्ते पर काम कर पा रहे थे।

■ **6 जुलाई** : बच्चों को निकालने की जुगत में जुटी टीम में शामिल 37 वर्षीय गोताखोर समर्न पूनान की मौत हो गई। वे थाईलैंड नौसेना के पूर्व सदस्य थे। पूनान को गुफा के अंदर ऑक्सीजन सिलेंडर पहुंचाने की जिम्मेदारी दी गई थी। अधिकारियों के मुताबिक जब वे बच्चों को जरूरी मात्रा में ऑक्सीजन मुहैया कराने के बाद गुफा से बाहर आ रहे थे, तब उनके सिलेंडर में ऑक्सीजन खत्म हो गई। कुछ देर बाद दम घुटने से मौत हो गई।

■ **7 जुलाई** : बचाव ऑपरेशन प्रमुख नारोंगसाक ओसोटानकोर्न ने कहा कि फिलहाल बच्चों को डाइव कर बाहर लाने का उपयुक्त समय नहीं है। इस बीच एक संदेश गुफा में फंसी टीम के कोच की तरफ से भी आया, जिसमें उसने बच्चों के मां-बाप से माफी मांगी। मिशन प्रमुख ने बताया कि बच्चों तक पहुंचने के लिए इस गुफा में 100 से भी अधिक सुराख खोदने का काम चला।

■ **8 जुलाई** : तमाम अटकलों और मंथन के बाद दिन में गोताखोरों की टीम ने बच्चों को बाहर लाने के लिए एक मिशन रवाना किया। बारिश कम होने का फायदा उठाते हुए एक्सपर्ट गोताखोरों का यह मिशन गुफा में गया और घंटों की मशक्कत के बाद चार बच्चों को बाहर लाया गया। इस सफलता के बाद 10 घंटे का समय लिया ताकि एयर टैंकों को भरा जा सके और स्थिति का मुआयना किया जा सके।

■ **9 जुलाई** : एक बार फिर बचाव अभियान शुरू किया। बाकी के बच्चों को बाहर निकालने के लिए गोताखोरों की टीम रवाना हुई। कई घंटों बाद बचाव दल को चार और बच्चों को बाहर निकालने में सफलता मिली। अब बस चार बच्चे और एक कोच गुफा में फंसे रहे। सोशल मीडिया समेत हर जगह बच्चों की कुशलता की प्रार्थना हो रही थी।

■ **10 जुलाई** : 8 बच्चों को सकुशल बाहर लाने के बाद तीसरे दौर के लिए बचाव दल रवाना। 19 गोताखोरों की टीम ने यह मिशन 9 घंटे चलाया। रातभर हुई बारिश के बीच स्थितियां भी विकट बनी हुई थी। टेस्ला प्रमुख इलॉन मस्क ने की छोटी पनडुब्बी की पेशकश की।

■ **11 जुलाई** : काफी मशक्कत के बाद रेस्क्यू टीम को सफलता मिली।

भारत को दिया धन्यवाद

गुफा में 18 दिन फंसे रहे 12 बच्चों और कोच को सुरक्षित बाहर निकालने में कई देशों के गोताखोर और एक्सपर्ट लगे। बच्चों को बाहर निकालने के बाद पूरी दुनिया में जश्न का माहौल रहा। भारत के लिए खुशी की वजह थी पुणे की कंपनी का अभियान में शामिल होगा। थाइलैंड में भारतीय दूतावास के सुझाव के बाद किर्लोस्कर ब्रदर्स ने सात सदस्यीय टीम को रवाना किया। इनमें महाराष्ट्र के सांगली के प्रसाद कुलकर्णी और पुणे के श्याम शुक्ल भी शामिल रहे। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को लिखे पत्र में थाइलैंड के विदेश मंत्री डॉ. प्रमुदविनाई ने कहा कि मुसीबत के समय में वहां के लोगों और निजी क्षेत्र में जिस तरह से सहयोग किया है, वह दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को प्रदर्शित करता है। पत्र में गुफा से निकले बच्चों और कोच एवं उनके परिवार सहित थाई सरकार और वहां के नागरिकों की ओर से भारत सरकार को धन्यवाद दिया गया। साथ ही सहयोग के लिए तारीफ की।

ये रेस्क्यू ऑपरेशन भी बने मिसाल

केंचुकी गुफा, अमेरिका, 1983

अप्रैल में आठ अनुभवहीन गोताखोर केचुकी की गुफा में घूमने गए। वहां भारी बारिश और तूफान के बाद पानी भरने से उनका रास्ता बंद हो गया। कई घंटों बाद सभी को बचा लिया गया।

लेकुगिला गुफा, 1991

अप्रैल में अमेरिका के न्यूयॉर्क की रहने वाली 40 वर्षीय एमिली डेविस कैलीफोर्निया के कार्ल्सबाड कैवर्न्स नेशनल पार्क की लेकुगिला गुफा में फंस गई। 91 घंटे बाद उन्हें बचा लिया गया।

भूमिगत झील, वेनेजुएला, 1992

गोताखोर गुस्ताव बाडिलो अपने दोस्त के साथ वनेजुएला के समुद्र में तैरते हुए भूमिगत झील में फंस गए। उन्होंने अगले पल आत्महत्या का मन बना लिया था तभी गोताखोरों ने उन्हें बचा लिया।

केटजालन गुफा, मेक्सिको, 2004

छह ब्रिटिश नागरिक एक गुफा में फंसे। वे 36 घंटे में बाहर निकलने की योजना में थे लेकिन बाढ़ के पानी का स्तर बढ्ने से वे वहां फंसे रहे। उनमें हफ्ते भर बाद सकुशल बाहर निकाला गया।

रीसेडिंग गुफा, जर्मनी, 2014

जून में जर्मनी के जोहान वेस्टहॉसर का सिर गुफा के एक पत्थर में फंस गया। वह खुद से बाहर आने में सक्षम नहीं थे, लिहाजा उन्हें 11 दिन चले ऑपरेशन के बाद बचाया गया।

कोपियायो खदान मामला, चिली 2010

चिली के अटकामा डेजर्ट के तांबे व सोने की खान में 700 मीटर गहराई में 33 मजदूर फंस गए। ये लोग पांच किमी अंदर थे। नासा सहित दुनियाभर की टीमों की सहायता से वे बचाए गए।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
AADHAR PRODUCTS
डिसाइड®
डिसाइड
वाशिंग पाउडर
डिसाइड
गोल्ड डिटर्जेंट पाउडर
Decide
एडवाइज़
वाशिंग पाउडर
Decide
डिसाइड
आयोडाइज्ड नमक
डिसाइड
बर्तन बार
एडवाइज़
डिसाइड
डिसाइड
Rose beauty soap
RICH ROSE AROMA
डिसाइड
Lime beauty soap
FOR LUMINOUS FRESHNESS with natural fragrance
डिसाइड
MILK & ALMOND beauty soap
FOR SMOOTH & SOFT SKIN with natural fragrance
हमारे अन्य उत्पाद
डिसाइड वाशिंग पाउडर
डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
एडवाइस वाशिंग पाउडर
एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
डिसाइड डिशवाश बार
डिसाइड डिशवाश टब
डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
डिसाइड नमक
डिसाइड बाथ सोप
AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India
FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com
www.aadharproducts.in

प्रत्यूष
स्वतंत्रता संग्राम

जिनसे थर्राई अंग्रेज हुकूमत

– आरती शर्मा

1857 की क्रांति में यूं तो बहुत से लोगों ने बढ़-चढ़ कर योगदान दिया था। लेकिन इस क्रांति में कुछ ऐसी वीरांगनाएं भी थीं जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए देश की आजादी में भरपूर सहयोग दिया। बहुत कम लोग जानते हैं इनके बारे में। देश के 72वें स्वाधीनता दिवस पर रूबरू होइए ऐसी ही चंद वीरांगनाओं की शहादत उनके हौसले से।

महारानी तपस्विनी : गोला बारूद की फैक्ट्री खोली

तपस्विनी महारानी लक्ष्मीबाई की भतीजी थी। इन्होंने 1857 ई. के विद्रोह में अंग्रेजों के साथ कड़ा संघर्ष किया। स्वतंत्रता संग्राम के असफल रहने के बाद महाराष्ट्र और बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रोत्साहन देने लगीं। नेपाल के प्रधान सेनापति चंद्र शमशेर जंग की मदद से उन्होंने गोला-बारूद बनाने की फैक्ट्री खोली। लेकिन अंग्रेजों को इसकी भनक पड़ गई और वे उनसे बचने के लिए कलकत्ता आ गईं। कलकत्ता में उन्होंने महाकाली पाठशाला खोली। इसमें क्रांतिकारियों को राष्ट्रीयता की शिक्षा दी जाती थी। उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों को हमेशा जारी रखा। सन् 1907 में उनकी मृत्यु हो गई।

मैना : 'मेरी मृत्यु ब्रिटिश शासन के पतन का कारण बनेगी'

नाना साहब की पुत्री मैना ने देश की अस्मिता के खातिर मौत को गले लगा लिया। अंग्रेज नाना साहब को किसी भी कीमत पर गिरफ्तार करना चाहते थे इसलिए उन्होंने बिठुर छोड़ने का फैसला कर लिया। वे मैना को अपने साथ नहीं ले गए। नाना साहब के चले जाने के बाद अंग्रेज सेनापति हे ने बिठूर के राजमहल पर छापा मारा लेकिन मैना उनके हाथ नहीं लगी। जब सेनापति ने महल गिराने का हुक्म दिया तो मैना ने सामने आकर महल न गिराने का अनुरोध किया। सेनापति हे मैना को जानता था क्योंकि उसने सेनापति की बेटी की मृत्यु के समय दो दिन तक खाना नहीं खाया। लेकिन सेनापति जनरल आउटरम ने महल को ध्वस्त करवा दिया। आउटरम ने समझा मैना मर गई। लेकिन रात को जब वह तलघर से निकली तब अंग्रेज प्रहरियों ने उसे देख लिया और गिरफ्तार कर लिया। सेनापति आउटरम ने उससे क्रांतिकारियों के पते-ठिकाने बताने के लिए पुरस्कार देने का वादा किया लेकिन मैना ने कहा 'मेरी मृत्यु ब्रिटिश शासन के पतन का कारण बनेगी।' आउटरम ने उसे पेड़ से बांधकर जला देने का हुक्म दिया। वह डरी नहीं और मौत को गले लगा लिया।

नर्तकी अजीजन : माफी की जगह गोली मांगी

कानपुर निवासी नर्तकी अजीजन का जन्म लखनऊ में हुआ था। बाद में कानपुर में वह तवायफ उमराव जान अदा के साथ नाचने का काम करने लगी। वहां उसकी मुलाकात क्रांतिकारियों और नाना साहब से हुई। अजीजन भारतीय सिपाहियों को दूध, भोजन, औषधियां, रसद और हथियार पहुंचाती थी। एक दिन उसे गिरफ्तार कर लिया गया। कमांडर हेनरी हेवलॉक ने उससे क्रांतिकारी अजीमुल्ला खां का पता बताने पर माफी देने की शर्त रखी लेकिन उसने मना कर दिया और अंग्रेजों की गोली खाकर शहीद हो गई।

झलकारी बाई : बरसाती रही अंग्रेजों पर गोलियां

महारानी लक्ष्मीबाई की सहायिका झलकारी बाई का जन्म 22 नवम्बर, 1830 को हुआ था। उनकी शादी महारानी लक्ष्मीबाई के तोपची पूरन सिंह के साथ होने के कारण वह महारानी की महिला-फौज में भर्ती हो गई। जब झांसी के किले को अंग्रेजों ने घेर लिया तो उसने महारानी को किला छोड़कर जाने की सलाह दी। महारानी किले से निकल गई और झलकारी अंग्रेजों से युद्ध करने लगी। झलकारी गिरफ्तार कर ली गई। जनरल ह्यूरोज ने उसे डराने की कोशिश की लेकिन वो किंचित भी भयभीत नहीं हुई। उसे कैद कर लिया गया। लेकिन वो वहां से किसी तरह भाग निकली और किले में पहुंच गई। वहां जनरल ह्यूरोज ने उसे गोलियां चलाते देख लिया। उन्होंने गोलीबारी की तो एक गोला उनके पति पूरन सिंह को लगा और वह गिर पड़ा। इसके बाद तोप-संचालन का मोर्चा झलकारी ने संभाला पर उसे भी एक गोला लगा और वह शहीद हो गई।

इन्हें शत्-शत् नमन

– कल्पना सोलंकी

'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।' यह गीत सिर्फ उन्हीं क्रांतिकारियों पर चरितार्थ नहीं होता जिन्हें हम जानते हैं। बल्कि यह नारा उन महिलाओं के जीवन की सच्चाई भी है जिन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों के बावजूद अपने कदम पीछे नहीं हटने दिए। ऐसी ही महिलाएं हैं जिन्होंने नींव का पत्थर बनकर देश की आजादी के लिए काम किया।

प्रकाशवती पाल : क्रांतिकारी संगठन की बागडोर संभाली

क्रांतिकारी नेता यशपाल की पत्नी प्रकाशवती पाल और उनकी कुछ सहेलियां क्रांतिकारी दल में शामिल हो गईं। वहां उनसे गोपनीय पर्चे बांटने का काम लिया जाने लगा। फिर उन्हें बम बनाना भी सिखाया गया। जैसे-तैसे बचते-बचाते प्रकाशवती कानपुर में चंद्रशेखर आजाद के पास पहुंची। आजाद ने उन्हें निशाना लगाना सिखाया। वहीं रहकर प्रकाशवती ने खुद को अंग्रेजों का मुकाबला करने के लिए शारीरिक व मानसिक तौर पर तैयार किया। 27 फरवरी 1931 में आजाद शहीद हो गए और यशपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। इस समय प्रकाशवती ने क्राति संगठन की बागडोर संभाली।

वीणादास : गवर्नर को बनाया निशाना

गवर्नर स्टेनली पर गोली चलाने वाली वीणा दास का नाम क्रांतिकारियों की अग्रिम पंक्ति में लिया जाता है। इन्होंने 1928 में स्वतंत्रता संग्राम में कदम रखा। वे अंग्रेजों के अत्याचारों से तिलमिला उठी। उन्होंने उनके अत्याचारों का बदला लेने का फैसला कर लिया था। क्रांतिकारी दल की सदस्या होने के कारण वीणा दास ने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और जेल भी गईं। 6 फरवरी 1932 को विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह था। जैसे ही गवर्नर स्टेनली जैक्सन दीक्षांत भाषण देने के लिए उठे, वीणा ने पांच गोलियां चला दीं। बतौर सजा उन्हें तेरह वर्षों का कठोर कारावास दिया गया।

सुशीला मोहन : भगतसिंह को सहयोग

राष्ट्रीय कविताएं लिखने का दीदी सुशीला मोहन को बेहद शौक था। राष्ट्रभक्त होने के कारण उन्होंने क्रांतिकारियों के साथ काम करने का फैसला किया। इन्होंने गोपनीय पर्चे बांटने की ऐसी योजना बनाई जिससे जालंधर में हडकंप मच गया। साइमन कमीशन के विरोध में निकले जुलूस में उन्होंने तिरंगा झंडा लिए नेतृत्व किया। इसके बाद वे लाहौर पहुंच गईं और भगतसिंह के काम में सहयोग करने लगीं। वे जेल में खाने-पीने की सामग्री पहुंचाने और मुकदमों के खर्च का प्रबंध भी करती थीं। इन्होंने अपनी दस तोले की सोने की चूड़ियां क्रांतिकारी योगेशचन्द्र चटर्जी को जेल से छुड़ाने के लिए दी थीं। साथ ही इन्होंने सिख लड़के का वेश बनाकर बम भी बनाना सीखा। चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के शहीद हो जाने के बाद ये राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुईं और महिला स्वयं-सेविकाओं का जत्था बनाया। अपनी एक सहेली के कारण वे वकील श्याममोहन के घर गिरफ्तार कर ली गईं। एक महीने की कैद के बाद वे दिल्ली चली गईं। लेकिन आजादी के हर आंदोलन में भाग लेने का उनका हौसला कम नहीं हुआ।

प्रत्यूष
नजरिया

आज भी महत्वपूर्ण हैं 'भारत छोड़ो' के वे मूल्य

अगस्त क्रांति को देख अंग्रेज समझ गए कि उनके दिन अब लद गए, इसलिए उन्होंने बंटवारे की चाल चली।

- राजेन्द्र चौधरी

आज एक तरफ लोकतंत्र है, तो दूसरी तरफ अपने को सर्वोपरि दिखाने की सत्ता-लिप्सा। ऐसे में तय करना है कि हम किधर जाएं? भारत की आजादी और अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के लिए पहली जनक्रांति 1857 में हुई थी। 1885 में कांग्रेस की स्थापना के वर्षों बाद उसमें लोकमान्य तिलक का प्रवेश हुआ। इस बीच देश में जनअसंतोष आकार लेने लगा था। गांधीजी के असहयोग आंदोलन और सत्याग्रह ने लाखों लोगों को आकर्षित किया। वह पहले ऐसे नेता थे, जिनकी भारत के किसानों, गरीबों, वंचितों सहित समाज के हर वर्ग में पैठ बनी। अपने लंबे राजनीतिक संघर्ष से गांधीजी जनता के उत्साह, विशेषकर नौजवानों को आजादी के अंतिम संघर्ष के लिए तैयार करने में सफल हुए।

भारत छोड़ो आन्दोलन स्वतंत्रता संग्राम की निर्णायक लड़ाई थी। क्रिप्स मिशन की विफलता से भारत में क्षोभ था। दूसरे महायुद्ध में जापान प्रारंभिक तौर पर अंग्रेजों पर भारी पड़ रहा था। गांधीजी ने 5 जुलाई, 1942 को 'हरिजन' पत्र में लिखा 'अंग्रेजों भारत को जापान के लिए मत छोड़ो, बल्कि भारतीय के लिए भारत को व्यवस्थित रूप से छोड़ जाओ।'

जुलाई 1942 में बंबई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में निर्णय हुआ कि भारत अपनी सुरक्षा खुद करेगा। अंग्रेज भारत छोड़ें, अन्यथा उनके खिलाफ सिविल नाफरमानी आंदोलन किया जाएगा। बंबई के ऐतिहासिक ग्वालिया टैंक में कांग्रेस के अधिवेशन में गांधी जी का ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव 8 अगस्त 1942 को मंजूर हुआ। इसी प्रस्ताव पर अपने भाषण में गांधीजी ने 'करो या मरो' का मंत्र दिया। 9 अगस्त 1942 की तड़के ही धरपकड़ शुरू हुई और कांग्रेस के सभी बड़े नेता गिरफ्तार हो गए। देश में भूचाल सा आ गया। जिसको जैसे सूझा उसने अपने ढंग से अंग्रेजी राज की मुखालफत शुरू कर दी। उत्तरप्रदेश के बलिया व बस्ती में तो अस्थायी सरकारें तक स्थापित हो गई। कांग्रेस के बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बाद सामाजिक विचारधारा वाले जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अरुणा आसफ अली आदि ने आंदोलन की कमान संभाली। देश में एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन की शुरुआत हो चुकी थी। अंग्रेज समझ गए थे कि उनके भारत छोड़ने में अब और देरी नहीं है। इसलिए जाते-जाते उन्होंने भारत विभाजन का षडयंत्र रच दिया।

आजादी के बाद जिनके हाथ देश का नेतृत्व आया, उन्होंने उन मूल्यों व आदर्शों को ही परे रख दिया, जिनके आधार पर गांधीजी ने नए भारत का सपना देखा था। देश में गरीबी, बीमारी, भूख, अशिक्षा की लड़ाई मंद पड़ गई। गैर बराबरी का दैत्य भारी पड़ने लगा। जाति-संप्रदाय की राजनीति ने समाज को बांटने और सद्भाव की भावना को धूमिल कर दिया। आजादी के साथ ही समाजवादी विचारधारा वाले जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया और आचार्य नरेन्द्र देव सरीखे नेतृत्वकारी प्रबुद्ध युवा, जो विचारधारा के आधार पर राजनीति चलाने का मन बना चुके थे, आगे आए और आंदोलन की कमान संभाली। गांधीजी की अगुवाई में स्वतंत्रता आंदोलन में कई मूल्य एवं आदर्श स्थापित हुए थे। वे सिद्धांतहीन राजनीति को सामाजिक पाप मानते थे। उनका मानना था कि राजनीति सेवा का माध्यम है। वे साध्य और साधन की पवित्रता पर बल देते थे। नैतिक मूल्यों के प्रति उनका आग्रह था। वे मानते थे कि किसी भी कार्य-योजना के केन्द्र में समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को रखा जाना चाहिए। भारत के संविधान में 'एक व्यक्ति एक वोट' के माध्यम से व्यक्ति की गरिमा को जाति-धर्म के भेदभाव से ऊपर उठकर सम्मान दिया गया। आज दो तरह की विचारधाराओं में टकराव है। एक तरफ लोकतंत्र है, तो दूसरी तरफ अपने को सर्वोपरि दिखाने की सत्ता-लिप्सा। ऐसे में तय करना है कि हमें किधर जाना है? मूल अधिकार उस समाज और व्यक्ति द्वारा प्रयोग किए जा सकते हैं, जो कानून के प्रति आदर रखते हैं, जो जिम्मेदारी तथा नियंत्रण के सम्यक व्यवहार के लिए तैयार हों। लेकिन जब कोई एक समूह या दल राज्य को कैद करने के उद्देश्य से संगठित होता है या उसे अपना लक्ष्य बना लेता है, तो किसी समाज के लिए इनका सामना करना बिना किसी अहिंसक प्रतिरोध के संभव नहीं हो सकता है। हम लोकतंत्र की परिधि में रहकर ही संविधान के मूल उद्देश्यों को बचा सकते है।

(लेखक उत्तरप्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके हैं, ये उनके अपने विचार हैं)

दैनिक 'हिन्दुस्तान' से साभार

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबु जो आपके जीवन में लायें खुशहाली
250 Products Available
चेतक घोड़ा
CHETAK HORSE
ISO 9001:2008 CERTIFIED
Archana®
Agarbatti
Registered Office :
ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES
EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI
N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899
Mob. : +91-77268 51913
E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

संवेदनाओं को सहेजती कविताएं

प्रमिला 'शरद' व्यास का सद्य प्रकाशित काव्य संग्रह 'कस्तूरी गंध' पढ़ना न केवल एक सुखद अहसास है, बल्कि पाठक को उन मानवीय मूल्यों की गंध से अनुप्राणित होने का अवसर देता है, जो सामाजिक परिवेश से निरन्तर दूर होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप हमारे आस-पास अजीब सी शून्यता पसर रही है। प्रमिला की कविताओं में जीवन बोलता है और अनुभवों को सिलसिलेवार बयां भी करता है। ***निरंतर भागमभाग/न कोई विराम/न कोई अंतराल/कैसी ये दौड़/मची है होड़/कहां है***

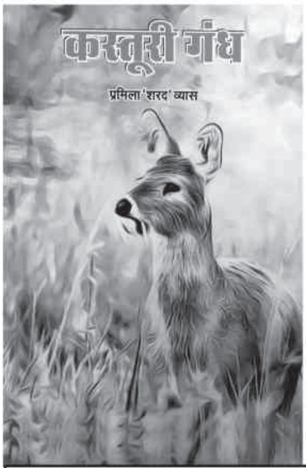

पृष्ट संख्या	-	**88**
मूल्य	-	**150 रुपए**
प्रकाशक	-	**बोधि प्रकाशन, जयपुर**

पहुंचना/जानता नहीं कोई/अल सुबह से/देर रात तक/जाग ही जाग/भाग ही भाग। प्रमिला का नया काव्य संग्रह 46 कविताओं का गुच्छा हैं, गुच्छे में मौजूद हरेक कविता अपने में अलग महक, रंग और अहसास की गर्माहट समेटे हुए है।

आज का मानव/रच रहा है/नए जीवन मूल्य/नई धारा/नये विधि-विधान/जो सुविधाजन्य हों/स्वहित से पूर्ण हों/..... छौना फिरता है/जंगल-जंगल/ हवा देता है/राख ढके शोले को/जिसके अन्तस में छिपा है/मानव का मूल/मानवीय संवेदना के जितने भी रूप हो सकते हैं। वे संग्रह की कविताओं में परिलक्षित होते हैं। कवयित्री का आत्मसंघर्ष और आत्मावलोकन ही स्त्री-विमर्श के रूप में कस्तूरी गंध का केन्द्र बिन्दु है। मनुष्यता को सहेजने वाली उदात्त रचनाएं, सहज ही दिल और आत्मा की गहराइयों में उतरती चली जाती हैं।

बेटियों की उपेक्षा और प्रताड़नाओं के मौजूदा संवेदनहीन दौर से कवयित्री दुखी हैं, वे कहती हैं - ***जननी-जनक को जान से/ज्यादा लगे प्यारी/हर जर्रे पर जुगनू सी/चमकती लगे न्यारी/पर उम्र के हर मोड़ पर/दरकती सी बेटियां/लरजती सी बेटियां/***घनी संवेदना, सुन्दर भावों, अनुभवों और शब्दों का इन्द्रधनुष है, 'कस्तूरी गंध'। प्रस्तुति, अभिव्यक्ति और कौशल का अनुपम संगम है, 'कस्तूरी गंध'। बधाई !

- विष्णु शर्मा हितैषी

Happy Independence Day

Laxmi Narayan Bhadada
Mob:- 9414202497

HP

BHADADA FILLING STATION

H.P.C.L. DEALER

Outside Savina Kheda,
Banswara Road,
Udaipur (Raj.) 313001
Phone :- (0294) 6450174, 2583802

शिवमय हो जाता है वैद्यनाथ धाम

सावन आते ही पूरा जगत शिवमय हो जाता है और द्वादश ज्योतिर्लिंग मंदिरों में शिव भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। सामर्थ्य के अनुसार भक्तजन भगवान को सब कुछ अर्पण कर देना चाहते हैं, क्योंकि शिव ही तो अध्यात्म के मूलाधार हैं। शिव का अर्थ है मंगल और कल्याण। शिव विश्राम के विग्रह हैं, जिनकी शरण में अनेक पाप-ताप एवं मानसिक तनाव से उद्विग्न खिन्न प्राणी शांति और विश्राम को पाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में लगता है सुप्रसिद्ध वैद्यनाथ धाम का श्रावण मेला।

श्रावण माह के शुभारंभ के साथ ही वैद्यनाथ धाम में कांवरियों का तांता लग जाता है जो माह के अन्त तक रहता है। वैद्यनाथ धाम स्थित रावणेश्वर महादेव मन्दिर द्वादश ज्योतिर्लिंग में सर्वाधिक महिमामंडित है। इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि मात्र श्रावण माह में यहां तीस-चालीस लाख तीर्थयात्रियों का शुभआगमन होता है जबकि पूरे वर्ष में पहुंचने वाले भक्तों की संख्या तो लगभग एक करोड़ से अधिक ही होती है। सुल्तानगंज(बिहार) से जल भरकर वैद्यनाथ धाम(झारखंड) तक की लगभग एक सौ दस किलोमीटर की पहाड़ी, पथरीली भूमि भगवावस्त्र धारी नर-नारी व बच्चों की टोलियों से सराबोर हो जाती है। पतित पावनी गंगा के जल को लेकर सुल्तानगंज से जब भक्तों की टोली बम-बम का नारा लगाते हुए आगे बढ़ती है तो सम्पूर्ण वातावरण शिवमय हो उठता है।

अजगैबीनाथ मंदिर

श्रावण में सुल्तानगंज के अजगैबीनाथ मंदिर का भी महत्व बढ़ जाता है। जो सुल्तानगंज में गंगा के बीचों-बीच एक पहाड़ी टीले पर स्थित है। पास ही जुहनु ऋषि का आश्रम है। अजगैबीनाथ मंदिर में अजगैबी शिव की पूजा होती है यानी वह शिव जो छिपे हुए हैं। कहा जाता है कि लगभग पांच सौ वर्ष पहले महानसाधक योगी हरनाथ भारती ने इस शिवलिंग की स्थापना की थी। इस स्थान पर नाव से जाया जाता है।

रावणेश्वर वैद्यनाथ ज्योर्तिलिंग

भारत में तीर्थों की पुनीत परम्परा है। उसी तीर्थ परम्परा से जुड़ा हुआ है देवघर का रावणेश्वर वैद्यनाथ धाम मंदिर। इस मंदिर की चर्चा अग्निपुराण में है। कहा जाता है कि सती का हृदय प्रदेश श्रीविष्णु के सुदर्शन चक्र से कटकर वहीं गिरा था। शिव पुराण में भी वैद्यनाथ धाम की चर्चा है। शिवपुराण में इस भूमि को चिता भूमि कहा गया है। श्री हरि के चक्र से कटकर जब सती का हृदयप्रदेश यहां गिरा था तो भगवान शिव ने यहीं उनका दाह संस्कार किया। मान्यता है कि वैद्यनाथ धाम की भूमि के अन्दर आज भी जगह-जगह पर राख मिलती है।

आस्था की जड़ें

वैद्यनाथ धाम को लेकर अनेक कथाएं प्रचलित हैं। इस धाम से जुड़ी कथाओं के प्रति आस्था की जड़ें गहरे तक फैली हैं। कहा जाता है कि लंकेश्वर रावण शिव रूपी कामना लिंग को अपने साथ लंका ले जा रहा था। शिव ने लंकेश्वर के साथ यह शर्त रखी कि बीच में जहां कहीं भी इस लिंग को रख दिया जाएगा, वह वहीं स्थापित हो जाएगा। जहां पर अभी शिवलिंग विद्यमान है, उस स्थान तक आते हुए रावण को लघुशंका लगी। वह शिवलिंग धारण किये था तो लघुशंका कैसे करता ? पास ही एक चरवाहा खड़ा था जिसका नाम वैद्यनाथ था। रावण कामना लिंग उस चरवाहा को थमाकर लघुशंका हेतु चला गया। थोड़ी देर बाद जब रावण निवृत्त होकर आया तो उसने देखा कि चरवाहा वैद्यनाथ गायब है और शिवलिंग वहीं जमीन पर हैं। शर्त के अनुसार रावण अब उस लिंग को नहीं ले जा सकता था। उसने क्रोध में आकर लिंग के ऊपरी भाग पर मुक्के का प्रहार कर दिया। आज भी कामना लिंग रावणेश्वर का ऊपरी भाग चपटा है। जनश्रुति है कि रावण प्रति दिन लंका से यहां पूजा के लिए आया करता था।

शिवगंगा सरोवर

इस स्थान पर शिवगंगा नामक एक सरोवर है। वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के पूजन के पूर्व भक्त इसमें स्नान करते हैं। शिवगंगा के संबंध में दो दंतकथाएं प्रचलित हैं – पहली कथा के अनुसार रावण ने जब ज्योतिर्लिंग विग्रह को लघुशंका के कारण चरवाहा वैद्यनाथ के हाथों सौंप दिया, उसके बाद रावण को लघुशंका के लिए जल की आवश्यकता हुई। जल की पूर्ति के लिए रावण ने शिवगंगा को पदाघात(लात के प्रहार) से उत्पन्न किया। दूसरी कथा के अनुसार प्राचीन काल में

अश्विनी कुमारों को उदर रोग हो गया था। उस समय उन्हें ब्रह्मा जी का आदेश हुआ कि हर तीर्थ(वैद्यनाथ धाम) में एक कुंड खोदकर उसका जल पीने से उदर रोग ठीक हो जाएगा। पद्मपुराण एवं शिवपुराण के उत्तराखंड में रावण से संबंधित तथा ब्रह्मधर्म पुराण एवं भविष्य पुराण में अश्विनी कुमारों से संबंधित कथा की चर्चा है। वैद्यनाथ धाम मंदिर को लेकर भी कई बातें प्रचलित हैं। किवदन्ती है कि इसका निर्माण देव शिल्पी विश्वकर्मा ने स्वयं किया था। कहा जाता है कि वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण एक ही शिलाखण्ड से है। शिवलिंग पर आज भी रात में मंदिर के ऊपरी भाग से कोई तरल पदार्थ स्वत: ही टपकता रहता है।

– आनंद कुमार अनंत

भक्ति गीत

तुम्हें ढूंढते हैं दर-दर

आंखों में आंसू भर-भर
अब तो दरस दिखा दे
नहीं कोई तेरे सिवाए
- हरि ऊँ नमः शिवाय
पर्वत से तू है आया
हर दिल में समाया
मांगा था जितना तुझसे
मिला उससे भी सिवाय
- हरि ऊँ नमः शिवाय
तेरी छटा निराली
तन मन को लुभाने वाली
बीमार हूं में तेरा
दर्शन ही अब दवाएं
- हरि ऊँ नमः शिवाय
गंगा हे तेरे सर पर
सांपों के तेरे जेवर
सृष्टि का तू रचयिता
तुझे शीश हम नवाएं
- हरि ऊँ नमः शिवाय

- मोहम्मद शरीफ छीपा

राहुल की नयी टीम

कांग्रेस कार्यसमिति का पुनर्गठन

दिग्विजय, द्विवेदी, जोशी और शिंदे बाहर

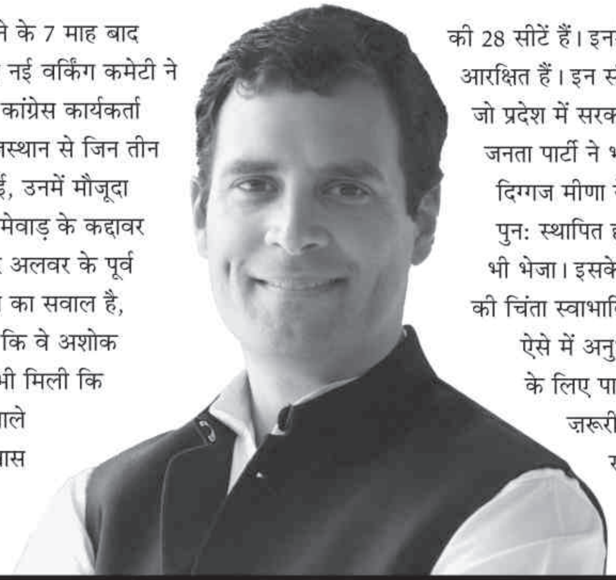

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष बनने के 7 माह बाद राहुल गांधी द्वारा 17 जुलाई को घोषित नई वर्किंग कमेटी ने सबको चौंकाया। राजस्थान में न सिर्फ कांग्रेस कार्यकर्ता बल्कि आम आदमी भी हतप्रभ है। राजस्थान से जिन तीन नेताओं ने इसमें अपने लिए जगह बनाई, उनमें मौजूदा महासचिव(संगठन) अशोक गहलोत, मेवाड़ के कद्दावर आदिवासी नेता रघुवीर सिंह मीणा और अलवर के पूर्व सांसद जितेन्द्र सिंह हैं। जहां तक मीणा का सवाल है, उन्हें इसलिए ही यह जगह नहीं मिली कि वे अशोक गहलोत के निकट हैं, बल्कि इसलिए भी मिली कि राजस्थान में तीन महीने बाद ही होने वाले विधानसभा चुनाव में इनकी भूमिका खास होगी। राजस्थान में कौनसी पार्टी राज करेगी, यह बहुत कुछ तय करता है, आदिवासी वोटर। आदिवासी नेता रघुवीर मीणा को वर्किंग कमेटी में शामिल करके उन पर न केवल बड़ी जिम्मेदारी डाली गई है बल्कि उन पर विश्वास भी जताया गया है। प्रदेश की राजनीति में इसे गुर्जर-मीणा समीकरणों को सन्तुलित रखने वाला कदम भी माना जा सकता है। प्रदेशाध्यक्ष गुर्जर समुदाय से हैं।

उदयपुर संभाग में विधानसभा की 28 सीटें हैं। इनमें से ज्यादातर जनजाति वर्ग के लिए आरक्षित हैं। इन सीटों पर मीणा समुदाय का वर्चस्व है, जो प्रदेश में सरकार का भविष्य तय करता है। भारतीय जनता पार्टी ने भी पिछले दिनों रूठे हुए अपने पुराने दिग्गज मीणा नेता किरोड़ीलाल को पार्टी में ससम्मान पुनः स्थापित ही नहीं किया बल्कि उन्हें राज्यसभा में भी भेजा। इसके चलते कांग्रेस में मीणाओं को साधने की चिंता स्वाभाविक थी।

ऐसे में अनुभवी और उत्साही रघुवीर सिंह मीणा के लिए पार्टी में उपयुक्त स्थान सुनिश्चित करना ज़रूरी हो गया था। वे 2002 से 2003 तक राजस्थान सरकार में मंत्री रहने के साथ ही यूथ कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष, प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष और सांसद भी रह चुके हैं। वर्किंग कमेटी से राजस्थान के नेता पूर्व केन्द्रीय मंत्री-महासचिव डॉ. सी. पी. जोशी व मोहन प्रकाश को बाहर रखा गया है। डॉ. जोशी अब शायद महासचिव भी नहीं रह पाएंगे, लेकिन इतना तय है कि उनके अनुभव और समर्पण का लाभ अवश्य लिया जाएगा। उन्हें राजस्थान व अन्य विधान सभाओं के इस साल होने वाले चुनाव में उम्मीदवारों के चयन सम्बन्धी बड़ी जिम्मेदारी दी जा

राजस्थान से शामिल त्रिमूर्ति

अशोक गहलोत

रघुवीर मीणा

जितेन्द्र सिंह

कार्यसमिति सदस्य

राहुल गांधी, सोनिया गांधी, डॉ. मनमोहन सिंह, मोतीलाल वोरा, गुलाब नबी आजाद, मल्लिकार्जुन खड़गे, एके एंटनी, अहमद पटेल, अंबिका सोनी, ओमन चांडी, तरुण गोगोई, सिद्धारमैया, आनंद शर्मा, हरीश रावत, कुमारी शैलजा, मुकुल वासनिक, अविनाश पांडे, केसी वेणुगोपाल, दीपक बाबरिया, ताम्रध्वज साहू, रघुवीर मीणा, गौखंगम, अशोक गहलोत।

राजस्थान से 3, मप्र-छग से 2-2 शामिल

कार्यसमिति में राजस्थान से अशोक गहलोत, रघुवीर मीणा, जितेन्द्र सिंह हैं। मध्यप्रदेश से ज्योतिरादित्य सिंधिया और अरुण यादव तथा छत्तीसगढ़ से मोतीलाल वोरा और ताम्रध्वज साहू को स्थान मिला है।

7 महिलाओं को जगह

कांग्रेस अध्यक्ष ने कार्यसमिति में 7 महिलाओं को स्थान दिया है। इनमें सोनिया गांधी, अंबिका सोनी, आशा कुमारी, रजनी पाटिल, कु. शैलजा, शीला दीक्षित व महिला कांग्रेस अध्यक्ष सुष्मिता देव हैं।

सकती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि अशोक गहलोत, डॉ. सी. पी. जोशी, प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट और जितेन्द्र सिंह के हाथों ही राजस्थान विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की नैया को पार लगाने की पतवार होगी। हालांकि अशोक गहलोत जहां समग्र राष्ट्रीय फलक पर चुनावों की तैयारी को देखेंगे, डॉ. जोशी व जितेन्द्र सिंह प्रदेशाध्यक्ष के साथ चुनाव की रणनीति को अन्तिम रूप देंगे।

कार्यसमिति में क्षेत्रीय संतुलन का ध्यान रखने के साथ ही उन प्रदेश प्रभारियों को विशेष आमंत्रित सदस्य के तौर पर जगह दी गई है, जो महासचिव नहीं है। सोनिया गांधी के कांग्रेस अध्यक्ष रहते संगठन महासचिव रहे कद्दावर नेता जनार्दन द्विवेदी को भी कार्यसमिति में जगह नहीं मिली हैं।

घोषित कार्यसमिति में मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुशील कुमार शिंदे, बीके हरिप्रसाद को भी नहीं रखा गया है। कार्यसमिति में निर्वाचित और मनोनीत सदस्यों की संख्या 23 है। जबकि पार्टी संविधान में यह 21 है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने कार्यसमिति में 51 सदस्यों को शामिल किया है। इनमें 23 निर्वाचित और मनोनीत श्रेणी में 18 स्थायी आमंत्रित और 10 विशेष आमंत्रित हैं। 23 सदस्यों में कई राज्यों के पूर्व मुख्यमंत्रियों को स्थान दिया गया है। सभी प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष विस्तारित कार्यसमिति(एक्सटेंडेट वर्किंग कमेटी) के सदस्य होते हैं। 22 जुलाई को हुई पहली बैठक में सभी प्रदेश अध्यक्षों ने भी भाग लिया।

स्थाई आमंत्रित सदस्य

शीला दीक्षित, पी. चिदम्बरम्, ज्योतिरादित्य सिंधिया, बाला साहब थोराट, तारीक हमीद कर्रा, पीसी चाको, जितेन्द्र सिंह, आरपीएन सिंह, पीएल पुनिया, रणदीप सुरजेवाला, आशा कुमारी, रजनी पाटील, रामचन्द्र खुंटिया, अनुग्रह नारायण सिंह, राजीव एस सातव, शक्ति सिंह गोहिल, गौरव गोगोई, डॉ. ए. चेला कुमार।

विशेष आमंत्रित सदस्य

केएच मुनियप्पा, अरुण यादव, दीपेन्द्र हुड्डा, जितिन प्रसाद, कुलदीप विश्नोई सहित अध्यक्ष इंटक, अध्यक्ष युवा कांग्रेस, अध्यक्ष एनएसयूआई, अध्यक्ष महिला कांग्रेस मुख्य संगठक कांग्रेस सेवादल।

– उमेश शर्मा

Kailash Agarwal
9414159130
स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
Pankaj Agarwal
9414621211
YUVRAJ PAPERS
Yuvraj Papers
design | paper | print
11-A, Indira Bazar, Nada Khada, Near Bapu Bazar,
Udaipur - 313001 Phone :- + 91-294-2418586
email : info@yuvrajpapers.com

बारिश में वाहन फिट तो हादसों पर भी 'ब्रेक'

बारिश का मौसम वाहन चालकों के लिए कई तरह की परेशानियां लेकर आता है। ऐसे में हादसों का खतरा भी काफी बढ़ जाता है। वाहन की प्रॉपर सर्विस के साथ ये टिप्स फॉलो करें-

बारिश के मौसम में कार या बाइक चलाने का मजा ही कुछ और है। लेकिन कई बार ये मजा जान पर भी भारी पड़ सकता है। वजह है बारिश से भीगी सडकें और वाहनों में रही कुछ खामियां। वैसे भी बारिश का मौसम गाडियों के लिए कई तरह की परेशानियां लेकर आता है। बारिश में सडकों पर भरे पानी के कारण इस मौसम में हादसे भी बढ़ जाते हैं। ऐसे में वाहनों की खामियां समय पर सुधार दी जाए तो सफर मानसून प्रूफ बन जाता है।

फोर व्हीकल टिप्स

टायर्स का रखें ख्याल : बारिश में गीली रोड पर फिसलन हो जाती है। कई बार तेल और दूसरी चीजें सडक पर बहने से यह फिसलन काफी बढ़ जाती है। ऐसे में घिसे हुए टायर्स को समय पर बदल दिया जाए। कई टायर्स में ट्रेड वियर इंडिकेटर आता है, तो टायर घिसने पर दिखाई देने लगता है। अगर आपकी गाड़ी में यह दिखने लगा है तो जल्द ही टायर बदल लें।

बैट्री की तरफ दें ध्यान : इस मौसम में जरूरी है आपकी गाड़ी में वायर्स का सही से इंसुलेशन हुआ हो इस बात का ध्यान रखें कि आपकी गाड़ी की बैट्री, इसके टर्मिनल और लीड अच्छी कंडीशन में हों। बारिश के दौरान बैट्री को हेडलैंप्स, वाइपर वगैरह की वजह से ज्यादा काम करना पड़ता है।

लाइट्स व ब्रेक चेक करें : बारिश के दौरान विजिबिलिटी काफी कम होती है इसलिए सडक पर चलते वक्त लाइट्स का इस्तेमाल जरूरी हो जाता है। यह तय कर लें कि आपकी गाड़ी की हेडलाइट्स, ब्रेक लाइट और इंडिकेटर्स सही से काम कर रहे हों। कोई फाल्ट हो तो ठीक कर लें। बैट्री को भी करें। हेडलाइट्स और टेल-लैंप्स को भी साफ रखें। ब्रेक फ्लूइड लीक हो रहा है तो इसे तुरंत ठीक कराएं। घिसे हुए ब्रेक पैडल सेफ्टी के लिए खतरनाक हैं। ऐसे में इनको भी बदल लें।

विंडस्क्रीन और वाइपर की अहमियत : कई बार धूल-मिट्टी विंडस्क्रीन पर जमा हो जाती है, जिसके चलते बाहर का नजारा साफ नहीं दिखता। भारी बारिश में विंडस्क्रीन पानी से भी ढक जाती है इसलिए उस पर अच्छी क्वालिटी का रिपेलेट यूज करें। मानसून में वाइपर बहुत जरूरी हो जाते हैं। विंडस्क्रीन पर जमा पानी वाइपर के बिना आपको ड्राइव नहीं करने देगा इसलिए जरूरी है कि बारिश से पहले वाइपर ब्लैड्स को चेक कर लें।

हर तरह की लीकेज रोकें : कई बार विंडशील्ड या दूसरे ग्लास पैनल चेंज करने की वजह से उसमें जगह रह जाती है जो बारिश में दिक्कत दे सकती है इसलिए दरवाजे, पिलर्स और सनरूफ को अच्छे से देख लें। अगर इनमें कहीं लीकेज हो रही है तो बंद करें। कई बार रूफ रेक लगाने की वजह से भी हल्के सुराख रह जाते हैं, जो बारिश में परेशानी खड़ी कर सकते हैं। अगर गाड़ी में कही जंग लगी है तो उसे तुरंत ठीक करवाएं। यह गाड़ी की बॉडी को और खराब होने से बचाएगा। बॉडी और अंडर साइड को साफ रखने के लिए प्रेशर वॉश करवाते रहें। इससे गाड़ी की शाइनिंग बढ़ेगी और इस पर प्रोटेक्टिव लेयर भी बन जाएगी। गाड़ी को जंग से बचाने के लिए डीजल और जला हुआ मोबिल ऑयल मिलाकर गाड़ी की बॉडी के निचले हिस्से, इंजन के आसपास और लीफ स्प्रिंग पर लगाएं। लेकिन ध्यान रहे डिस्क ब्रेक, कैलिपर्स, व्हील ड्रम और रबर पार्ट पर नहीं लगे। इसके अलावा गाड़ी में मानसून किट भी रखें। जिसमें टॉर्च, एक्स्ट्रा फ्यूज, हेडलैंप, टेल लैंप्स बल्ब, छोटी टूल किट, टायर इनफ्लेटर और एक्सट्रा वाइपर ब्लैड्स रखें ताकि बारिश में फंसने पर आपको कोई दिक्कत न हो।

टू-व्हीकल टिप्स

चटक रंग का रेनकोट पहनें : बारिश के दौरान रेनकोट खरीदते समय ध्यान रखें कि वह पीले या ऑरेंज जैसे चटक रंग का हो ताकि वह दूर से ही लोगों को नजर आए। इसके अलावा सुरक्षा के लिए फुल फेस वाला हेलमेट पहनें। हेलमेट के शीशे पर थोड़ा कार वैक्स लगा लेने से उस पर बारिश की बूंदें रुकती नहीं हैं।

आराम से लगाएं ब्रेक : बारिश में बाइक राइड करते वक्त अगर आप तेज रफ्तार में हैं तो यह आपके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। बारिश में स्पीड कम रखें और ब्रेक का इस्तेमाल भी आराम से करें। गीली सडकों पर ब्रेक लगाते समय या टर्न लेते समय गाड़ी को झुकाएं नहीं।

आगे-पीछे का ब्रेक एक साथ लगाएं। इससे बाइक को रोड पर बेहतर ग्रिप मिलेगी।

इन बातों को नहीं करें नजर अंदाज

- मौसम चाहे जैसा भी हो पर आपको बाइक चलाते समय हेलमेट जरूर लगाना चाहिए। बारिश के मौसम में इसकी अहमियत और बढ़ जाती है।
- बारिश में अगर बाइक बंद हो जाए तो उसे तुरंत स्टार्ट करने की कोशिश न करें। बाइक से पानी निकलने का इंतजार करें और फिर स्टार्ट करें।
- किक से अगर बाइक स्टार्ट न हो तो स्पार्क चेक करें। स्पार्क प्लग को सूती कपड़े से साफ करने के बाद देखें कि उसमें करंट आ रहा है या नहीं। अगर करंट नहीं आ रहा है तो बैट्री चेक करें। बैट्री ठीक होने पर भी अगर बाइक स्टार्ट न हो तो किसी मैकेनिक को दिखाएं।

- सुनील पंडित

व्यक्ति चर्चा

92 वर्ष के युवा सांगानेरिया

सुन्दरलाल सांगानेरिया आयु के 92वें वर्ष में एकदम स्वस्थ और प्रसन्न। उदयपुर के छबीला भैरू क्षेत्र के घर में अकेले रहने वाले सांगानेरिया का पांच वर्ष पूर्व जीवन साथी कमला देवी से साथ छूट गया। उनके देहावसान के बाद एक मात्र पुत्री सरोज ने कई बार चाहा कि पिता उनके साथ रहें, लेकिन उन्हें पराश्रय मंजूर नहीं। बेटी सरोज, दामाद तुलसीराम लुहाड़िया व बच्चों ने भी नानाजी से खूब आग्रह किया तो बोले न तुम मुझसे न मैं तुमसे दूर हूँ। जब मन चाहे आ जाओ, नाना के साथ बैठो, बतियाओ, खाओ-पिओ और मौज करो। मैं तुम्हारे साथ रहा तो तुम सब मिलकर मुझे आलसी बना दोगे। बेहतर यही है कि मुझे वैसे ही अपना काम खुद कर लेने दो, जैसे तुम्हारी नानी के जीवित रहते किया करता था। पत्नी के देहावसान के बाद सांगानेरिया ने उनकी स्मृति में एक लोकहित न्यास गठित किया है। जिसके माध्यम से गरीबों को भोजन, दवा, निर्धन परिवारों के स्कूली बच्चों को पाठ्य पुस्तकें, ड्रेस, स्कूल फीस, स्कॉलरशिप आदि प्रदान करते हैं। सेवानिवृत्त सांगानेरिया बताते हैं कि जब वे रिटायर हुए तब 1300 रुपए पेंशन मिलती थी, जो अब 26000 रु. है। शुद्ध एवं सात्विक भोजन दोनों वक्त खुद बनाता-खाता हूँ। आहार सन्तुलित हो इसका पूरा ध्यान रखते हुए पूर्ण रूचि से ग्रहण करता हूँ। युवाओं के लिए इनका संदेश है कि स्वस्थ और मस्त रहो। भारतीय मूल्यों और संस्कारों के अनुरूप अपनी जीवनशैली तय करो। परमार्थ करते हुए स्वयं का काम समय पर और पूरे उत्साह से पूर्ण करो। भौतिकता की अंधी दौड़ में शामिल न होकर सन्तोष और आनन्द में जिओ।

- प्रस्तुति : नंदकिशोर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

Tel: 0294-2413807(O)
0294-2418489(R)

कंवलजीत सिंह

स्वागत टेन्ट हाऊस

Tent Decoration

Light Decoration

Flower & Catering

Opp. Commerce College, M.B. College Road, Udaipur
Res :- 11, Govindpura Colony, Old Railway Station Road, Udaipur (Raj.)

सोनाली बेन्द्रे करा रही न्यूयॉर्क में कैंसर का इलाज

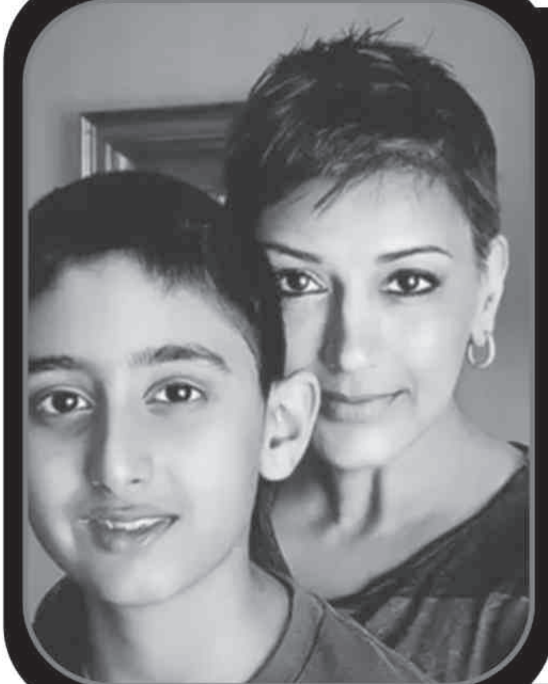

अपनों के सहारे लड़ूंगी यह लड़ाई

अभिनेत्री सेनाली बेन्द्रे से पहले भी कई सितारों ने कैंसर से लड़कर उसे मात दी है। कुछ दिन पहले ही अभिनेता इरफान खान को भी न्यूराएंडोक्राइन नामक दुर्लभ कैंसर का पता चला। इरफान कुछ महीनों से लंदन में इलाज करा रहे हैं। वे अपने स्वास्थ्य के बारे में सोशल मीडिया पर अपडेट भी करते रहते हैं। इससे पहले अभिनेत्री मुमताज, मनीषा कोइराला, लीजा रे, निर्देशक अनुराग बसु और क्रिकेटर युवराज सिंह जैसे सितारे भी कैंसर को हरा चुके हैं। इन लोगों ने हौसला नहीं हारा और अंत मैं कैंसर को मात दी।

-रक्षा नागदा

अभिनेता इरफान खान के बाद बॉलीवुड अभिनेत्री सोनाली बेन्द्रे भी कैंसर से जूझ रही हैं। वे इन दिनों न्यूयॉर्क में हाईग्रेड मेटास्टिक कैंसर का इलाज करवा रही हैं। इसकी जानकारी खुद उन्होंने पिछले दिनों एक भावुक पोस्ट के जरिए दी उनकी इस सूचना पर उनके प्रशंसक और बॉलीवुड मित्र सकते में आ गए और उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है। सोनाली ने अपनी पोस्ट में लिखा कि 'मैं अपनों के सहारे 'कैंसर की जंग' लड़ूंगी।' सोनाली को जून में गायनिक समस्या होने पर मुंबई के हिन्दुजा अस्पताल में दाखिल करवाया गया था। यहां प्रारंभिक उपचार के बाद वे न्यूयॉर्क चली गईं। उन्होंने पोस्ट में लिखा, इससे निपटने के लिए तुरन्त इलाज लेने से बेहतर तरीका नहीं हो सकता था। हम सकारात्मक रहें और मैं हर कदम पर लड़ने को तैयार हूँ। मैं इस जंग में यह जानते हुए आगे बढ़ रही हूँ कि मेरे पीछे मेरे परिवार और दोस्तो की ताकत है। सोनाली का कैंसर चौथे स्टेज में है। हाईग्रेड कैंसर में ट्यूमर शरीर में तेजी से फैलता है। यह शरीर के किस अंग में हुआ है, पीड़ित की उम्र क्या है और हाईग्रेड की कौनसी अवस्था है, इसके आधार पर उपचार होता है। सोनाली को 90 के दशक में आई 'सरफरोश', 'दिलजले' और 'डुप्लीकेट' जैसी फिल्मों में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है।

इरफान खान

अस्पताल में भर्ती होने से पहले वे टीवी रिएलटी शो 'इंडिया बेस्ट ड्रामेबाज' में जज की भूमिका में नज़र आ रही थी। उन्हें शो बीच में ही छोड़कर न्यूयॉर्क जाना पड़ा। उनके पति फिल्मकार गोल्डी बहल और तेरह साल का बेटा रणवीर भी मां के साथ है।

लीजा रे

कनाडा की मशहूर अभिनेत्री लीजा रे को 2009 में प्लाज्मा सेल में कैंसर होने का पता चला। इलाज के दौरान उन्होंने इसकी जानकारी सार्वजनिक नहीं की। एक साल बाद जब वह इस बीमारी से उबरने लगी तो उन्होंने इसकी जानकारी सार्वजनिक की।

मुमताज

पुराने जमाने की मशहूर अभिनेत्री मुमताज को 54 साल की उम्र में ब्रेस्ट कैंसर का पता चला था। एक दशक से अधिक समय तक बीमारी से जूझने के बाद उन्होंने कैंसर को हरा दिया।

युवराज सिंह

वर्ष 2011 के विश्व कप के बाद क्रिकेटर युवराज सिंह को लंग में कैंसर का पता चला। इसके बाद उन्होंने बोस्टन और इंडियानापोलिस में कीमोथेरेपी कराई। इसके बाद 2012 में उन्होंने क्रिकेट में फिर वापसी की। आज भी मैदान पर उनकी मौजूदगी है।

मनीषा कोइराला

मनीषा कोइराला को 2012 में कैंसर होने का पता चला। वे बीमारी से मजबूती से लड़ी और इस पर काबू पाया। इलाज के दौरान उन्होंने एक फोटो भी शेयर की थी जिसमें उनके बाल नहीं थे। इससे इस बीमारी से जूझ रहे कई को प्रेरणा भी मिली

अनुराग बसु

'बर्फी' और 'गैंगस्टर' जैसी फिल्मों के निर्देशक अनुराग बसु भी कैंसर को मात दे चुके हैं। बसु को 2004 में ब्लड कैंसर होने का पता चला। वे इस बीमारी से लड़े और बाद में वह सही होकर बाहर आए। आज वे फिल्मों के निर्देशन में व्यस्त हैं।

HANSA PALACE
UDAIPUR
HANSA PALACE
GROUP
Estd. 1965

Alter Your Life Style

With Best Compliments

(FOUNDER - KANHAIYA LAL TAK)

HANSA PALACE ART FURNITURES PVT. LTD.

7, Sec-4, Hiran Magri,Udaipur, Rajasthan India 313001
Tel : 91-294-2462-101 / 102 | Mobile: 9829041344
Email: hansapalace@gmail.com | Web: www.hansapalace.com

केले की सेहत खराब

खत्म होने के कगार पर!

कहते है कि रोज एक केला खाने से जितनी कैलोरी मिलती है उतनी शायद किसी अन्य फल से न मिले। केले में 108 कैलोरी ऊर्जा होती है जो हमारे शरीर को हमेशा तरोताजा रखती है। लेकिन यह जानकार आपको आश्चर्य होगा कि हमारी सेहत को तंदुरूस्त रखने वाला केला इन दिनों खुद बीमारी की चपेट में है। केले की एक विशेष प्रजाति को ऐसा रोग लगा है जो उसके इम्यून सिस्टम को पूरी तरह बर्बाद करने पर तुला है। हाल ही वैज्ञानिकों ने एक शोध किया है, जिसके अनुसार दुनियाभर में पॉपुलर केले की सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाली प्रजाति भविष्य में विलुप्त हो सकती है। इसे 'कैवेंडिश बनाना' कहा जाता है। रिसर्च के अनुसार 'पनामा डिजीज' इन्हें पूरी तरह नष्ट कर देगी। केले के पौधे को यह बीमारी फंगस लगने से होती है। यह बीमारी एशिया समेत अफ्रीका, मिडिल ईस्ट, आस्ट्रेलिया और सेंट्रल अमेरिका को अपनी जद में ले चुकी है। रिसर्च करने वालों ने अलर्ट किया है कि अगर यह इंफेक्शन साउथ अमेरिका पहुंच जाएगा तो कैवेंडिश बनाना को विलुप्त होने से कोई नहीं बचा सकता है। पनामा इंफेक्शन इतना खतरनाक है कि 1960 के दशक में इसने 'ग्रॉस मिशेल' नाम की केले की प्रजाति का नामो-निशान मिटा दिया था। कैवेंडिश प्रजाति ने ग्रॉस मिशेल की जगह ली थी। टीआर-4 नाम का फंगस बड़ा खतरा बना हुआ है। वैज्ञानिकों को डर है कि जल्द ही फंगस लैटिन अमेरिका पहुंचेगा। आपको बता दें कि दुनिया में 80 प्रतिशत कैवेंडिश केले उगाए जाते हैं।

कैवेंडिश केले की खासियत

रोज एक केला खाने से अंधेपन का खतरा दूर होता है। केले में कैरोटिनॉइड यौगिक पाया जाता है जो फलों, सब्जियों को लाल, नारंगी और पीला रंग देता है। यह लीवर में जाकर विटामिन ए में परिवर्तित हो जाते हैं, जो आंखों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। कैवेंडिश बनाना में पीलापन ज्यादा होता है। जो खाने में मीठा होने के साथ ही कैंसर, हृदय रोग और मधुमेह के लिए रामबाण माना जाता है। इसमें प्रो-विटामिन, कैरोटिनॉइड भरपूर होने से यह आंखों के लिए महत्वपूर्ण विटामिन ए की कमी को पूरा करने के लिए संभावित खाद्य स्रोत माना जाता है। हल्के पीले और कम-कैरोटिनॉइड वाले कैवेंडिश किस्म के केले कैरोटिनॉइड के अणुओं को तोडने़ वाले अधिक एंजाइमों का उत्पादन करते हैं।

भारत से ही दुनिया में पहुंचा कैवेंडिश

कई वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि कैवेंडिश बनाना की जेनेटिक जड़ें भारत में हैं। कहा जाता है कि इस प्रजाति से ही केले की फसल भारत से होते हुए शेष विश्व में पहुंची है। कैवेंडिश प्रजाति की खासियत यह है कि वह नई-नई फफूंदों से खुद लडने़ में समर्थ होती है पर उसमें यह प्रतिरोधक क्षमता तभी तक कायम रह पाती है जब तक उसे पारंपरिक तौर-तरीकों से उगाया जाता है। लेकिन बढ़ती मांग और उत्पादन में तेजी की चाहत में केला उत्पादकों ने समय लेने वाली पद्धतियों के स्थान पर कम समय में उगने और पकने वाले बीजरहित केले की प्रजातियां विकसित कर ली हैं। जिनको बीज के स्थान पर कलम से उगाया जाता है। इस कारण केले की इस प्रजाति में प्रतिरोधक क्षमता का अभाव हो गया है। केले के सामने मुश्किल हालात सिर्फ इसी एक कारण से पैदा नहीं हुए हैं। बता दें कि दुनिया के 130 देशों में केले की खेती होती है। उनमें भी कैंवेडिश प्रजाति का केला ही निर्यात का प्रमुख आधार है। केले का करीब 6.5 करोड़ टन उत्पादन का 20 फीसद हिस्सा अकेले भारत और ब्राजील में पैदा होता है। मात्रा या वजन के पैमाने पर सबसे ज्यादा निर्यात केले का होता है। हालांकि कीमत के आधार पर संतरा पहले नंबर पर आता है।

क्या है पनामा इंफेक्शन

ये बीमारी ऐसा घातक प्रहार करती है कि केले का इम्यून सिस्टम बर्बाद हो जाता है। पनामा इंफेक्शन केले केपौधे में मौजूद पोषक तत्वों को ही अपने बढ़ने का आधार बना लेता है। नतीजा यह होता है कि हमलावर फफूंदी ऐसे एंजाइम्स पैदा करती है जो पौधे की कोशिकाओं को तोड़ देती है। फिर वे कोशिकाओं में मौजूद शर्करा और दूसरे कार्बोहाइड्रेट्स को ही अपना भोजन बना लेती है। यानी केला जिस चीज को अपनी ताकत बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करता है, वहीं चीज बीमारी का ताकत बन जाती है।

नई प्रजाति में जुटे वैज्ञानिक

टीआर फंगस की पहचान पहली बार 1994 में हुई, जब ताइवान में केलों के खेत खराब होने पर शोध हुआ था। टीआर 4 ऐसा फंगस है जो 30 साल तक मिट्टी में बिना किसी प्रक्रिया के रह सकता है और अचानक से एक्टिव होकर पूरे खेत को नुकसान पहुंचाता है। ये पौधे को इस हद तक सुखा देता है कि वह मर जाता है। ताइवान के बाद यह पूर्वी और दक्षिण पूर्वी एशिया में फैला। 2013 के बाद से पनामा इंफेक्शन जॉर्डन, लेबनान, पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया में भी पाया गया है। क्यू स्थित रॉयल बॉटेनिक गार्डन्स के सीनियर कंजर्वेशन असेसर रिसर्ड ऐलन के मुताबिक मेडागास्कर (एन्सेटे पेरीरी) में पाए जाने वाली केले की दुर्लभ रोग प्रतिरोधी प्रजातियों में कुछ ऐसे गुण हैं, जो इसे कैवेंडिश केले से ज्यादा टिकाऊ बनाती है। यहां सिर्फ 5 पेड़ ही बचे हैं। इन्हीं की मदद से केले की नई प्रजाति बनाने की तैयारी है।

प्रस्तुति : विष्णु माथुर

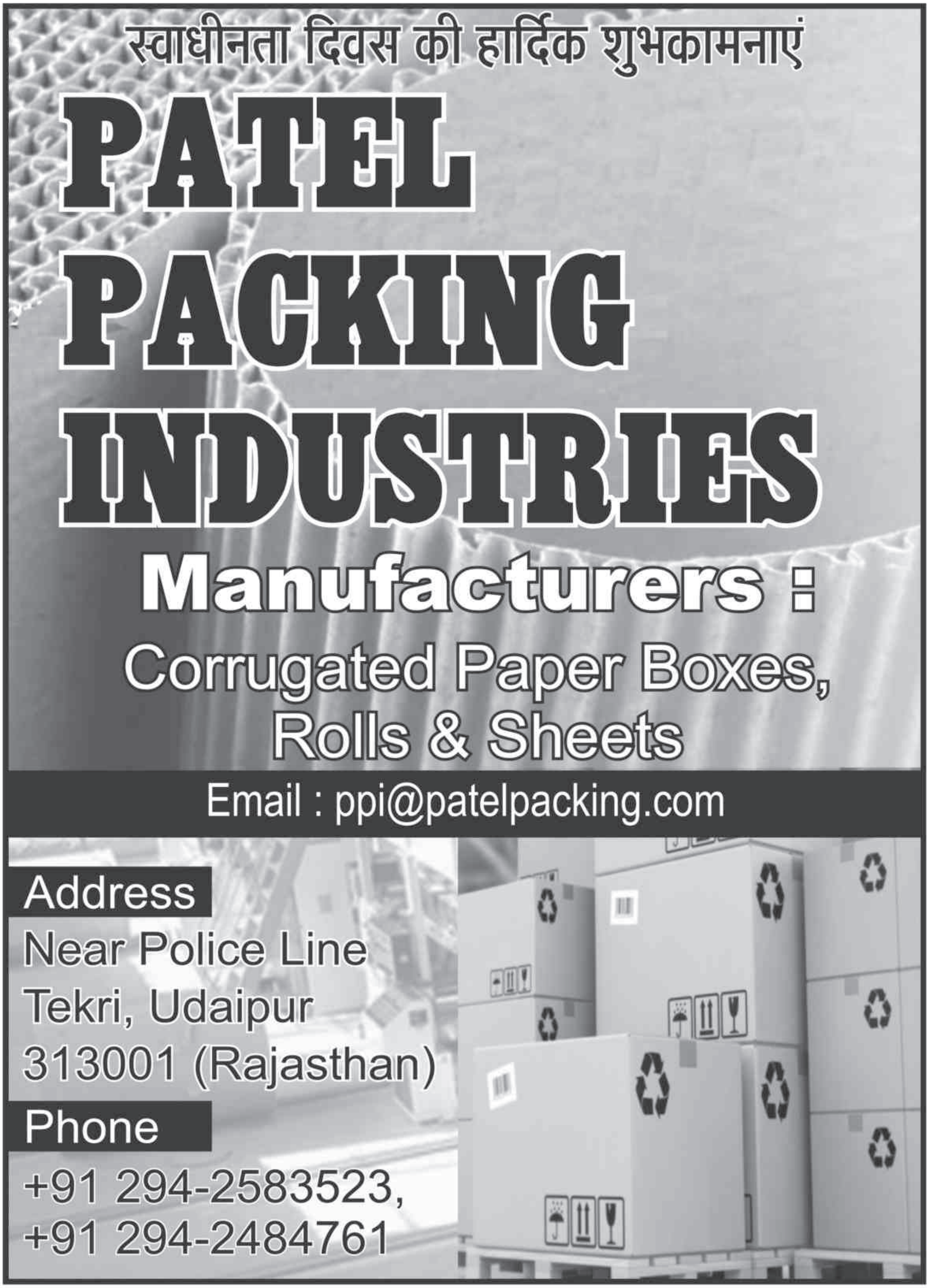
स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
PATEL PACKING INDUSTRIES
Manufacturers :
Corrugated Paper Boxes, Rolls & Sheets
Email : ppi@patelpacking.com
Address
Near Police Line
Tekri, Udaipur
313001 (Rajasthan)
Phone
+91 294-2583523,
+91 294-2484761

बारिश के मौसम में मकई के खास व्यंजन

जिस भुट्टे को हम बड़े चाव से खाते हैं, उसमें बहुत से गुण हैं। गर्मागर्म भुट्टा और पॉपकार्न तो आपने सैर करते या मूवी देखते खाया ही है, इसकी कई तरह की डिश भी बनाई और खाई जाती है। सर्दी में मक्का की रोटी और सरसों की भाजी के कॉम्बिनेशन का तो कहना ही क्या? बारिश में मक्का की कुछ डिश बनाने की विधि बता रही हैं **- उर्वशी शर्मा**

चटपटी भुट्टा कचौरी

सामग्री : खोल के लिए - मैदा-2 कप, नमक-आधा चम्मच, तेल-50 ग्राम।

भरावन के लिए : भुट्टे 3-4 नग(ताज़े और नर्म), नमक-स्वादानुसार, लाल मिर्च पाउडर-एक चौथाई चम्मच, हल्दी पाउडर-एक चौथाई चम्मच, सौंफ-1 चम्मच, गरम मसाला-1 चम्मच, चाट मसाला-1 चम्मच, नींबू-आधा, बेसन-2 चम्मच(भुना हुआ), हरी मिर्च - 2 बारीक कटी हुई, अदरक-1 टुकड़ा(बारीक कटा), तेल-आवश्यकतानुसार।

बनाने की विधि : मैदे में नमक एवं तेल का मोयन मिलाकर पानी की मदद से आटा गूंधें। इसे भीगे कपड़े से ढंककर आधा घंटा रखें। भुट्टों को कद्दूकस करें। पैन में 2 चम्मच तेल गर्म कर, सौंफ, जीरा डालें। बारीक कटी हरी मिर्च, अदरक डालकर 2 मिनट भूनें। किसे भुट्टे डालकर ख़ुशबू आने तक भुनें। सभी मसाले, बेसन एवं एक चौथाई कप पानी मिलाकर पकाएं। ठंडा होने पर तैयार भरावन को गूंधे मैदे की लोइयों में भरकर कचौरियां बनाएं। इन्हें गर्म तेल में सुनहरा भूरा तलें। गरमा-गरम भुट्टे की कचौरी को इमली की चटनी के साथ सर्व करें।

मकई के पेटिस

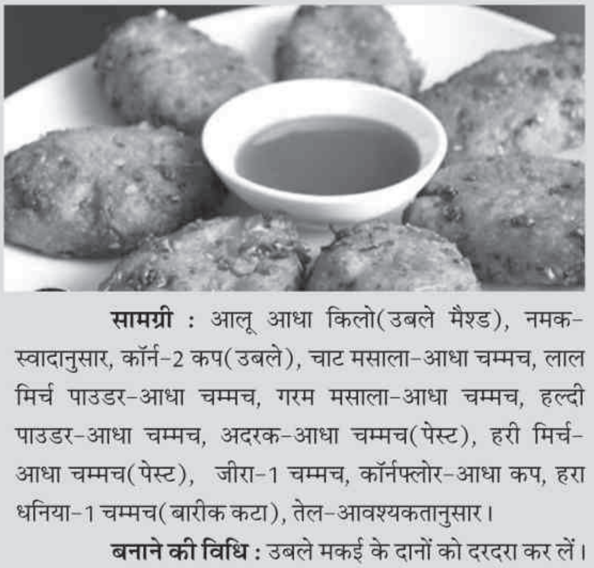

सामग्री : आलू आधा किलो(उबले मैश्ड), नमक-स्वादानुसार, कॉर्न-2 कप(उबले), चाट मसाला-आधा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर-आधा चम्मच, गरम मसाला-आधा चम्मच, हल्दी पाउडर-आधा चम्मच, अदरक-आधा चम्मच(पेस्ट), हरी मिर्च-आधा चम्मच(पेस्ट), जीरा-1 चम्मच, कॉर्नफ्लोर-आधा कप, हरा धनिया-1 चम्मच(बारीक कटा), तेल-आवश्यकतानुसार।

बनाने की विधि : उबले मकई के दानों को दरदरा कर लें। कड़ाही में 2 चम्मच तेल गर्म करें। इसमें जीरा एवं अदरक, हरी मिर्च का पेस्ट डालें। अब पिसे मकई के दाने डालकर 3-4 मिनट भूनें। फिर सभी मसाले मिलाकर कुछ देर पकाएं। हरा धनिया मिलाकर आंच से उतारें। अब आलू में नमक एवं कॉर्नफ्लोर मिलाकर गूंध लें। हथेली पर थोड़ा आलू का मिश्रण फैलाकर मकई का भरावन भरें एवं गोल-गोल पेटिस बना लें। इन्हें गर्म तेल में सुनहरा भूरा होने तक तल लें। गरमा-गरम मकई के पेटिस इमली की चटनी के साथ सर्व करें।

स्वीट कॉर्न करी

सामग्री (चार लोगों के लिए) : स्वीट कॉर्न-4 कप, तेल-आवश्यकतानुसार, जीरा-1 चम्मच, बारीक कटा प्याज-1, बारीक कटा टमाटर-4, अदरक-लहसुन पेस्ट-2 चम्मच, बारीक कटी मिर्च-4, बारीक कटा टमाटर-4, लाल मिर्च पाउडर-1 चम्मच, हल्दी पाउडर-1 चम्मच, धनिया पाउडर-1 चम्मच, गरम मसाला पाउडर-1 चम्मच, क्रीम-4 चम्मच, बारीक कटी धनिया पत्ती-2 चम्मच।

विधि : कड़ाही में तेल गर्म करें और उसमें जीरा डालें। जब जीरा चटकने लगे तो कड़ाही में प्याज, अदरक-लहसुन पेस्ट और हरी मिर्च डालें। जब प्याज का रंग सुनहरा हो जाए तो कड़ाही में टमाटर, स्वीट कॉर्न, मसाले और नमक डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। कड़ाही को ढककर कम-से-कम 25 मिनट पकाएं। बीच-बीच में मिश्रण को मिलाएं भी। धनिया पत्ती और क्रीम डालकर मिलाएं। चार से पांच मिनट मध्यम आंच पर पकाएं और रोटी या नान के साथ पेश करें।

स्वीट कॉर्न खीर

सामग्री : 1 या 2 फ्रेश मुलायम भुट्टे, डेढ़ लीटर दूध, 1 कप शक्कर, 1 चम्मच इलायची पाउडर, मेवों की कतरन आवश्यकतानुसार।

विधि : सबसे पहले फ्रेश मुलायम भुट्टे के दाने निकाल कर रख लें। अब इन्हें जरूरतानुसार दूध डालकर प्रेशर कुकर में सीटी लगाकर पका लें। तत्पश्चात् शेष बचे दूध में शक्कर डालकर गाढ़ा कर लें। अब उसमें दूध के साथ पकाएं भुट्टे डालकर धीमी आंच पर 5-7 उबाल आने तक पकाएं।

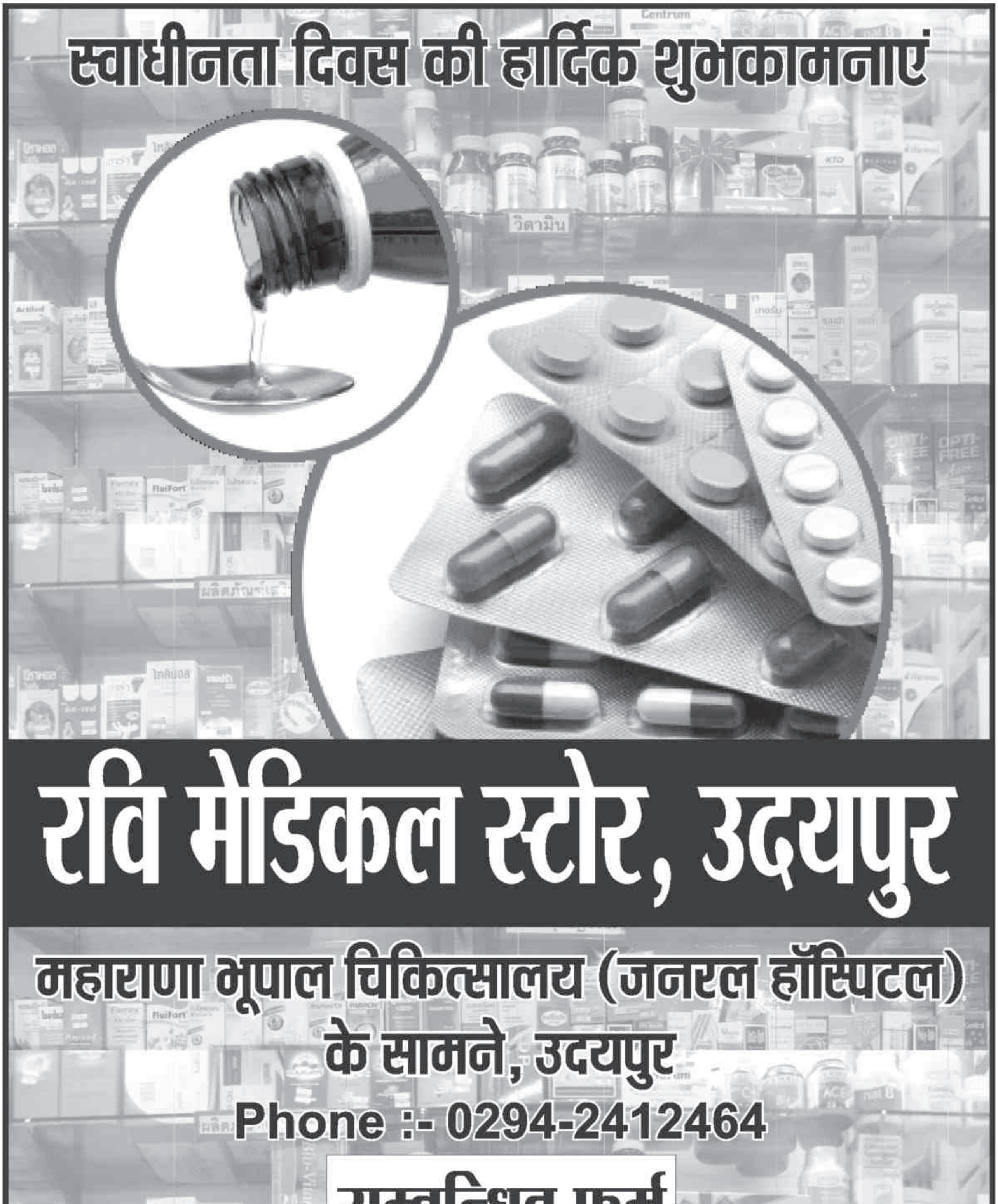
स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
रवि मेडिकल स्टोर, उदयपुर
महाराणा भूपाल चिकित्सालय (जनरल हॉस्पिटल)
के सामने, उदयपुर
Phone :- 0294-2412464
सम्बन्धित फर्म
रवि मेडिकल स्टोर, सलूम्बर एवं लसाड़िया

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह के पूर्वार्द्ध में यथास्थिति के बाद उत्तरार्द्ध अभिष्टप्रद रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी आवश्यक है। जीवन साथी के सहयोग से दूसरों की मदद का अवसर प्राप्त होगा। कार्य परिवर्तन अनुकूल नहीं रहेगा, संतान पक्ष सामान्य व आय पक्ष मध्यम रहेगा।

वृषभ

वाहनादि का प्रयोग सावधानीपूर्वक करें, आय अर्जन में अड़चनें बनी रहेंगी, कार्य का विस्तार एवं कार्यभार बढ़ने के साथ ही संतान से विवाद एवं मनमुटाव भी संभव। पारिवारिक वातावरण बोझिल रहेगा। यात्राओं को टालने की कोशिश करें, किसी को बिना मांगे सलाह न देवें, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मिथुन

माह के पूर्वार्द्ध में अनावश्यक बातों के कारण परेशान होंगे। प्रतिद्वन्द्वी हावी रहेंगे, अपने से बड़ों के परामर्श से ही कार्य करें वरना आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है। कार्यस्थल पर तनाव में रहेंगे। स्वास्थ्य में अचानक गिरावट लेकिन संतान की ओर से सुखद समाचार की प्राप्ति।

कर्क

माह का पूर्वार्द्ध पूर्ण रूप से आपके पक्ष में है, जो भी कार्य करेंगे उसमें अप्रत्याशित सफलता प्राप्त होगी, विशेषकर जमीन-जायदाद एवं स्थिर सम्पत्ति को लेकर। माह के उत्तरार्द्ध में परिवार के साथ भ्रमण-मनोरंजन का लाभ मिलेगा। जीवन साथी के स्वास्थ्य को लेकर सजग रहें, आय पक्ष उत्तम है।

सिंह

17 अगस्त तक असामान्य स्थिति रहेगी, तत्पश्चात् साहस एवं आत्मबल से कुछ नया करने की ललक उत्पन्न होगी और सफलता भी मिलेगी। आय पक्ष मध्यम रहेगा। व्यर्थ के खर्चे बढ़ेंगे, स्वास्थ्य के कारणों से परेशानी भी उठानी पड़ सकती है।

कन्या

धन के लेन-देन सम्बन्धी मामलों में सचेत रहें। किसी पर भी भरोसा करना भारी पड़ सकता है। परिवार का सहयोग आत्मबल प्रदान करेगा, कार्य क्षेत्र में असामान्य स्थिति से जूझना पड़ सकता है। माह की 19 तारीख पश्चात् स्थिति सुधरेगी, विवादों से दूर रहें, भाग्य साथ देगा।

तुला

समय आपके पक्ष में है, सभी कार्यों को करने में सक्षम रहेंगे एवं जो भी करेंगे, उसमें लाभ प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में समय व्यतीत होगा। सार्वजनिक मान-सम्मान भी प्राप्त हो सकता है, योजनाओं का क्रियान्वयन सफलतापूर्वक होगा, मित्रों या सहयोगियों से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, संयम बरतें।

वृश्चिक

कार्य क्षेत्र में विस्तार के साथ अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे और विशेष सफलता से प्रसन्नता होगी। शत्रु हावी होने का प्रयत्न करेंगे, परन्तु अपने विवेक से उन्हें शांत करने में सफल होंगे। आय के साधनों में वृद्धि होगी, सन्तान से सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा, स्वास्थ्य श्रेष्ठ और भाग्य उत्तम रहेगा।

धनु

भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी, नूतन गृह या वाहनादि की प्राप्ति के योग साथ ही आय के नवीन स्रोत भी बनेंगे। लम्बी दूरी की यात्राओं को स्थगित रखें। आपकी योजनाओं एवं कार्यक्रमों पर सफलता की मुहर लगेगी। माह के आरम्भ में अनावश्यक कार्यों में समय व्यतीत होगा।

मकर

न्यायिक मामलों में आपका पक्ष मजबूत रहेगा, माह के उत्तरार्द्ध में भूमि-भवन से सम्बन्धित कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होंगे, बांधवों एवं मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। माह का आरम्भ सुखपूर्वक होगा। माह के मध्य आपके कार्यों की प्रशंसा होगी एवं विरोधी भी पक्ष में होंगे, आय श्रेष्ठ रहेगा।

कुम्भ

बाधा उत्पन्न करने वाले लोगों का सामना करते हुए स्वयं के प्रयासों से विजय प्राप्त करेंगे, अवसरों का लाभ उठाकर सफल होंगे, विचारों में शुद्धता रहेगी एवं निर्णय लेने की शक्ति का विकास होगा, परिवार में हास-परिहास चलता रहेगा। विवादों में विजयी होंगे, स्थिर सम्पत्ति में वृद्धि होगी।

मीन

कार्यों की गति निर्बाध रहे, सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी, अटके हुए धन की प्राप्ति के योग बनेंगे, नौकरी में स्थान परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं, परिवार एवं मित्रों के साथ वैचारिक सामंजस्य फलदायी होगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता, आय पक्ष मध्यम, भाग्य श्रेष्ठ।

बैंक ऑफ बड़ौदा स्थापना दिवस

सामाजिक दायित्व सम्बन्धी कार्यक्रमों का आयोजन

उदयपुर। बैंक ऑफ बड़ौदा के 111वें स्थापना दिवस पर बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के तहत विभिन्न कार्यक्रम उपमहाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख अशोक डगायच, क्षेत्रीय उपप्रमुख हरीश पालीवाल, एस. के. राठी तथा क्षेत्रीय व्यवसाय प्रबंधक सुशील चौधरी के सान्निध्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

18 जुलाई को सबसिटी सेंटर स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। 19 जुलाई को प्रात: फतहसागर की पाल से स्वास्थ्य चेतना रैली निकाली गई। जिसे यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली ने हरी झंडी दिखाई। इस दिन नवपरिसर प्रांगण में शाम को महापौर चन्द्रसिंह कोठारी के मुख्य आतिथ्य में पौधरोपण हुआ। मोटर साइकिल रैली के आयोजन के साथ ही उदयपुर क्षेत्राधीन सभी 86 शाखाओं द्वारा ज़रूरतमन्दों को रैन कोट व छातों का वितरण किया गया। 20 जुलाई को मुख्य समारोह हुआ।

श्रीसीमेंट को पांचवीं बार भामाशाह सम्मान

ब्यावर। श्रीसीमेंट लिमिटेड, रास को शिक्षा के विकास में राज्य सरकार के साथ सहभागिता निर्वहन के लिए पिछले दिनों जयपुर के बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित भव्य समारोह में 'राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान-2018' प्रदान किया गया। जिसे राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष कैलाश मेघवाल व शिक्षामंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी के हाथों कम्पनी के उपाध्यक्ष(कार्मिक एवं प्रशासन) पुष्पेन्द्र भारद्वाज ने ग्रहण किया। कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर एच. एम. बाबू, संयुक्त मैनेजिंग डायरेक्टर प्रशांत बाबू, कम्पनी अध्यक्ष(वर्क्स) पी.एन. छंगाणी, अध्यक्ष(वाणिज्यिक) संजय मेहता व संयुक्त अध्यक्ष अरविन्द खींचा ने कम्पनी को लगातार पांचवी बार यह सम्मान मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

'आलोक' ने मनाया स्थापना दिवस

उदयपुर। संभाग की जानी-मानी शिक्षण संस्थान आलोक विद्यालय का 52वां स्थापना दिवस 29 जून को उदयपुर, राजसमन्द व चित्तौड़ शाखाओं में मनाया गया। जो अपने संस्थापक श्याम जी कुमावत की स्मृति को समर्पित रहा। स्कूल की राजसमन्द शाखा में 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षा में अव्वल आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिक्षाविद् नारायण लाल शर्मा ने आलोक की स्थापना को लेकर संस्थापक आचार्य श्यामलाल कुमावत की संघर्ष यात्रा पर अपने संस्मरण सुनाए। उल्लेखनीय है कि श्याम जी कुमावत का गत 5 जून को देहावसान हुआ। कार्यक्रम में 'थीम ऑफ द इयर 2018-19' का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम को आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत, प्रशासक मनोज कुमावत व प्राचार्य ललित गोस्वामी ने भी सम्बोधित किया। उदयपुर शाखा में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमडीएस के निदेशक शैलेन्द्र सोमानी व समाजसेवी गोपाल कुमावत थे।

कार निर्माता कंपनी 'जीप' का उदयपुर में शोरूम

उदयपुर। कार निर्माता जीप इंडिया कम्पनी ने दक्षिण राजस्थान का पहला शोरूम शहर के मादड़ी इण्डस्ट्रीयल एरिया स्थित निधि कमल जीप के रूप में खोला है। उद्घाटन पर कम्पनी ने 11 ग्राहकों को नई कार की चाबियां दी। शोरूम के प्रबंध निदेशक अमिताभ जैन ने बताया कि जीप अमेरिका का प्रतिष्ठित ब्राण्ड है, जिसने अब उदयपुर में शोरूम खोला है। उन्होंने बताया कि 7 मॉडल 2.0 लि. डीजल इंजन एवं 3 मॉडल 1.4 लि. पेट्रोल इंजन वर्जन में उपलब्ध हैं। ये कम्पास मॉडल पूरी तरह एसयूवी हैं। जीप कम्पनी देश-दुनिया में ऑफ रोड के लिए जानी जाती है। शोरूम के मैनेजर हेमेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि कम्पनी की कारों में जोन एसी, बाइजी, हेड लैम्प, एलईडी लैम्प, फ्रंट एवं रियर कैमरा, 17 इंच टायर साइज, चारों डिस्क ब्रेक, टिल्ट व टेलिस्कोपिक स्टीयरिंग, इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग, ब्रेक टेक्सन कन्ट्रोल, ईएसएसपी उपलब्ध है। जीप के ब्राण्ड कम्पास, रेगुलर, चिरोके, ग्रांड चिरोके व एसआरटी मॉडल में उपलब्ध हैं।

'रूप मधुबन' परियोजना का शिलान्यास

रूप-मधुवन प्रोजेक्ट के ब्रोशर का विमोचन करते सुरेश गुन्देचा व अतिथि।

उदयपुर। महाराष्ट्र की बिल्डर कम्पनी अरिहंत ग्रुप ने पिछले दिनों शोभागपुरा सर्कल के पास अपने नए प्रोजेक्ट 'रूप मधुबन' का भूमि पूजन एवं प्रोजेक्ट के ब्रोशर का विमोचन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उद्योगपति मांगीलाल लुणावत, फिल्म निर्माता के. सी. बोकडिया, कान्तिलाल जैन थे। ग्रुप डायरेक्टर सुरेश गुन्देचा ने बताया कि 28 हजार वर्गफीट क्षेत्र में बनाने वाले इस प्रोजेक्ट में ग्यारह मंजिला इमारत होगी, जिसमें 2 बेसमेंट फ्लोर पार्किंग के लिए होंगे। ग्राउण्ड व प्रथम फ्लोर वाणिज्यिक उपयोग के लिए होगा। शेष नौ मंजिलों में कुल 76 आवासीय फ्लेट्स बनाए जाएंगे। इस अवसर पर जयपाल सिंह, योगेश गहलोत, रोशन डांगी, नरेन्द्र देवासी, विधायक फूलसिंह मीणा, लालसिंह झाला, पुष्कर डांगी, विवेक कटारा, कविता जोशी, प्रेमसिंह शक्तावत, अनिल कुमार आदि भी मौजूद थे।

गौरीकांत व पवन शर्मा पदोन्नत

उदयपुर। राजस्थान जनसम्पर्क सेवा के 36 अधिकारियों को पिछले दिनों विभागीय पदोन्नति समिति ने विविध पदों पर पदोन्नतियां दीं। उदयपुर में उपनिदेशक गौरीकांत शर्मा को सहायक निदेशक एवं पवन शर्मा को जिला जनसम्पर्क अधिकारी के पद पर पदोन्नति प्रदान की गई। फिलहाल दोनों अधिकारियों को अग्रिम आदेश तक उदयपुर जिला जनसम्पर्क कार्यालय में ही पदस्थापित रखा गया है।

गौरीकांत शर्मा

पवन शर्मा

अध्यापक-अभिनवन मंथन

उदयपुर। द स्कॉलर्स एरिना सीनियर सैकंडरी स्कूल में गत दिनों अध्यापक अभिनवन कार्यक्रम 'मंथन' हुआ। जिसमें सोजतिया क्लासेज के निदेशक मुकेश श्रीमाली ने कहा कि मेहनत से प्राप्त लक्ष्य पर गर्व होता है। उन्होंने अध्यापकों को छात्रों का पहला मित्र बताया। कार्यक्रम में डॉ. लोकेश जैन, डॉ. माया त्रिवेदी, डॉ. सीमा राजपुरोहित, जेपी चौबीसा आदि मौजूद थे।

शक्तावत व भंसाली सम्मानित

कैलाश मेघवाल एवं वासुदेव देवनानी से सम्मानित होते शक्तावत एवं भंसाली।

उदयपुर। विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं के उन्नयन में दानदाता के रूप में सहयोगी उदयपुर लेकसिटी राउण्ड टेबल के चेयरमैन युद्धवीर सिंह शक्तावत एवं पूर्व एरिया चेयरमैन दीपक भंसाली को पिछले दिनों जयपुर में भामाशाह जयंती पर राज्य स्तरीय 24वें सम्मान समारोह में शिक्षा भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। उक्त सम्मान विधानसभाध्यक्ष कैलाश मेघवाल एवं शिक्षामंत्री वासुदेव देवनानी ने प्रदान किया।

फोर्टी ने मनाया दूसरा स्थापना दिवस

उदयपुर। फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री(फोर्टी) का दूसरा स्थापना दिवस समारोह द ललित लक्ष्मी विलास पैलेस में हुआ। इसमें मुख्य अतिथि हिन्दुस्तान जिंक के कॉरपोरेट कम्युनिकेशन हेड पवन कौशिक ने कहा कि हम सभी में अधिकतम लोग व्यवसायी हैं। सबके जीवन में व्यस्तता है, लेकिन इसमें खुद के लिए समय निकालना जरूरी है।

समारोह के अध्यक्ष फोर्टी राजस्थान के अतिरिक्त महासचिव महेश काला ने नवगठित कार्यकारी समिति में प्रवीण सुथार, सीए राजन बया, पलाश वैश्य, शरद आचार्य, निशांत शर्मा, राजेश शर्मा, इंद्रकुमार सुथार, राजेश चित्तौड़ा, अरविन्द अग्रवाल, मनीष भाणावत, नवदीप सिंह, अरुण सुथार, अचल अग्रवाल, अनिल चौधरी, मुकेश सुथार, नारायण डांगी आदि को शपथ दिलाई।

हेयर स्टाइलिस्ट कमलेश एशिया पेसिफिक में पहले स्थान पर

उदयपुर। उदयपुर के हेयर स्टाइलिस्ट कमलेश सेन ने पेरिस में हुई ओएमसी ग्लोबल हेयर स्टाइलिस्ट 2018 ऑनलाइन हेयर कट फोटोग्राफी में एशिया पेसिफिक में पहला स्थान प्राप्त किया। उन्होंने जेंट्स फेड हेयर कट वर्ग में टॉप 5 में स्थान बनाया है। यहां उनका विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी जमनेश सेन, शंभूलाल सेन, अशोक पालीवाल, मंजू शर्मा, आशा कालरा, नंद भाटिया एवं दुर्गेश सेन ने सम्मान किया। कमलेश ने बताया कि इस प्रतियोगिता में विश्व के कई देशों में लगभग 115 नामचीन हेयर स्टाइलिस्ट ने हिस्सा लिया, जिनके बीच हर स्तर पर कड़ी प्रतिस्पर्धा में उदयपुर से उनके साथ अनिल सेन, श्वेताशा पालीवाल, पुष्कर सेन और बेंगलुरु से अली हसन आदि ने भी अपने हुनर का कमाल दिखाया।

जगन्नाथ राय जी को रथ अर्पित

उदयपुर। स्व. श्रीमती शांता देवी-रामचन्द्र चौहान की स्मृति में भगवान रथ यात्रा के लिए उनके पुत्रों दिग्विजय सिंह, हेमन्त कुमार एवं मुकेश चौहान ने 10 जुलाई को श्री महेन्द्र सिंह मेवाड़ की उपस्थिति में नवनिर्मित रथ जगदीश मंदिर में भेंट किया। रथ को श्री द्वारकाधीश प्रभु कांकरोली के गोस्वामी श्री वागेश कुमार जी के सान्निध्य में भव्य शोभायात्रा के साथ लोकार्पित किया गया। इस अवसर पर रथ समिति व अ. पुष्टीमार्गीय वैष्णव परिषद के सदस्य भी मौजूद थे।

लायंस लेकसिटी ने मनाया स्थापना दिवस

उदयपुर। लायंस क्लब लेकसिटी ने 39वां स्थापना दिवस पिछले दिनों लायंस भवन देवाली में मनाया। मुख्य अतिथि डिस्ट्रिक्ट 3223 ई-1 के पूर्व प्रांतपाल सुमेर जैन ने अध्यक्ष प्रमोद चौधरी, सचिव के. वी. रमेश, कोषाध्यक्ष राहुल जैन, उपाध्यक्ष प्रथम वर्धमान मेहता, उपाध्यक्ष द्वितीय प्रवीण आंचलिया, उपाध्यक्ष तृतीय दीपक वाही, संयुक्त सचिव नरेन्द्र शर्मा, टेमर अनिल भट्ट, निदेशक दीपक हिंगड़, जी. एस. सिसोदिया, के. एस. भंडारी, के.जी. मूंदड़ा, राजीव मेहता, रेणु बांठिया, एम.एस. पानगडिया, आर. के. चतुर, वी.सी. व्यास, आरएस. सोजतिया, नवल पगारिया, ओ.पी. सिंघल, सेफ्टी ऑफिसर मनप्रीत धींगरा को शपथ दिलाई। इस दौरान बालिका स्कूल, देवाली की छात्राओं को स्टेशनरी वितरित की गई।

गीतांजली को 'बेस्ट एम्पलोयर ब्रांड अवार्ड'

जयपुर। होटल रेडिसन ब्लू में आयोजित प्राइड ऑफ इंडिया अवार्ड सेरेमनी में गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर को बेस्ट एम्पलोयर ब्रांड अवार्ड से नवाज़ा गया। जिसे गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. किशोर पुजारी एवं जीएम एचआर राजीव पंड्या ने राज्य की उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी एवं डॉ. आर एल भाटिया चेयरमैन वर्ल्ड एचआरडी कांग्रेस से ग्रहण किया। राजीव पंड्या को 'यंग एचआर प्रोफेशनल ऑफ दी ईयर' अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

माधवानी सम्मानित

उदयपुर। शहर में फिल्मसिटी निर्माण को लेकर राजस्थान फिल्मसिटी संघर्ष समिति प्रमुख लाईन प्रोड्यूसर मुकेश माधवानी द्वारा किये जा रहे प्रयासों को लेकर फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रैड एण्ड इण्डस्ट्रीज(फोर्टी) की उदयपुर शाखा के द्वितीय स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया।

प्रीति अध्यक्ष और बृजराज सचिव

उदयपुर। रोटरी क्लब मीरा के चुनाव में प्रीति सोगाणी को अध्यक्ष चुना गया। बृजराज कुमारी राठौड़ सचिव बनीं। दोनों पदाधिकारियों ने कार्यभार संभाल लिया है।

तत्पुरुष को भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार

उदयपुर। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का कविता विधा का भवानी प्रसाद मिश्र अखिल भारतीय पुरस्कार राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष को उनकी काव्य कृति 'पीठ पर आँख' के लिये दिए जाने की घोषणा की गई। अपर मुख्य सचिव मनोज कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि इस पुरस्कार के तहत रचनाकार को एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी। उल्लेखनीय है कि तत्पुरुष का यह चर्चित काव्य संग्रह 'पीठ पर आँख' 2017 में प्रकाशित हुआ था।

चैम्बर लगाएगा मेला

उदयपुर। चैम्बर ऑफ कॉमर्स उदयपुर डिवीजन जल्द ही आम जन के लिए खरीदारी का मेला लगाएगा, जिसमें जरूरत की हर छोटी-बड़ी चीज किफायती दर पर मिलेगी। चैंबर कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण व दीपावली सजावट समारोह में इसकी घोषणा अध्यक्ष पारस सिंघवी ने की। तेरापंथ भवन में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि चित्तौड़गढ़ सांसद सी. पी. जोशी व विशिष्ट अतिथि उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा थे। कार्यक्रम में सिंधी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष हरीश राजानी व यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली भी उपस्थित रहे।

एक्सप्रेस कैफे का शुभारंभ

उदयपुर। होटल ली ग्रांड की नई शाखा एक्सप्रेस कैफे का उद्घाटन पिछले दिनों उदयपुर चेंबर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष हंसराज चौधरी ने किया। एमडी महेन्द्र टाया ने बताया कि प्रतापनगर-भुवाणा बाईपास पर होटल परिसर में शुरू हुए कैफे में कॉफी, मॉकटेल, कोल्डट कॉफी, प्योर वेज, स्नेक्स उपलब्ध होंगे। केएस मोगरा, वीरेन्द्र सिरोया, वीपी राठी, पीएस तलेसरा, सीपी तलेसरा आदि मौजूद थे।

नये मिराज मार्ट का शुभारम्भ

नाथद्वारा। मिराज समूह की मिराज मार्ट श्रृंखला के बारहवें व तेरहवें मार्ट का उद्घाटन मिराज ग्रुप के मंत्रराज पालीवाल द्वारा किया गया। मार्ट मिराज हेड ऑफिस ओडन के सामने व गोविन्द चौक नाथद्वारा में खोले गये हैं। मिराज फूड प्रोडक्ट्स के एम डी संजीव जोशी ने बताया कि कम्पनी द्वारा आगामी वर्षों में 100 नये मिराज मार्ट राजस्थान में व 1000 मिराज मार्ट पूरे भारत वर्ष में खोलने की योजना है। मार्ट में मिराज के फूड, ग्रोसरी, स्टेशनरी व कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स उपलब्ध है। वर्तमान में मिराज के मुंबई में 2 व राजस्थान में 11 स्टोर हैं। इस अवसर पर नाथुभाई गुर्जर ने कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों प्रकाश पुरोहित, विकास पुरोहित, ओ पी मालपानी, के. जी. शर्मा, राजेश मेहता, दुर्गेश धायभाई, लक्ष्मण दिवान, मुकेश जोशी, विजय दशोरा आदि का स्वागत किया।

लायन्स क्लब एलीट ने ली शपथ

उदयपुर। लायन्स क्लब एलीट का वर्ष 2018-19 का पदस्थापना समारोह लायन्स भवन में हुआ। पदस्थापना अधिकारी पूर्व प्रान्तपाल अनिल नाहर एवं विशिष्ठ अतिथि रिजन चेयरमैन राजीव भारद्वाज थे। नाहर ने अध्यक्ष पंकज भारद्वाज, सचिव नितिन शुक्ला, प्रसून भारद्वाज, उमेश, अभिषेक जैन, विपिन अग्रवाल, चिराग मेहता, ओमप्रकाश अग्रवाल, नीलम भारद्वाज व अंजू गर्ग को शपथ दिलाई। अध्यक्ष पंकज भारद्वाज ने कहा कि क्लब इस वर्ष बिजली रहित गांवों का चयन कर वहां सोलर बिजली की व्यवस्था कर उन्हें रोशन करेगी।

जनसंख्या दिवसः सूक्ष्म पुस्तिका

उदयपुर। शिल्प कलाकार चंद्र प्रकाश चित्तौड़ा ने विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई के अवसर पर सूक्ष्म पुस्तिका बनाई। चित्रनुमा आकृति में सूक्ष्म औजार से कटिंग कर 24 पेज में पुस्तिका तैयार की गई है। इसमें इतिहास व अन्य जानकारी शामिल की गई। पुस्तिका की साइज 1.1 इंच है।

डीपीएस में शूटिंग रेंज का शुभारम्भ

उदयपुर। वैश्विक स्तर पर राइफल शूटिंग में उदयपुर का नाम रोशन करने वाली राइफल शूटर अपूर्वी चन्देला ने 9 जुलाई को डीपीएस में 10 मीटर एयर पिस्टल एवं 10 मीटर राइफल शूटिंग रेंज का उद्घाटन किया। अपूर्वी ने पिस्टल व राइफल से निशाना भी साधा। शहर में ओलम्पिक स्तर की इलेक्ट्रॉनिक एवं मेन्युअल राइफल शूटिंग रेंज तैयार हो जाने से स्कूल एवं बाहर के खिलाड़ी इसका लाभ उठाकर वैश्विक स्तर पर शहर का नाम रोशन कर सकेंगे। कार्यक्रम में अपूर्वी के पिता कुलदीप सिंह चन्देला भी मौजूद थे। प्राचार्य संजय नरवारिया ने बताया कि स्कूल में राइफल शूटिंग रेंज की स्थापना विद्यालय के वाइस चेयरमैन गोविन्द अग्रवाल का बहुप्रतिक्षित सपना आज पूरा हुआ।

हातिम को अणुव्रत सेवा सम्मान

उदयपुर। आचार्य महाप्रज्ञ के 99वें जन्मदिवस पर 11 जुलाई को विज्ञान समिति में साध्वी गुणमाला, साध्वी लक्ष्य प्रभा एवं साध्वी नव्य प्रभा के सानिध्य में प्रज्ञा दिवस मनाया गया। समिति अध्यक्ष अरूण कोठारी ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत सेवा सम्मान पुरस्कार हातिम अली कानोड़ वाला को दिया गया। मुख्य अतिथि नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव, अणुव्रत समिति संरक्षक गणेश डागलिया। अखिलेश जोशी, आकाशवाणी के कार्यक्रम अधिशासी राजेन्द्र सेन आदि ने कानोड़वाला को यह पुरस्कार प्रदान किया।

राठौड़ चेयरमेन व मधुसूदन सचिव बने

डॉ. एस. एस. राठौड़

मधुसूदन पालीवाल

उदयपुर। माइनिंग इंजीनियर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया राजस्थान चेप्टर उदयपुर की 20वीं वार्षिक आमसभा में सत्र 2018-20 की नई कार्यकारिणी के चुनाव सम्पन्न हुए। नवीन कार्यकारिणी में डॉ. एस. एस. राठौड़, चैयरमेन, एल एस. शेखावत वाईस चैयरमेन, मधुसूदन पालीवाल सचिव, डॉ. एस. सी. जैन संयुक्त सचिव, एच. के. व्यास के अलावा कोषाध्यक्ष, कार्यकारिणी सदस्य के रूप में ए. के. पोरवाल, ओ. पी. सैनी, एम. के. मेहता, ए. एम. अन्सारी व एस. के. वशिष्ट का चयन किया गया।

रतलिया को अवार्ड

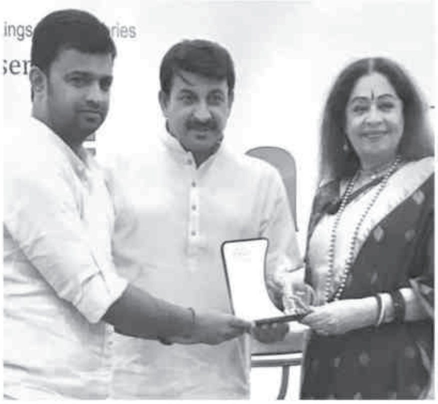

उदयपुर। युवा समाजसेवी प्रवीण रतलिया को दिल्ली में यूथ आइकन फोर इनोवेटिव सोशल लीडरशिप अवार्ड से नवाजा गया। यह अवार्ड उन्हें दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष मनोज तिवारी व अभिनेत्री किरण खेर ने प्रदान किया।

नमो विचार मंच के प्रदेशाध्यक्ष प्रवीण रतलिया ने बताया कि यह अवार्ड उदयपुर के उन सभी युवाओं को समर्पित है जो गरीब-जरूरतमंदों की सेवा में अपना समय समर्पण कर रहे हैं। युवा जब समाज सेवा की ओर अग्रसर होगा तब स्वत: ही प्राचीन भारतीय मूल्य संरक्षित व संवर्धित होंगे।

हिन्दुस्तान ज़िंक को मिला 'सीआईआई एनवायरमेन्टल अवार्ड'

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक की केन्द्रीय अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला(सीआरडीएल) को इनोवेटिव एनवायरमेन्ट प्रोजेक्ट की श्रेणी में उल्लेखनीय योगदान के लिए चेन्नई में आयोजित एक समारोह में 'सीआईआई एनवायरमेन्टल बेस्ट प्रेक्टिसेज अवार्ड-2018' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार हिन्दुस्तान ज़िंक की ओर से सीआरडीएल की टीम आशीष, शीबा एवं किरण ने एक भव्य समारोह में मुख्य अतिथि से ग्रहण किया। पुरस्कार के लिए 70 कंपनियों ने 158 केस स्टडीज के साथ भाग लिया जिसमें से 18 कंपनियों को इस अवार्ड के लिए चुना गया। हिन्दुस्तान ज़िंक के हेड-कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन पवन कौशिक ने कहा कि यह पुरस्कार हिन्दुस्तान ज़िंक की सीआरडीएल इकाई द्वारा प्रदूषण रोकने के लिये आधुनिक तकनीक एवं नवाचार समाधान के साथ-साथ स्वच्छ एवं स्वच्छ वातावरण हेतु उठाये गये प्रभावी उपायों को मान्यता है।

शोक समाचार

कल्पेश जी को श्रद्धांजलि

उदयपुर। दैनिक भास्कर के समूह सम्पादक एवं प्रख्यात पत्रकार कल्पेश याग्निक(55) का 13 जुलाई तड़के इन्दौर में निधन हो गया। उन्हें रात करीब साढ़े दस बजे दफ्तर में काम करे हुए दिल का दौरा पड़ा। अस्पताल में तीन घण्टे के इलाज के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। वे मूलत: बांसवाड़ा के रहने वाले थे। 21 जून, 1963 को जन्मे कल्पेश जी 1998 से दैनिक भास्कर समूह से जुड़े थे। वे राजस्थान में भी लम्बे समय तक 'भास्कर' के स्टेट एडिटर रहे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय माता प्रतिभा देवी जी, पत्नी भारतीजी, पुत्र नीरज व अनुराग सहित समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर प्रत्यूष कार्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने कहा कि देश और समाज के संवेदनशील ज्वलंत मुद्दों पर उनकी कलम बड़ी बेबाकी से चली। प्रकाशक पंकज कुमार शर्मा, डॉ. कुंजन आचार्य, नंद किशोर शर्मा, चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा, जगदीश सालवी, पत्रकार सुनील पण्डित, नितेश सर्राफ आदि ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए।

जयपुर। सेन्ट्रल एकेडमी स्कूल, तारानगर (जयपुर) के संस्थापक एवं लोकप्रिय समाजसेवी **श्री लाल साहब मिश्र** का 30 मई, 2018 को आकस्मिक देहावसान हो गया। उनके निधन पर सेन्ट्रल एकेडमी के देश-प्रदेश के विशाल परिवार ने गहरा दु:ख व्यक्त किया है। उनके निधन पर विभिन्न शैक्षिक एवं सामाजिक संस्थाओं, राजनैतिक दलों एवं वृहद मित्र परिवार ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। स्व. श्री नन्दराम जी सुथार की धर्मपत्नी **श्रीमती शांता देवी सुथार** का 10 जुलाई, 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र भगवतीलाल, इंद्रकुमार तथा उमाशंकर व पुत्रियां हेमलता तथा पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

चित्तौड़गढ़। कपासन से पूर्व पार्षद **श्री प्रकाश चन्द्र भण्डारी** का गत 7 जुलाई को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती निर्मला देवी, पुत्र प्रदीप कुमार, राजकुमार एवं पुत्री उषा वागरेचा सहित पौत्र-पौत्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

www.rkivf.com
info@rkivf.com
शुन्य शुक्राणुओं
में भी पिता बनने का सौभाग्य
टेस्ट ट्यूब बेबी -इक्सी से कम/निल शुक्राणुओं में भी पिता बनना संभव
HELPLINE NO.
08107099997
07742799997
0294-6950097
RKIVF
टेस्ट ट्यूब बेबी-इक्सी क्या है ?
इस तकनीक में महिला के अंडाणु में पुरुष के शुक्राणु को निडिल द्वारा प्रवेश करा निशेचित किया जाता है। साथ ही पुरुषों के शुक्राणुओं में से स्वस्थ शुक्राणु का चयन किया जाता है। इससे कम शुक्राणु एवं ट्यूब ब्लॉक की वजह से निल शुक्राणु वाले पुरूषों में भी संतान प्राप्ति की सम्भावना कई गुना बढ़ जाती है।
वे दम्पति सम्पर्क करें :- यदि विवाह के 1 वर्ष बाद भी आप माँ नही बन पा रही हैं • डॉक्टर ने आपको टेस्ट ट्यूब बेबी की राय दी है • आपकी दोनों ट्यूब्स ब्लॉक हैं • बच्चेदानी में गांठ है • उम्र बहुत ज्यादा है • अण्डे बराबर नही बनते हैं • मासिक चक्र अनियमित या बंद है • पति में शुक्राणु विकार या 'निल' शुक्राणु है • पति में रतिक्रिया सम्बन्धी कमी • आपको बार-बार गर्भपात की समस्या है
टेस्ट ट्यूब बेबी / IVF प्रक्रिया अब
₹15,000/-
(Medicine Consumables cost Extra. T&C Apply)
30 अप्रेल से पहले रजिस्ट्रेशन कराने पर
आर.के. हॉस्पिटल एवं टेस्ट ट्यूब बेबी सेन्टर
5–ए, मधुबन, बिजली विभाग खिड़की के सामने, उदयपुर–313001 (राजस्थान)
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान में सहयोग करें। भ्रूण लिंग परीक्षण करवाना जघन्य अपराध है, यह कार्य हमारे यहां नहीं किया जाता है।

INFINIUM

Paragon
The Mobile Shop
Jio
BlackBerry
mi
INTEX
vivo
oppo
GiONEE SMART PHONE
htc
SAMSUNG
Redmi 1S
honor
lenovo FOR THOSE WHO DO.
LAVA MOBILE PHONE
SONY
NOKIA Connecting People
MOTOROLA
itel
micromax nothing like anything
and all other mobile trusted brands are available under one roof..
For More Detail Pls Contact
Paragon The Mobile Shop
23, inside Udaipole Udaipur
Contact No. 0294-2383373, 9829556439

With Best Compliments from
NAHAR
COLOURS & COATING LTD.
Certified ISO 9001 by
BVQi
UKAS QUALITY MANAGEMENT
008
NCCL, House, G-1, 90-93, Sukher Industrial Park
Udaipur-313004 INDIA
Tel. : +91-294-2440307-309 | Fax : +91-294-2440310
E-mail : ramesh@naharcolours.net

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सिनर्जी इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग, उदयपुर

Serving to Nation

राज. नर्सिंग काउन्सिल (R.N.C.) जयपुर,
इंडियन नर्सिंग काउन्सिल (I.N.C.) नई दिल्ली
एवं राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त

जनरल नर्सिंग एवं मिडवायफरी (G.N.M.)
कोर्स में प्रवेश की जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

सिटी कार्यालय

महावीर भवन, तैय्याबिया स्कूल के पास, देहलीगेट उदयपुर
Phone : 0294-3200027, 7568002542

परिसर

हिंदुस्तान जिंक तिराहे के सामने,
उदयबाग रिसोर्ट वाला रास्ता
देबारी–भैंसड़ा कलां रोड, उदयपुर (राज.)
मोबाइल : 98296–20257

न्यूनतम योग्यता 10+2 पास, 40% किसी भी विषय में

पाठ्यक्रम अवधि 3 ½ वर्ष

नर्सिंग के क्षेत्र में प्रवेश का सुनहरा अवसर

- ★ अनुभवी व प्रशिक्षित प्राध्यापकों द्वारा अध्यापन।
- ★ प्रेक्टिकल ट्रेनिंग हेतु शहर के प्रतिष्ठित अस्पतालों से सम्बद्धता।
- ★ प्रशिक्षण हेतु सुसज्जित प्रयोगशालाएं।
- ★ छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक हॉस्टल सुविधा।
- ★ छात्र-छात्राओं हेतु बस सुविधा।
- ★ सुसज्जित पुस्तकालय मय किताबें, जर्नल एवं मेग्जीन।

पेसिफिक डेन्टल कॉलेज एवं महाराजा कॉलेज से 250 मीटर की दूरी पर

प्रदीप चपलोत (निदेशक)

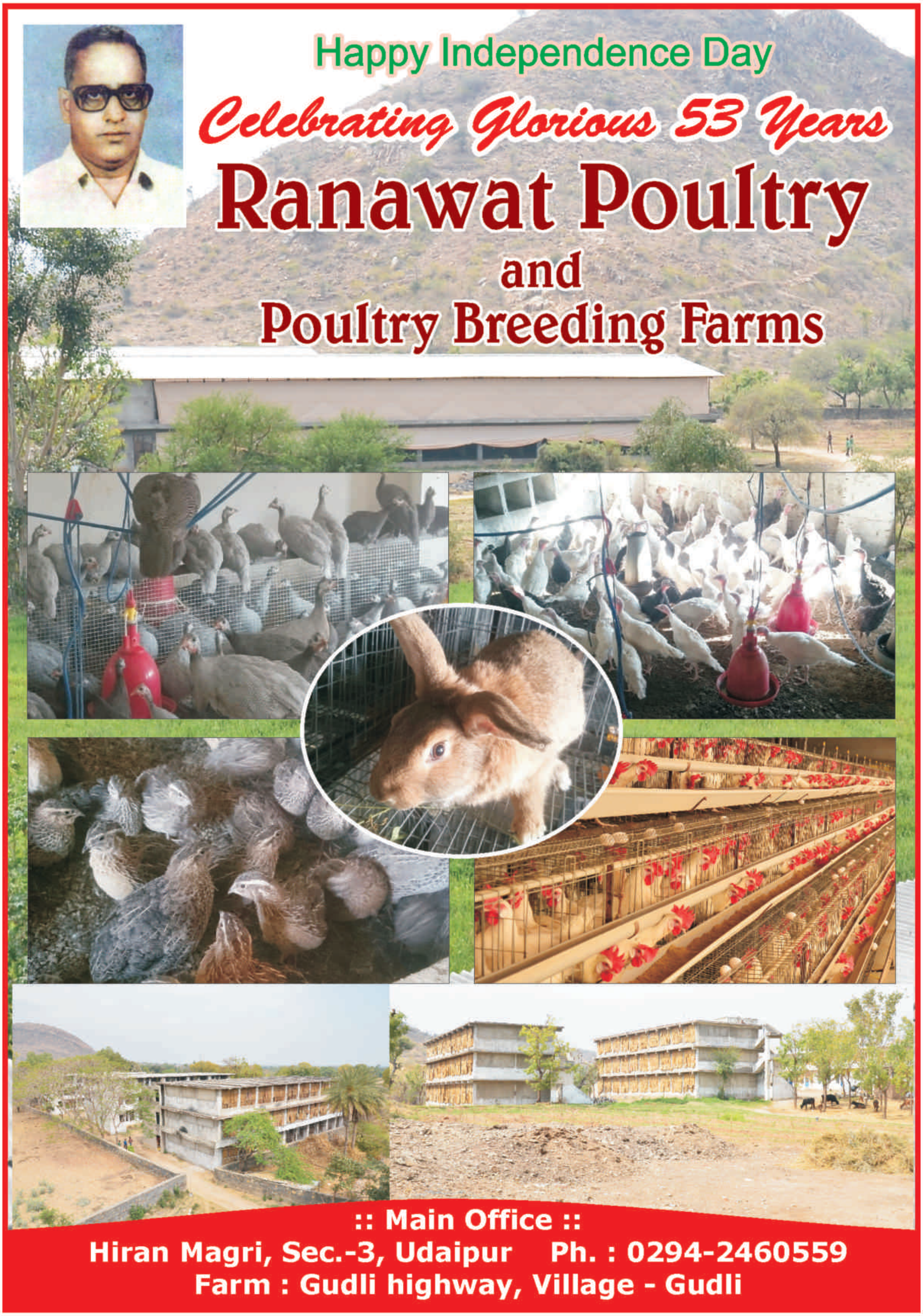
Happy Independence Day
Celebrating Glorious 53 Years
Ranawat Poultry
and
Poultry Breeding Farms
:: Main Office ::
Hiran Magri, Sec.-3, Udaipur Ph. : 0294-2460559
Farm : Gudli highway, Village - Gudli